न्यायाम्भोनिधि श्रीमद् विजयानंदसूरीश्वरजी महाराज

अने

महोपाध्याय श्रीमद वीरविजयजी महाराज रचित

स्तवनादि संग्रह.

संशोधक पूज्यपाद आचार्य श्रीमद्
विजयदानसूरीश्वरजी महाराज

छपावी प्रसिद्ध कर्ता.
बीकानेर निवासी बाबुजी सुमेरमलजी सुराना.

प्रत. १०००

वीर संवत. २४५२

विक्रम संवत. १९८२ आत्म संवत. ३०

किमत अमूल्य.

न्यायाम्भोनिधि श्रीमद् विजयानंदसूरीश्वरजी महाराज

अने

महोपाध्याय श्रीमद् वीरविजयजी महाराज रचित

स्तवनादि संग्रह.

संशोधक-पूज्यपाद आचार्य श्रीमद्

विजयदानसूरीश्वरजी महाराज

छपावी प्रसिद्ध कर्त्ता.

बीकानेर निवासी बाबुजी सुमेरमलजी सुराना.

प्रत. १०००

वीर संवत. २४५२

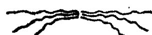
विक्रम संवत. १९८२ आत्म संवत. ३१

किंमत अमूल्य.

श्री वीरशासन प्रिन्टींग प्रेसमां परीख विठ्ठलदास मोह-
नलाले छाप्युं कालुपुर हाजापटेलनी पोळ—अमदावाद.

॥ ॐ अर्हम् ॥

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥



श्रीमद्विजयानंदसूरि (आत्मारामजी-महाराज) विरचित-

श्री आत्मविलासस्तवनावली.

॥ अथ चतुर्विंशति जिनस्तवनम् ॥



॥ श्री ऋषभजिनस्तवनम्. ॥

(आसणरा जोगी । ए देशी ।)

प्रथम जिनेसर मरुदेवी नंदा। नाभि गगन कुल चंदा रे। मनमोहन स्वामी। समवसरण त्रिण कोट सोहंदा। रजत कनक रत नंदा रे ॥ मन-मो० ॥ १ ॥ तरु असोग तले चिहुं पासे। कनक-सिंहासन कासे रे ॥ मन० ॥ पूर्व दिसि सुर बंदे

भासे । बिंब तिहुं दिसि जासे रे ॥ मन० ॥ २ ॥ मुनि सुर नारी साधवी सारी । अग्निकोण सुखकारी रे ॥ मन० ॥ ज्योति भवन वनदेवी निरते । इन पति व्यायव थिरते रे ॥ मन० ॥ ३ ॥ सुर नर नारी कूण ईशाने । प्रभु निरखी सुख माने रे ॥ मन० ॥ तुझ्य निमित्त चिहुं वर थाने । सम्यग् दरसी जाने रे । मन० ॥ ४ ॥ आदि निखेपा तिग उपगारी । वंदक भाव विचारी रे ॥ मन० ॥ वाग जोग सुन मेघ समानो । भव्य शिखी हरखानो रे ॥ मन० ॥ ५ ॥ कारण निमित्त उजागर मेरो । सरण ग्रह्यो अब तेरो रे । मन० । जगतवछल प्रभु जगत उजेरो । मोह तिमिर हरो मेरो रे । मन० ॥ ६ ॥ भगति तिहारी मुज मन जागी । कुमति पंथ दियो त्यागी रे । मन० । आतमज्ञान भान मति जागी । मुज तुज अंतर भागी रे । मन०।७

इति श्रीऋषभजिनस्तवनं ॥

श्रीअजितनाथजिनस्तवनम्।

(सुणीयो जी करुणा नाथ भवोदधि पार कीजो जी ए देशी.)

तुम सुणीयो जी अजित जिनेस जवोदधि पार कीजो जी। तु० ॥ आंकणी ॥ जन्म मरण जल फिरंत अपारा। आदि अंत नही घोर अंधारा। हुं अनाथ उरझ्यो मऊधारा। टुक मुज पीर कीजो जी। तुम० ॥ १ ॥ कर्म पहार कठन दुखदाइ। नाव फसी अब कौन सहाई ॥ पूर्ण दयासिंधु जगस्वामी। ऊटती उधार कीजोजी। तुम० ॥२॥ चार कषायके रस अतिजारे। वरवा अनंग जगत सब जारे। जारे त्रिदेव इंद्र फुनदेवा। मोहे उजारं लीजो जी। तुम० ॥ ३ ॥ करण पांच अति तस्कर जारे। धरम जहाज प्रीतिकर फारे। राग फांस ऊारे गर मोरे। अब प्रनु ऊिरक दीजो जी। तुम० ॥ ४ ॥ तृष्णा तरंग चरी अति जारी। बहे

जात रूब जन तन धारी। मान फेन अति उमंग चढयो है। अब प्रभु शांत कीजो जी ॥ तुम० ॥ ५॥ लाख चउरासी जमर अति जारी। मांहि फस्यो हुं शुद्ध बुद्ध हारी। काल अनंत अंत नहीं आयो। अब प्रभु काढ लीजो जी ॥ तुम० ॥ ६ ॥ आतम रूप दब्यो सब मेरो। अजित जिनेसर सेवक तेरो। अब तो फंद हरो प्रभु मेरो। निरजय थान दीजो जी ॥ तुम० ॥ ७ ॥

इति श्रीअजितजिनस्तवनम् ॥ २

॥ श्रीसंजवनाथजिनस्तवनम् ॥

(हिरणी यव चरे ए देशी)

संजव जिन सुख कारीया ललना। पूरण हो तुम गुण जंमार। पूजो प्रभु जावसे ललना ॥ डुख डुर्गति दूरे हरे ललना। काटे हो जन्ममरण संसार। पदकज जो मन लावसे ॥ ललना ॥१॥

प्रथम विरह प्रभु तुम तणा । ल० । दूजो हो
पूर्वधरछेद ! देखो गति करमनी । ल० ! पंचम-
काल कुगुरु बहु । ल० । पाड्या हो जिनमत बहु
भेद । बात को तरणकी । ल० ॥ २ ॥ राग द्वेष
बेहु मन बसे । ल० । लरे हो जिम सौकण रांड।
भूले अति भरममें । ल० । अमृत छोर जहर
पिये । ल० । लीये हो दुःख जिन मत छांड।
बांधे अति करममें । ल० ॥ ३ ॥ करुणा रस
भरे थोड़ले । ल० । संत हो पर दुख जानन हार।
फूले सुख हरममें । ल० । मनको पीर न को सुने।
कैसे हो करिये निरधार । प्रभु तुम धरममें ।
ल० ॥ ४ ॥ एक आधार है मोह भणी । ल० ।
तुमरे हो आगम परतीत । मन मुज मोहियां ।
ल० । अवर भरम सब छोरीया । ल० । धारी हो
तुम आण पुनीत । एही जग जोहीया । ल० ॥
५ ॥ जुग प्रधान पुरुष तणी । ल० । रीति हो

मुज मन सुखदाय । देखी सुज्ञ कारणी । ल०।
एही जिनमत रीत है । ल० । मीत हो और
सब ही विहाय। ज्ञव सिंधु तारणी ॥ ल० ॥६॥
धन्य जनम तिस पुरुषका । ल० । धारी हो तुम
आण अखंक । मन वच कायसु । ल० । आतम-
अनुज्ञव रस पीया । ल० । दीया हो तुम चरणमे
मंक । चित हुलसायसुं । ल० । ७ ॥

इति श्रीसंभवजिनस्तवनम् ॥ ३ ॥

॥ श्रीअज्ञिनंदनजिनस्तवनम् ॥

(होरीकी चाल)

परम आनंद सुख दीजोजी । अज्ञिनंदन
प्यारा । अखय अज्ञेद अंछेद सरूपी । ज्ञान
ज्ञान उजवारा । चिदानंदघन अंतरजामी । धा-
मी रामी २ जी त्रिज्ञुवन सारा ॥ अ० ॥ १ ॥

चार प्रकारना बंध निवारी । अजर अमर पद धारा । करम भरम सब छोरदीये हैं । पामी सा-मी२ परमकरताराजी ॥ अ० ॥ २ ॥ अनंत ज्ञान दर्शन सुख लीना । मेट मिथ्यात अंधारा । अ-मर अटल फुनै अगुरुलघुको । धारा सारा २ अ-नंत बल भाराजी ॥ अ० ॥ ३ ॥ बंध उदय विन निर्मल जोति । सत्ताकरी सब छारा । निज स्वरूप त्रय रत्न बिराजे । छाजे राजे २ आनंद अपा-राजी । अ० ॥ ४ ॥ ज्ञान वीर्य सुख जीवत धारी । मदन भूत जिन गारा । त्रिभुवनमें जस गावत तेरा । जगस्वामी २ जो प्राणप्यारा । अ० ॥ ५ ॥ निज आतम गुण धारो प्रभुजी । सकल जगत् सुखकारा । आनंद चंद जिनेसर मेरा । तेरा चेरा २ हुं सुखकाराजी ॥ अ० ॥ ६ ॥

इति श्रीअभिनंदनजिनस्तवनम् ॥ ४ ॥

॥ श्रीसुमतिनाथजिनस्तवनम् ॥

(नाथ कैसे गज के फंद छुडाये ए देशी)

सुमति जिन तुम चरणे चित दीनो। एतो जनम जनम दुख ठीनो ॥ सु० ॥ आंकणी ॥ कुमति कुटल संग दूर निवारी ।, सुमति सुगुण रस नीनो । सुमतिनाथ जिन मंत्र सुएयो है । मोह नींद जइ खीनो सु० ॥ १ ॥ करम परजक बंक अति सिज्या । मोह मूढता दीनो । निज गुण जूल रच्यो परगुणमें । जनम मरण दुःख लीनो ॥ सु० ॥ २ ॥ अब तुम नाम प्रजंजन प्रगट्यो । मोह अन्न ठय कीनो । मूढ अज्ञान अविरती एतो । मूल छीन जये तीनों ॥ सु० ॥ ३ ॥ मन चंचल अतिज्रामक मेरो । तुम गुण मकरंद पीनो । अवर देव सब दूर तजे है । सुमति गुपति चित दीनो ॥ सु० ॥ ४ ॥ मात तात ति-

रियां सुत न्नाई । तन धन तरुण नवीनो । ए सब मोह जालकी माया । इन संग न्नयो है मलीनो ॥ सु० ॥ ५ ॥ दरशण ज्ञान चारित्र तीनो। निज गुण धंन हर लीनो । सुमति प्यारी न्नई रखवारी । विषय इंद्री न्नई खीनो ॥ सु० ॥ ६ ॥ सुमति सुमति समता रस सागर । आगर ज्ञान न्नरीनो । आतम रुप सुमति संग प्रगटे । शम दम दान वरीनो ॥ सु० ॥ ७ ॥

इति श्रीसुमतिजिनस्तवनम् ॥



। श्रीपद्मप्रन्नस्तवनम् ।

(तपत हजारेनुगयो मैनू छड के ए देशी)

पंद्मप्रन्नु मुज प्यारा जी । मन मोहनगारा ॥ चंद चकोर मोर घन चाहे । पकंज रवि वन साराजी ॥ मन० ॥ १ ॥ त्यूं जिनमूर्त्ति मुज मन प्यारी । हिरदे आनंद अपाराजी ॥ मन० ॥ २ ॥ अब

क्यों वेर करो मुज स्वामी । ज्ञवोदधिपार उतारा जी ॥ म० ॥ ३ ॥ पंच विघन ज्ञय रति तुम जीती । अरति काम विकारा जी ॥ म० ॥ ४ ॥ हास सोग मिथ्या सब गारी । नींद अत्याग उंखारा जी ॥ म० ॥ ५ ॥ राग द्वेष घीन मोह अज्ञाना । अष्टादश रोग जारा जी ॥ म० ॥ ६ ॥ तुम ही निरंजन ज्ञये अविनाशी । अब सेवक की वारा जी ॥ म० ॥७॥ हुं अनाथ तुम त्रिजुवननाथा । वेग करो मुज सारा जी ॥ म० ॥ ८ ॥ तुम पूरण गुण प्रजुता गाजे । आतमराम आधारा जी । म० ॥ ए ॥

इतिश्रीपद्मप्रभजिनस्तवनम् ॥ ६ ॥

।श्रीसुपार्श्वनाथजिनस्तवनम्।

(मंदिर पधारो मारा पूज जी ए देशी)

श्री सुपास मुज वीनती । अब मानो दीनदयालजी । तरण तारण तुम बिरुद है । जगत वंत्सल किरपालजी । श्रीसु० ॥ १ ॥ अकर ज्ञाग

अनंतमें। चेतनता मुज ढोरजी। करम भरम छाया महा जिन। कीनो तम महा घोरजी। श्रीसु० ॥ २ ॥ घन घटा छादित रवि जिसो। तिसो रह्यो ज्ञान उजासजी। किरपा करो जो मुज भणी। थाये पूरण ब्रह्म प्रकासजी। श्रीसु० ॥ ३ ॥ विन ही निमित्त नें नीपजे। माटी तनो घट जेमजी। तिम ही निमित्त जिनजी विना। उज्जल थाउं हूं केमजी ॥ श्रीसु० ॥ ४ ॥ त्रिकरण शुद्ध थावे यदा। तदा सम्यग् दर्शण पामजी। दूजे त्रिक ब्रह्म ज्ञान है। त्रिक मिटे शिवपुर ठामजी। श्री सु० ॥५॥ एही त्रिण त्रिक मुज दीजीए। लीजिये जस अपारजी। कीजीये भक्त सहायता। दीजिए अ-जरअमारजी ॥ श्री० ॥ ६ ॥ अब जिनवर मुज दीजिए। आतम गुणभरपूरजी। कर्मतिमिर-के हरणकों। निर्मलगगन जूंसूरजी। श्री सु०।७॥

इति श्री सुपार्श्वजिनस्तवनम् ॥ ७ ॥



। श्रीचंद्रप्रभजिनस्तवनम् ।

(चाहत श्री प्रभु सेवा करुंगी उलटी कर्म बनाइरी ए देशी)

चाह लगी जिनचंद्रप्रभुकी । मुज मन सुमति ज्युं आइरी । भरम मिथ्या मत दुर नस्यो है । जिन चरणांचित लाइ सखीरी ॥ चा० ॥ १ ॥ सम संवेग निरवेद लस्यो है । करुणारस सुखदाइरी । जैन बैन अति नीके लगरे, ए भावना मनभाई ॥ स० ॥ चा० ॥ २ ॥ संका कंखा फल प्रति संसा । कुगुरु संग छिटकाइरी । परसंसा धर्म हीन पुरुषकी । इन भवमांहि न कांइरी ॥ स० ॥ चा० ॥ ३ ॥ दुग्ध सिंधु रस अमृत चाखी । स्याद्वाद सुखदाइरी । जहरपान अब कौन करत है । दुरनय पंथ नसाइ ॥ स० ॥ चा० ॥ ४ ॥ जब लग पूरण तत्त्व न जाण्यो । तब लग कुगुरु भुलाइरी । सप्तभंगी गर्जित तुम वाणी । भव्यजीव सुखदाई ॥ स०

॥ चा० ॥ ५ ॥ नाम रसायण सहु जग चाखे। मर्म न जाने कांइरी। जिन वाणी रस कनक करणको। मिथ्या लोह गमाइ ॥ स० ॥ चा० ॥ ६ ॥ चंद्र किरण जस उज्जल तेरो। निर्मल जोत सवाइरी। जिनसेव्या निज आतम रूपी। अवर न कोइ सहाइ ॥ स० ॥ चा० ॥ ७ ॥

इति श्रीचन्द्रप्रभजिनस्तवनम् ॥

। श्री सुविधिनाथ जिनस्तवनम् ।

सुविधि जिन वंदना पापनिकंदना जगत आनंदना मुक्ति दाता । करम दल खंडना मदन विहंडना धरम धुर मंडना जगत त्राता ॥ अवर सहु वासना छोर मन आसना तेरी उपासना रंग राता। करो मुज पालना मान मद गालना जगत उजालना देह साता ॥ सु० ॥ १ ॥ विविध किरीया करी मूढता मन धरी एक पखे लरी

जगत चूल्यो । मान मद मन धरी सुमति सब परहरी जैन मुनि भेष धरी मूढ फूल्यो ॥ एही एकंतता अति ही डुरदंतता नास कर संतता दुःख जूल्यो ॥ संग सिद्धि कही ज्ञान किरीया वही दूध साकर मिली रस घोल्यो ॥ स० ॥ २ ॥ बिना सरधानके ज्ञान नहीं होत है ज्ञान बिन त्याग नहीं होत साचो । त्याग बिन करमका नास नहीं होत है करम नासे बिना धरम काचो ॥ तत्त्व सरधान पंचंगी संमत कह्यो स्याद्वादे करी बैन साचो ॥ मूल निर्युक्ति अति भाष्यं चूरणि भलो वृत्ति मानो जिन धर्म राचो ॥ स० ॥ ३ ॥ उत्सर्ग अपवाद अपवाद उत्सर्ग उत्सर्ग अपवाद मन धार लीजो । अति उत्सर्ग उत्सर्ग है जैन में अति अपवाद अपवाद कीजो। ए षट् भंग है जैन वाणी तणा सुगुरु प्रसाद

रस घुट पीजो । जब लग बोध नहीं तत्त्व सर-
धानका तब लग ज्ञान तुमको न लीजो ॥ सु० ॥
४ ॥ समय सिद्धांतना अंग साचा सबी सुगुरु
प्रसादथी पार पावे । दर्शन ज्ञानचारित करी
संयुता दाह कर कर्मको मोक्ष जावे । जैन पंचं-
गीकी रीति जांजो सबी कुगुरु तरंग मन रंग
लावे । ते नरा ज्ञानको अंश नहीं ऊपनो हार
नरदेह संसार धावे ॥ सु० ॥ ५ ॥ तत्त्व सरधान
बिन सर्व करणी करी वार अनंत तुं रह्यो रीतो ।
पुण्य फल स्वर्गमें ज्ञोग ऊंधो गिरथो तिर्यग् औ-
तार बहु वार कीतो । ऊंटका मेंगणा खांम लागी
जिसो अंतमें स्वादसे जयो फीको । चार गत
वास बहु दुख नाना ज्ञरे जयो महा मूढ सिर
मोर टीको ॥ सु० ॥ ६ ॥ सुविधि जिनंदकी
आन अवधार ले कुमत कुपंथ सब दूर टारो ।
पक्ष कदाग्रह मूल नहीं तानियो जानीयो जैन

मत सुध सारो । महा संसार सागर थकी नी-
कली करत आनंद निज रूप धारो । सुकल अरु
धरम दोउ ध्यानको साधले आतमा रूप अक-
लंक प्यारो ॥ सु० ॥ ७ ॥

इतिश्रीसुविधिजिनस्तवनम् ।



। श्रीशीतलनाथजिनस्तवनम ।

(बणजारेकी देशी)

शीतल जिनराया रे त्रिभुवन पूरण चंद शी-
तल चंदन सारिसो जिनराया रे । जिन । मुज
मन कमल दिनंद ज्यों लोहने पारसो ॥ जि० ॥
१ ॥ जि० ॥ और न दाता कोय अन्नय अखेद
अन्नेदनो ॥ जि० ॥ जि० ॥ सगरे देव निहार
कौन हरे मुज खेदनो ॥ जि० ॥ २ ॥ जि० ॥
गर्न्नवास डुःख पूर कलमल संयुत थानमें ॥
॥ जि० ॥ जि० ॥ पित्त सलेषमपूर डुःख न्नरे बहु

जानंमें ॥ जि० ॥ ३ ॥ जि० ॥ जन मत दुख अपार मोह दशा महा फंदमें ॥ जि० ॥ जि० ॥ अब मन मांहि विकारकोट फस्यो जेसे गंदमें ॥ जि० ॥ ४ ॥ जि० ॥ परवश दीन अनाथ मुज करुणा चित आनिये ॥ जि० ॥ जि० ॥ तारो जिनवरदेव वीनतकी चितठानिये ॥ जि० ॥ ५ ॥ जि० ॥ करुणासिंधु तुम नाम अब मोहे पार उतारिये जि० ॥ जि० ॥ अपणा बिरुद निवाह अवगुण गुण न विचारिये ॥ जि० ॥ ६ ॥ जि० ॥ शीतल जिनवर नाम शीतल सेवक कीजियें ॥ जि० ॥ जि० ॥ शीतल आतम रूप शीतलभाव धरीजिये ॥ जि० ॥ ७ ॥ जि० ॥

इतिश्रीशीतलनाथजिनस्तवनम् ॥ १० ॥

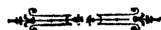
॥ श्रीश्रेयांसनाथजिनस्तवनम् ॥

(पीलें रे प्याला होय मतवाला ए देशी)

श्रीश्रेयांस जिन अंतरजामी । जगविसरामी त्रिभुवन चंदा ॥ श्री श्रे० ॥ कल्पतरु मनवंछित दाता ॥ चित्रावेल चिंतामणि त्राता । मन वंछित पूरे सब आसा ॥ संत उधारण त्रिभुवन त्राता ॥ श्रीश्रे० ॥ १ ॥ कोई विरंचि ईस मन ध्यावे । गोविंद विष्णु उमापति गावे । कार्त्तिक साम मदन जस लीना ॥ कमला जवानी जगति रस जीना ॥ श्रीश्रे० ॥ २ ॥ एही त्रिदेव देव अरु देवी । श्रीश्रेयांस जिन नाम रटंदा ॥ एक ही सूरज जग परकासे । तारप्रजा तिहां कौन गिणंदा ॥ श्रीश्रे० ॥ ३ ॥ ऐरावण सरिसो गज छांडी । लंबकरण मन चाह करंदा । जिन छोडी मन अवर देवता ॥ मूढमति मन जाव धरंदा । श्री-

श्रे० ॥४॥ कोइ त्रिशूली चक्री फुन कोई । ज्ञामनीके संग नाच करंदा । शांत रूप तुम मूरति नीको । देखत मुज तन मन हुल्लसंदा । श्रीश्रे० ॥ ५ ॥ चार अवस्था तुम तन सोहे । बाल तरुण मुनि मोक्ष सोहंदा । मोद हर्ष नत ध्यान प्रदाता ॥ मूढमति नहीं जेद लहंदा । श्रीश्रे० ॥ ६ ॥ आतम राजज्ञान जिन पायो ॥ दूर जयो निरधन दुख धंदा ॥ समता सागरके विसरामो । पायो अनुजवज्ञान अमंदा ॥ श्रीश्रे० ॥७ ॥

इति श्रीश्रेयांसजिनस्तवनम् ॥ ११ ॥



। अथ श्रीवासुपूज्यजिनस्तवनम् ।

(अमलकी चाल)

वासुपूज्य जिनराज आज मुज तारीये । करम कठणं दुख देतके वेग निवारीये ॥ वीतराग जगदीश नाथ त्रिजुवन तिलो । महा गोप निर्याम

धाम सब गुण निलो ॥ १ ॥ कालसुजाव मिलान करम अति तीसरो । होनहार जियशक्ति पंच मिली धीसरो ॥ एक अंश मिथ्यात वात ए सांजली । कीये मदिरा पान आंख जइ धामली ॥ २ ॥ पंचम काल विहाल नाथ हूं आइयो । मिथ्या मत बहु जोर घोर अति गाइयो ॥ कलह कदाग्रह सोर कुगुरु बहु गाइयो । जिन वाणी रस स्वादके विरले पाइयो ॥ तुज किरपा जइ नाथ एक मुज जावना । जिन आज्ञा परमाण और नहीं गावना ॥ पक्षपात नही लेश द्वेष किनसूं करुं । एही स्वजाव जिनंद सदा मनमें धरूं ॥ ४ ॥ किंचित पुन्य प्रजाव प्रगट मुज देखीये । जिन आणायुत जक्ति सदा मन लेखीये ॥ होन-हार सुज थाय मिथ्या मत गंडोये ॥ सार सिद्धांत प्रमाण करण मन मांमीये ॥ ५ ॥ एक अरज मुज धार दयाल जिनेसरू । उद्यम प्रबल अपार दीयो

जगं ईसरू ॥ तुज विन कौन आधार भवोदधी तारणे । बिरुद निवाहो राज करमदल वारणे ॥ ६ ॥ आतमरूप भुलाय रम्यो पर रूपमें । पर्यो हूं काल अनादि भवोदधि कूपमें । अब काढो गही हाथ नाथ मुज वारोया ॥ पाऊं परमानंद करम रज कारीया ॥ ७ ॥

इति श्रीवासुपूज्यजिनस्तवनम् ॥

। श्रीविमलनाथजिनस्तवनम् ।

(सुंदर चेत बहार सार पाल सरफूके ए देशी) .

विमल सुहंकर नाथ आस अब हमरी पूरो । रोग सोग भय त्रास आस ममता सब चूरो । दीजो निरभय थान खान अजरामर चंगो । जनम जनम जिनराज ताज बहु जगत सुरंगो ॥ १ ॥ मात तात सुर भ्रात जान बहु सजन सुहाये । कनक रतन बहु भूर कूर मन फंद

खगाये । रंभा रमण अनंग संग बहु केल कराये।
संध्या रंग विरंग देख छिनमे विरलाये ॥ २ ॥
पद्म राग सम चरण करण अति सोहे नीके।
तरुण अरुण सित नयण वयण अमृत रस नीके।
वदन चंद ज्यूं सोम मदन सुख माने जीके।
तुज भक्ति विन नाथ रंग पतंग ज्युं फीके॥३॥
गजवर तरल तुरंग रंग बहु भेद विराजे ॥ कंकण
हार किरीट करण कुंडल अति छाजे ॥ राग
रंग सुख चंग भोग मन नीके भायो। तुज भक्ति
विन नाथ जान तिन जनम गमायो ॥४॥ रतन
जरत विमान भान ज्युं भये सनुरे । रंभा रमण
आनंद कंद सुख पाये पूरे । खोमस नित्य सिंगार
नाच स्थिति सागर पूरे। जिनभक्ति फल पाये
मोक्ष तिन नाही दूरे ॥ ५॥ धन धन तिन अव-
तार धार जिन भक्ति सुहानी । दया दान तप
नेम सील गुण मनसा ठानी ॥ जिनवर जसमे

झीन पीन प्रभु अर्च करानी । तुज किरपा भई नाथ आज में भक्ति पिछानी ॥ ६ ॥ जगतारक जगदीस काज अब कीजो मेरो । अवर न सरण आधार नाथ हुं चेरो तेरो ॥ दीन हीन अब देख करो प्रभु वेग सहाइ । चातक ज्यूं घनघोर सोर निज आतम लाइ ॥ ७ ॥

इति श्रीविमलनाथजिनस्तवनम् ॥ १३ ॥

। श्रीअनन्तनाथजिनस्तवनम् ।

(नींदडली वैरण होरही ए देशी)

अनंत जिनंदसु प्रीतडी । नीकी लागी हो अमृतरस जेम ॥ अवर सरागी देवनी । विषसरखी हो सेवा करूं केम ॥ अ० ॥ १ ॥ जिम पद्मनी मन पिउ वसे । निर्धनीया हो मन धनकी प्रीत ॥ मधूकर केतकी मन वसे । जिम साजन हो विरही जन चीत ॥ अ० ॥ २ ॥ करसण

मेघ आषाढ ज्यूं । निजवाछड हो सुरज्जी जिम प्रेम ॥ साहिब अनंत जिनंदसूं । मुज लागी हों जक्ति मन तेम ॥ अ० ॥ ३ ॥ प्रीति अनादिनी दुःख जरी । में कीधी हो पर पुदगल संग ॥ जगत जम्यो तिन प्रीतसूं । सांग धारी हो नाच्यो नव नव रंग ॥ अ० ॥ ४ ॥ जिसको आपणा जानीया । तिन दीधा हो छिनमें अति छेह ॥ परजन केरी प्रीतडी । में देखी हो अंते निःसनेह ॥ अ० ॥ ५ ॥ मेरो कोई न जगतमें ॥ तुम छोडी हो जगमें जगदीस । प्रीत करूं अब कोनसूं । तूं त्राता हो मोने विसवा विस ॥ अ० ॥ ॥ ६ ॥ आतमराम तूं माहरो । सिर सेहरो हो हियडानो हार ॥ दीनदयाल किरपा करो । मुज वेगा हो अब पार उतार ॥ अ० ॥ ७ ॥

इति श्रीअनन्तनाथजिनस्तवनम् ॥

। श्रीधर्मनाथजिनस्तवनम् ।

(माला किहां छैरे ए देशी)

भविकजन वंदोरे धरम जिनेसर धरम स्वरूपी । जिनंद मोरा ॥ परमधरम परकासेरे । पर दुःख भंजन भविमन रंजन ॥ जि० ॥ द्वादस परषदा पासेरे । भविक जन वंदो रे । धरम जिनेसर वंदो परमसुख कंदो रे ॥ १ ॥ धरम धरम सहु जन मुख भाषे ॥ जि० ॥ मरम न जाने कोइ रे । धरम जिनंद सरण जिन लीना ॥ जि० ॥ धरम पिछाणे सोइ रे ॥ भ० ॥ २ ॥ द्रव्य १ भाव २ स्वदया ३ मन आणो ॥ जि० ॥ पर ४ सरूप ५ अनुबंधोरे ६। व्यवहारी ७ निश्चये ८ गिनलीजो ॥ जि० ॥ पालो करम न बंधो रे ॥ भ० ॥ ३ ॥ जयणा सर्व काममे करणी ॥ जि० ॥ धरम देशना दीजे रे । जिनपूजा

यात्रा जगतरणी ॥ जि० ॥ अंतःकरण शुद्ध ली-
जे रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ षट् काया रक्षा दिल ठानी
॥ जि० ॥ निज आतम सम जानो रे । पुद्गलीक
सुख कारज करणी ॥ जि० ॥ सरूरै दया कही
ज्ञानी रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ करो आडंबर जिन मुनि
वंदे ॥ जि० ॥ करी प्रभावना मंडे रे । विन क-
रुणा करुणा फल भागी । जन्म मरण दुःख खंडे
रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ विधि मारग जयणा करी पाले
॥ जि० ॥ अधिक हीन नही कीजे रे । आतम-
राम आनंदघन पायो ॥ जि० ॥ केवलज्ञान
लहीजे रे ॥ ज० ॥ ७ ॥

इति श्रीधर्मनाथजिनस्तवनम् ॥ १५ ॥

। श्रीशांतिनाथजिनस्तवनम् ।

(भविक जन नित्य ए गिरि वंदो ए देशी)

भविक जन शांति हे जिन वंदो । भव भवना
पाप निकंदो । भविक जन शांति हे जिन वंदो

॥ १ ॥ पूरव नव शांति करीनो । कापोत पाल सुख लीनो । करूणा रस सुधा मन नीनो । तें तो अनयदान बहु दीनो । न० ॥ २ ॥ अचिरानंदन सुखदाइ । जिन गर्ने शांति कराइ । सुरनर मिल मंगल गाइ । कुरु मंमन अरे कुरु मंमन मारि नसाइ ॥ न० ॥ ३ ॥ जग त्याग दान बहु दीना । पामर कमलापति कीना । शुद्ध पंच महाव्रत लीना । पाया केवलज्ञान अदीना ॥ न० ॥ ४ ॥ जग शांतिक धरम प्रकासे । नव नवना अघ सहु नासे । शुद्ध ज्ञानकला घट नासे । तुम नामे अरे तुम नामे परम सुख पासे ॥ न० ॥ ५ ॥ तुम नाम शांति सुख दाता । तुं मात तात मुज त्राता । मुज तम हरो गुण ज्ञाता । तुम शांतिक अरे तुम शांतिक जगत विधाता ॥ न० ॥ ५ ॥ तुम नामे नवनिध लहिये । तुम चरण शरण गहि रहिये । तुम अर्चन तन मन

वहिये । एही शांतिक अरे एही शांतिक जा-वनां कहिये ॥ जवि० ॥ ६ ॥ हुंतो जनम मरण दुःख दहियो । अब शांति सुधारस लहियो । एक आतम कमल उमहियो । जिनै शांति अरे जिन शांति चरणकज गहियो ॥ जवि० ॥ ७ ॥

इति श्रीशांतिनाथजिनस्तवनम् ॥ १६ ॥



। श्रीकुंथुनाथजिनस्तवनम् ।

(भावनाकी देशी)

कुंथुं जिनेसर साहिब तुं धणी रे । जगजीवन जगदेव । जगत उधारण शिवसुखकारणे रे । निस दिन सारो सेव ॥ कुं ॥ १ ॥ हुं अपराधी काल अनादिनो रे । कुटल कुबोध अनीत । लोज क्रोध मद मोहे माचीयो रे । मच्छर मगन अतीत ॥ कुं० ॥ २ ॥ लंपट कंटक निंदक दंजीयो रे । परवंचक गुण चोर । अपथापक परनिंदक मानीयो

रे । कलह कदाग्रह घोर ॥ कुं० ॥ ३ ॥ इत्यादिक अवगुण कहुं केतला रे । तुम सब जाननहार । जो मुज वीतक वीत्यो वीतशे रे । तुं जाने करतार ॥ कुं० ॥ ४ ॥ जो जगपूरण वैद्य कहाइयो रे । रोग करे सब दूर । तिनही अपणा रोग दिखाइये रे । तो होवे चिंता चूर ॥ कुं० ॥ ५ ॥ तुं मुज जाहिस वैद्य धनवंतरी रे । कर्म रोग मोह काट । रतनत्रयी पथ मुख मन मानीयो रे । दीजो सुखनो थाट ॥ कुं० ॥६॥ निर्गुणलोह कनक पारस करे रें । मांगे नही कुछ तेह ॥ जो मुज आतमसंपद निर्मली रे ॥ दास भणी अब देह ॥ कुं० ॥ ७ ॥

इति श्रीकुंथुनाथजिनस्तवनम् ॥ १७ ॥



। श्रीअरनाथजिनस्तवनम् ।

(चंद्रप्रभु मुखचंद्र सखी मोने देखणदे ए देशी)

अरजिनेश्वरचंद सखी मोने देखणदे । गत कलिमल दुख धंद ॥ स० ॥ त्रिभुवन नयनानंद । स० । मोह तिमिर जयो मंद ॥ स० ॥१॥ उदर त्रिलोक असंखमें । स० । महरद नीर निवास । स० । कठन सिवाल आछादीयो । स० । करम पटल अठ तास ॥ स० ॥ २ ॥ आदि अंत नही कुंमनी ॥ स० ॥ अतिहीअज्ञान अंधेर । स० । स्वजन कुटुंबे मोहीयो । स० । वीत्यो सांझ सवेरे ॥ स० ॥ ३ ॥ खय उपसम संयोगथी । स० । करमपटल जयो दूर । स० । ऊरध मुखी पुंन्ये कर्यों । स० । स्वजन संग कर्यो चूर ॥ स० ॥ ॥४ ॥ पहुतो जिनवर आसना । स० । दीठो आनंदपूर । स० । दीनदयाल कृपाकरी । स० । राखो

करण हजूर ॥ स० ॥ ५ ॥ जिन कष्टे हूं आवीयो ॥ स० ॥ जाणे तूं करतार । स० । विरुद सुण्यो जिन ताहरो । स० । त्रिभूवन तारणहार ॥ स० ॥ ६ ॥ सुमति सखी सुण वारता । स० । ए सब तुज उपगार । स० । आतमराम दिखालीयो । स० । वंछित फलदातार ॥ स० ॥ ७ ॥

इति श्रीअरनाथजिनस्तवनम् ॥ १८ ॥

। श्रीमल्लिनाथजिनस्तवनम् ॥

(रामचंद के बाग चंपा मोहरीयो ए देशी)

मल्लिजिनेसरदेव भवोदधि पार करोजी ॥ तूं प्रभु दीनदयाल । तारकबिरुद धरो जी ॥ १ ॥ तुम सम बैद न कोय । जानो मर्म खरोरी । जावे जिस विधरोग । तैसोही ज्ञान धरोरी ॥ २ ॥ अष्टकर्म चार कषाय । रोग असाध्य कह्योरी । मदन महा दुःख देन । सब जग व्याप रह्योरी

॥ ३ ॥ तूं प्रभु पूरण वैद् । त्रिभुवन जाच लह्यो-
री । किरपा करो जगनाथ । अब अवकास थयो
री ॥ ४ ॥ वचन पियूष अनूप । मुजमन माहि
धरोरी । दीजो पथ्यप्रदान । मने तन दाह
हरोरी ॥ ५ ॥ सम्यग दर्शन ज्ञान । खम मृदु
सरल भलोरी । तोष अवेद अभंग । तो सहु
रोग दल्योरी ॥ ६ ॥ पथ्योदन जिनभक्ति ।
आतमराम रम्योरी । तूठो मल्लिजिनेस । अरिदल
क्रूर दम्योरी ॥ ७ ॥

इति श्रीमल्लिनाथजिनस्तवनम् ॥ १९ ॥

। श्रीमुनिसुव्रतजिनस्तवनम् ।

(प्रेमला परणी ए देशी)

श्री मुनिसुव्रत हरि कुलचंदा । दुरनय
पंथ नसायो । स्याद्वाद रस गर्भितवानी । तत्त्व
स्वरूप जनायो । सुन ज्ञानी जिन वाणी रस

पीजो अति सन्मानी ॥ १ ॥ बंध मोक्ष एकांते मानी। मोक्ष जगत उछेदे। उनय नयातम नेद ग्रहीने। तत्त्व पदारथ वेदे। सुन ज्ञा० ॥ २ ॥ नित्य अनित्य एकान्त ग्रहीने। अर्थ क्रिया सब नासे। उनय स्वरूपे वस्तु विराजे। स्याद्वाद इम नासे ॥ सुन ज्ञा० ॥ ३ ॥ करता जुगता बाहिर दृष्टे। एकांते नहीं थावे। निश्चय शुद्ध नयातम रूपे। कुण करता जुगतावे ॥ सु० ॥ ४ ॥ रूप विना नयो रूप सरूपो। एक नयातमसंगी। तन व्यापी विजु एक अनेकी। आनंदघन डुःखनंगी ॥ सुन ज्ञा० ॥ ५ ॥ शुद्ध अशुद्ध नास अविनासी। निरंजन निराकारो। स्याद्वाद मत सगरो नीको। डुरनय पंथ निवारो ॥ सुन ज्ञा० ॥ ६ ॥ सप्तनंगी मत दायक जिनजी। एक अनुग्रह कीजो। आतमरूप जिसो तुम लाधो। सो सेवकको दीजो ॥ सुन ज्ञा० ॥ ७ ॥

इति श्री [illegible]म् ॥ २० ॥

। श्रीनमिनाथजिनस्तवनम् ।

(आ मिलवे बंसी वाला कनेहा ए देशी)

तारोजी मेरे जिनवर सांइ । बांह् पकरू कर मोरी । कुगुरु कुपंथ फंदथी निकसी । सरण गही अब तोरी ॥ ता० ॥ १ ॥ नित्य अनादि निगोदमें रुलतां । फूलतां जवोदधि मांही । पृथ्वी अप तेज वात स्वरूपी । हरितकाय दुःख पाइ ॥ ता० ॥ २ ॥ बितिचउरिंद्री जात जयानक । संख्या दुःखकी न कांइ । हीन दीन जयो परवस परके । ऐसे जनम गमाइ ॥ ता० ॥ ३ ॥ मनुज अनारज कुलमें उपनो । तोरी खबर न काइ । ज्यूं ज्यूं कर प्रजु मग अब परख्यो । अब क्यों बेर लगाइ ॥ ता० ॥ ४ ॥ तुम गुण कमल ज्रमर मन मेरो । उमत नहीं है उमाइ । तृषत मनुज अमृत रस चाखी । रुच से तस बुजाई ॥ ता० ॥ ५ ॥ जवसागरकी पीर हरो सब । मेहर

करो जिनराइ। दृग करुणाको मोह पर कीजे। दीजो चरण बुहाइ ॥ ता० ॥६॥ विप्रानंदन जग दुःख कंदन। जगत वछल सुखदाइ। आतमराम रमण जगस्वामी। कामितफल वरदाइ ॥ ता० ॥७॥

इति श्रीनमिनाथजिनस्तवनम् ॥ २१ ॥



। श्रीनेमिनाथजिनस्तवनम् ।

चैतमे सोहाग सहियां। फूलीयो सब रूपमें। ज्ञान फूल चारित फल जर। लागीयो चिद्रूपमें। पुन्य योवन चर्यो नीको। करण पंच सनूरीयां। अब देख नेम वियोग सेती। जये छिनकमें चूरीयां ॥ १ ॥ वैसाख तामस ऊठीयो सब फूल फल मुरझाइया। चित्तदाह जस्मीभूत कीनो शांतिरस सुसाइया। मन सैल राज कब्जन कीनो। दंज नागन धाइयां। अब प्यास शांत न होत किमही। त्रिभुवन धन जल पाइयां

॥ १ ॥ जेठ जागी कुगुरु वायु। अंधीयां बहु आ-इयां। तन मन सबी मलीन कीनो। नयन रजं बहु ठाइयां॥ कछु आप परको सूझ नाहीं। पड़े-घोर अंधेरमें। सब रूप सुन्दर ठार कीनो। मोह महातम घेरमें ॥ ३ ॥ आषाढ़ कुगुरु प्रधान कीनो। तस वात चउरासीयां। मानसी तन रोग पीरा। घरम गरमी फासीयां। अधोभूमी नरक ताती। ठातीयां बहु दुःख भरे। अब नेम समरण कीजीये। तन तपत टारे दुःख हरे ॥ ४॥ सावन घटी घनघोर गरजी। नेम वानी रसभरी। अप-छंद निंदक संघके। तिन जान सिर विजरी परी॥ सत्ता सुभूमी भव्य जनकी। अंस अंसे सब ठरी॥ अब आस पुन्य अंकुरकी। मन मोद सहियां फिर खरी ॥ ५ ॥ भादो भए फुन पुन्य पूरे। ध-रम वारी लह लही॥ सहस अष्टादस दले। सी-लांग संज्ञा झुम रही॥ सरधान जल सुध सींचता।

अतिज्ञान तरुवर फुल रहे ॥ लागेंगे अजरामर फल । मधु नेम आणा सिर वहे ॥ ६ ॥ आसु- पुकारे कुगुरु पितरा । हमरो गत तुम कीजीये । जव्य ब्राह्मण खीर जिनवच । चाखीये रस पीजीये । कुगुरु खाली हाथ बैठे । पाये नरजव खोयके । पूजो दसहरा धरम । दस विध ज्ञान दरसन जोयके ॥७॥ कार्तिक दीवाली ज्ञान दीपक । जरम तिमर उन्हा- इया । अब ज्ञानपंचम निकट आई । करण त्रिक- सुद्ध पाइया । अष्टदृष्टि जोगसाधी । जावना त्रिक जाइया । अब जइ कुमति तत दूरी । सीत जिन- वचपाइया ॥ ८ ॥ मगसर जये सब गार ममता । जान महादुःख रासीया । सुत त्रात त्राता मित्र जननी । जान महा दुःख फांसिया । कोई न तेरा मीत दुरजन । सज्जन संगी हित करो । इक नेम चरण आधार । शिवमग आस मन मांही धरो ॥ ए ॥ पोषे तनु परिवार परजन । मित तेरे हैं

नही। तमित दमक ज्युं कान करिवर। राग संध्या बिन रही। चक्री हलधर संखचृत जन। देख सुपना रैनका। कोइ न थिरता जान अब। मन आसरा जिन बैनका ॥ १० ॥ माह महको वासना। मन ज्ञान दरसन मेलिया। याम सुमति तप कुगारे। करम डिह्लक ठेलीया। जारके सब मदन वन। घन मोखमार्ग फैलीया। अब देख चंग अखंरू राजुल नेम होरी खेलीया ॥ ११ ॥ सील सज तनुं केसरी पिचकारीयां सुज भावना। ज्ञान मादल ताल सम रस रागसुध गुण गावना। धूरजरी करमकी सब सांग सगरें त्यागीया। नेम आतमरामका धरि ध्यान शिव मग लागिया ॥ १२ ॥

इति श्रीनेमनाथजिनस्तवनम् ॥ २२ ॥



। श्रीपार्श्वनाथजिनस्तवनम् ।

(राग वडंस)

मूरति पास जिनंदकी सोहनी । मोहनी जगत उधारण हारी ॥ मू० ॥ आंकणी ॥ नील कमल दल तन प्रभु राजे । छाजे त्रिभुवन जन सुखकारी । मोह अज्ञान मान सब दलनो । मिथ्या मदन महा अघजारी ॥ मू० ॥ १ ॥ हूं अति हीन दीन जगवासी । माया मगन भयो सुद्धबुद्ध हारी । तो विन कौन करे मुज करुणा । वेगा लो अब खबर हमारी ॥ मू० ॥ २ ॥ तुम दरसन विन बहु दुःख पायो । खाये कनक जेसे चरी मतवारी । कुगुरु कुसंग रंगवस उरझ्यो । जानी नही तुम भगती प्यारी ॥ मू० ॥ ३ ॥ आदिअंत विन जग भरमायो । गायो कुदेव कुपंथ निहारी । जिनरस छोर अन्यरस गायो । पायो अनंत महा दुःख भारी ॥ मू० ॥ ४ ॥ कौन ऊधार करे मुज केरा ।

श्री जिन विन सहु लोक मझारी । करमकलंक पंक सब जारे । जो जन गावत भगति तिहारी ॥ मू० ॥ ५ ॥ जैसे चंद चकोरन नेहा । मधुकर केतकी दल मन प्यारी । जनम जनम प्रभु पास जिनेसर । वसो मन मेरे भगति तिहारी ॥ मू० ॥ ॥६॥ अश्वसेन वामाके नंदन । चंदन सम प्रभु तत बुझारी । निज आतम अनुभव रस दीजो । कीजो पलकमें तनु संसारी ॥ मू० ॥ ७ ॥

इति श्रीपार्श्वनाथजिनस्तवनम् ॥ २३ ॥

। श्रीमहावीरजिन स्तवनम् ।

(गीतकी देशी)

भवोदधि पार उतारणी । जिनवरकी वाणी । प्यारी है अमृत रस केल । नीकी है जिनवरकी वाणी । भरम मिथ्यात निवारियो ॥ जि०॥ दीधो

हे अनुजव रस मेल । प्यारी है जि० ॥ १ ॥ हम सरिखा अति दीनने । जि० । दुःखम हे अति-घोर अंधार । प्या० । जि० । ज्ञान प्रदीप जगा-वीयो । जि० । पाम्या है अतिमारग सार । प्या० । जि० ॥ २ ॥ अंग उपांग स्वरूपसुं । जि० । पइन्ने हे ब छेद गरंथ । प्या० । जि० । चूर्णि जाष्य निर्युक्तिसुं । जि० । वृत्ति हे नीकी मोक्ष-को पंथ । प्या० । ॥ ३ ॥ सद्गुरुकी ए तालिका । जि० । जासु हे खुले ज्ञानजंकार । प्या० । जि० । इन विन सूत्र वखाणीयो जि० । तस्कर हे तिण लोपि कार । प्या० । जिन० ॥ ४ ॥ सोहम गण-धर गुणनिलो । जि० । कीधो हे जिन ज्ञान-प्रकाश । प्या० । जि० । तुज पाटोधर दीपता । जि० । टार्यो हे जिन दुरनय पास । प्या० । जि० ॥ ५ ॥ हम सरिखा अनाथने जि० । फिरता हे वीत्यो काल अनंत । प्या० । जि० । इन जववी-

तक जे थया । जि० । तूं जाणे हे तौसुं कौन कहंत । प्या० । जि० ॥ ६ ॥ जिनवाणी विन कौन था । जि० । मुजनै हे देता मारग सार । प्या० । जि० । जयो जिन वाणी तारता । जि० । जार्यो हे मिथ्या मत चार । प्या० ॥ जि० ॥ ७ ॥ हुं अपराधी देवनो । जि० । करीयें हे मुजने बग- सीस । प्या० ॥ जि० ॥ निंदक पारउतारणे । जि० । तूही हे जग निर्मल ईस ॥ प्या० । जि० ॥ ८ ॥ बालक मूर्ख आकरो । जि० । धीठो है वलि अति अविनीत । प्या० । जि० । तोपिण जनके पालिये । जि० ॥ उत्तम हे जननी ए रीत । प्या० । जि० ॥ ९ ॥ ज्ञान हीन अविवेकीया । जि० । हठी हे निंदक गुण चोर । प्या० । जि० । तोपिण मुजने तारीये । जि० । मेरी हो तेरो मोहनी दोर ॥ प्या० ॥ जि० ॥ १० ॥ त्रिसला- नंदन वीरजी । जि० । तूंतो है आसाविसराम ।

प्या० । जि० । अजरअमरपद दीजीये । जि० । थाउं हुं जिम आतमराम ॥ प्या० जि० ॥ ११ ॥

॥ इति श्रीमहावीरजिनस्तवनम् ॥

॥ कलश ॥

(चोवीस जिनवरसयल)

सुख कर गावतां मन गहगहे । संघ रंग उमंग निजगुण नावतां शिव पद लहे ॥ नामे अंबाला नगर जिनवर वैन रस नविजन पिये । संवच्छरो खं अग्नि निधि विधु रूप आतम जस किये ॥१॥

॥ दोहा ॥

जिनवर जस ननमोदथी । हुकम मुनिके हेत ।
जो नवि गावत रंगसु । अजरअमर पद देत ॥

इति श्रीमद्विजयानंदसूरि (आत्मारामजी महाराज) कृता चतुर्विंशतिका समाप्ता.

॥ ॐ अर्हम् ॥

॥ अथ श्रीऋषभादिजिनस्तवनो ॥

॥ श्रीऋषभजिनस्तवनम् ॥ १ ॥

(राग मराठीमें)

रिखव जिनंद विमलगिरिमंडन, मंडन धर्म-धुरा कहीये। तुं अकल स्वरूपी,जारके करम भरम निज गुण लहीये॥रिखव०॥१॥ अजर अमर प्रभु अलख निरंजन, भंजन समर समर कहीये। तुं अद्भुत योद्धा, मारके करम धार जग जस लहीये॥ रिखव० ॥ २ ॥ अव्यय विभु ईश जग रंजन, रूप रेख बिन तुं कहीये। शिव अचर अनंगी, तारके जग जन निज सत्ता लहीये॥ रिखव० ॥ ३ ॥ शत सुत माता सुता सुहंकर, जगत जयंकर तुं कहीये। निज जन सब तार्ये, हमोर्से अंतर रखना ना चहीये॥ रिखव० ॥ ४ ॥ मुखडा

नींचके बेशी रहना, दीनदयालको ना चइये। हम तन मन ठारो, वचनसें सेवक अपना कह दइये ॥ रिखव० ॥ ५ ॥ त्रिभुवन ईश सुहंकर स्वामी, अंतरजामी तुं कहीये। जब हमकुं तारो, प्रभुसें मनकी बात सकल कहीये ॥ रिखव० ॥ ६ ॥ कल्पतरु चिंतामणी जाच्यो, आज निरासें ना रहीये। तुं चिंतित दायक, दासकी अरजी चित्तमें दृढ गहीये ॥ रिखव० ॥ ७ ॥ दीन हीन परगुण रस राची, सरण रहित जगमें रहीये। तुं करुणासिंधु, दासकी करुणा क्युं नहि चित्त गहिये॥ रिखव० ॥ ८ ॥ तुम बिन तारक कोई न दिसे, होवे तुमकुं क्युं कहीये। इह दिलमें ठानी, तारके सेवक जगमें जस लहीये ॥ रिखव० ॥ ९ ॥ सात वार तुम चरणे आयो, दायक शरण जगत कहीये। अब धरणे बेशी, नाथसे मन वंछित सब कुछ लहीये ॥ रिखव० ॥ १० ॥ अवगुण मानी परिह-

रस्यो तो; आदि गुणी जग को कहीये । जो गुणी जन तारे तो, तेरी अधिकता क्या कहीये ॥ रिखव० ॥ ११ ॥ आतमघटमें खोज प्यारे, बाह्य भटकते ना रहीये । तुम अजय अविनाशी, धारनिज रूप आनंदघनरस लहीये ॥ रिखव० ॥ १२ ॥ आतमनंदी प्रथम जिनेश्वर, तेरे चरण शरण रहीये । सिद्धाचल राजा, सरे सब काज आनंद रस पी रहीये ॥ रिखव० ॥ १३ ॥



॥ श्रीऋषभजिनस्तवनम् ॥ २ ॥

(राग माढ)

मनरी बातां दाखाजी म्हारा राज हो रिखवजी थांने ॥ मनरी०॥ आंकणी॥ कुमतिना भरमायाजी, म्हारा राजरे कांइ, व्यवहारि कुलमें, काल अनंत गमायाजी । म्हारा राज हो रिखवजी० ॥ १ ॥ कर्म विवर कुछ पायाजी, म्हारा राजरे कांइ । म-

नुष्य जनमें, आरज देशे आयाजी । म्हारा राज हो रिखवजी० ॥ २ ॥ मिथ्या जन जरमायाजी, म्हारा राजरे कांइ, कुगुरु वेषे अधिको नाच नचायाजी । म्हारा राज हो रिखवजी० ॥ ३ ॥ पुन्य उदय फीर आयाजी, म्हारा राजरे कांइ, जिनवर जाषित तत्त्व पदारथ पायाजी । म्हारा राज हो रिखवजी० ॥ ४ ॥ कुगुरु संग ठटकायाजी, म्हारा राजरे कांइ, राजनगरमें सुगुरु बेष धरायाजी । म्हारा राज हो रिखवजी० ॥ ५ ॥ सघला काज सरायाजी, म्हारा राजरे कांइ, मनको मर्कट माने नहीं समजायाजी । म्हारा राज हो रिखवजी० ॥६॥ कुविषयां संग धावेजी, म्हारा राजरे कांइ, ममता माया साथ नाच नचावेजी, म्हारा राज हो रिखवजी०॥७॥ महिमा पूजा देखी मान जरावेजी, म्हारा राजरे कांइ, निरगुणीयाने गुणीजन जगमें कहावेजी । म्हारा राज हो रिखवजी० ॥ ८ ॥ ठगे

वारे तुमरे द्वारे आयाजी,म्हारा राजरे कांइ,करुणा-सिंधु जगमें नाम धरायाजी। म्हारा राज हो रिखवजी० ॥ए॥ मन मर्कटकुं शिखो निज घर आवेजी, म्हारा राजरे कांइ, सघली वात समता रंग रंगावेजी। म्हारा राज हो रिखवजी० ॥ १० ॥ अनुभव रंग रंगीला समतासंगीजी, म्हारा राजरे कांइ,आतम ताजा अनुभव राजा संगीजी। म्हारा राज हो रिखवजी ॥ ११ ॥



॥ श्रीऋषभजिनस्तवनम् ॥ ३ ॥

(राग माढ)

थारी लइरे सरण जगनाथ, आज मुज तारो तो सही ॥ आंचली ॥ क्रोध मानकी तस मिटावो, गरो तो सही। मेरे प्रभुजी गरो तो सही। ए दिव्य ज्ञान जग भाण, हृदयमें धारो तो सही॥ थारी० ॥१॥ मिथ्या रांभ कपट जमता संग तारो

तो सही । ए सम्यग दर्शन सरस, आनंदरस कारो तो सही ॥थारी०॥२॥ तृषणा राफ जांफकी जाइ वारो तो सही । ए चरण शरण जय हरण, आनंदसे उगारो तो सही ॥ थारी० ॥३॥ अष्ट करम दल उदजट वैरी मारो तो सही । ए द्वादश विध तव अघ-मग जार उधारो तो सही॥ थारी० ॥४॥ युगलक धर्म निवारण तारण हारो तो सही । ए जगत उधारण रिखव जिनेश्वर प्यारो तो सही ॥ थारी० ॥५॥ विमलाचलमंफन अघ खंफन सारो तो सही । ए आतमराज आनंद-रस चाख उगारो तो सही ॥ थारी० ॥६॥



॥ श्रीऋषजजिनस्तवनम् ॥ ४ ॥

(राग वसंत होरी)

साचा साहिब मेरा सिद्धाचल स्वामी ॥ टेक ॥

चेतन कामको जाल फस्यो है बेगाही काज

निवेरा ॥ सिद्धा० ॥ १ ॥ दरस करत जो शिव फल ताको, वेग मिटे भव फेरा ॥ सिद्धा० ॥२॥ कलि काले एक तुमरे दरसका, आसरा भविको घनेरा ॥ सि० ॥३॥ दुषम कुगुरु भरम सब नाठो, अजहु भाग भलेरा ॥ सि० ॥ ४ ॥ आतमराम आनंदघन राच्यो, तुमचो मान हु चेरा ॥ सि० ॥५॥



॥ श्रीऋषभजिनस्तवनम् ॥ ५ ॥

राग बहंस

(हमको छोड चले बन माधो, यह चाल)

अब तो पार भए हम साधो, श्री सिद्धाचल दरस करी रे ॥ अबतो पार० ॥ टेक ॥ आदीश्वर जिन महेर करी अब, पाप पटल सब दूर भयो रे ॥ तन मन पावन भविजन केरो, निरखी जिनंद चंद सुख थयो रे ॥ अ० ॥ १ ॥ पुंडरीक पमुहा मुनि बहु सिद्धा, सिद्धक्षेत्र हम जाच

लंह्यो रे। पशु पंखी जिहां झिनकमें तरीया; तो हम दृढ विसवास गह्यो रे ॥ अ० ॥ २ ॥ जिन गणधर अवधि मुनी नाही, किस आगे हुं पूकार करुं रे। जिम तिम करी विमलाचल नेटयो, नवसागरथी ताही करुं रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ दूर देशांतरमें हम ऊपने, कुगुरु कुपंथको जाल पर्यो रे ॥ श्री जिन आगम हम मन मान्यो, तब ही कुपंथको जाल जर्यो रे ॥ अ० ॥ ४ ॥ तो तुम शरण विचारी आयो, दीन अनाथको शरण दियो रे। जयो विमलाचल पूरण स्वामी, जनम जनमको पाप गयो रे ॥ अ० ॥ ५ ॥ डुरनवी अनंव्य नजरे न देखे, सूरि धनेसर एम कह्यो रे ॥ विमलाचल फरसे जो प्राणी, मोक्ष महेल तिण वेग लह्यो रे ॥ अ० ॥ ६ ॥ जयो जगदीसर तूं परमेसर, पूर्व नवाणुं वार थयो रे। समवसरण रायणतले तेरो, नीरखी मम अघ दूर गयो रे ॥ अ०

॥ ७ ॥ श्री विमलाचल मुज मन वसीयो, मानुं संसारनो अंत थयो रे॥ यात्रा करी मन तोष जयो अब, जनम मरण दुःख दुर गयो रे॥ अ० ॥ ८ ॥ निर्मल मुनिजन जो तें तार्या, ते तो प्रसिद्ध सिद्धांत कह्यो रे । मुज सरीसा निंदक जो तारो, तारक बिरुद् ये साच लह्यो रे ॥ अ० ॥ ९ ॥ ज्ञानहीन गुणरहित विरोधी, लंपट ढीठ कषाय खरो रे । तुं बिन तारक कोइ न दीसे, जयो जगदीसर सिद्धगिरो रे ॥ अ० ॥१०॥ तिर्यग नरक गति दूर निवारी, जवसागरकी पीर हरो रे । आतमराम अनघ पद पामी, मोक्ष वधू तिन वेग वरो रे ॥ अ० ॥ ११ ॥



॥ श्रीऋषभजिनस्तवनम् ॥ ६ ॥

(चाल गुजराती गरबाकी.)

वहेला जवि जइयो विमल गिरी जेटवा ।

अरे कांइ भेटीयां भवदुःख जाय, अरे कांइ सेवीयां शिवसुख थाय, तुम वहेला भवि० ॥ टेक ॥ अरे कांइ जनम सफल तुम थाय, अरे कां नरक तिर्यंच मिट जाय, अरे कांइ तन मन पावन थाय, अरे कांइ सकल करम क्षय जाय ॥ तुम वेहेला० ॥ १ ॥ अरे कांइ पंचमे भव शिव जाय, अरे कांइ इनमें शंका नही कांय, अरे कांइ विमलाचल फरसाय, अरे कांइ भविनो निश्चय थाय ॥ तुम० ॥ २ ॥ अरे कांइ नाभिनंदन चंद, अरे कांइ डरी पाल जिन वंद, अरे कांइ दूर होय अघ वृंद, अरे कांइ प्रगटे नयनानंद ॥ तुम० ॥ ३ ॥ अरे कांइ चउमुख चढे सुखरास, अरे कांइ मोक्ष मेहेल कीनो वास, अरे कांइ भववन सहु थयो नास, अरे कांइ कोइ न रहे उदास ॥ तुम० ॥ ४ ॥ अरे कांइ मोटा पुण्य अंकूर, अरे कांइ चिंता गइ सब दूर, अरे

कांइ कुमत कदाग्रह चूर, अरे कांइ आव्या नाथ हजूर ॥ तुम० ॥ ५ ॥ अरे कांइ आपणो वंश उद्धार, अरे कांइ दीन अनाथ आधार । अरे कांइ मुजने तुं अब तार, अरे कांइ अवर न सरण आधार ॥ तुम० ॥ ६ ॥ अरे कांइ मुजने मत तूं विसार, अरे कांइ करम भरम सब गार। अरे कांइ आतम आनंदकार, अरे कांइ भवसागर पाम्यो पार ॥ तुम० ॥ ७ ॥



॥ श्रीऋषभजिनस्तवनम् ॥ ७ ॥

(राग विहाग.)

तारक हे जिन नाभिके नंदन, विमलाचल सुखदाइरी । भरम मिथ्यामत दूर नस्यो हे, मिथ्या लोह कुराइ सखीरी ॥ तारक० ॥ १ ॥ कुमती कुटल विटल सब नासी, सुमती सखी हरखाइरी । तुं वैरण मुज आदि अनादि, देख

गिरिंद नसाइ सखीरी ॥ ता० ॥ २ ॥ राग द्वेष मद नरम अज्ञाना, अंधकार तिन गाइरी । श्री जिनचंद गिरिंद जो निरखो, छिनकमें पाप पलाइ ॥ स० ॥ ३ ॥ पावन नावन मुज मन हुलसो, कुन्नसी कुमति घबराइरी । अब कहां जातहै वैरण नेकी, रिखन जिनंद दुहाइ ॥ स० ॥ ४ ॥ नावत विमलाचल जो फरसे, पंच नवे शिवराइरी । अब हम तुमरो नातो टूटो, अब हम केम ठराइ ॥ स० ॥ ५ ॥ आदि जिनंद गिरींद जो नेव्यो, पाप घूक अंधराइरी । जयो जगदोसर श्री विमलेसर, चरण सरण तुम आइ ॥ ॥ स० ॥ ६ ॥ आगे अनंत मुनि तैं तार्या, बेर न कीनी कांइरी । हुं तुम बालक सरण पर्यो हुं, नेक नजर करो सांइ ॥ स० ॥ ७ ॥ आतम अनाम अविनासी, मुक्ति रमणी वरवाइरी । सु-

मति हिंडोले सब सखीयनसें, आनंद मंगल गाइ ॥ स० ॥ ७ ॥

॥ श्रीऋषभजिनस्तवनम् ॥ ७ ॥

(राग–तराना.)

राजत आनंद कंदरी विमलगिरी राजत आनंद कंदरी, रिखव जिनंद चंद सेवे सुर नर वृंद राजत० ॥ टेक ॥ पुंडरीक गणाधिप पण कोडी मुनिवर, साथ शिवनार वर करमको कंद हर । इत्यादिक अनंत मुनि सिद्धनको थान तूं, रिखभदेव जगदीश मुज आस भर ॥ रा० ॥ १ ॥ दूरभवी जे अभवी नीरखे न गिरि छबि, पाप तम पटल विनाशक सद रवि । दायक जिनंद दियो छिनमें अनघ पद, विमल गिरीस ईस छेद गति चार गद ॥ रा० ॥ २ ॥ सुर गण इंद चंद नाचत पठत छंद, रचत संगीत गीत धप-मप धुधु वंद । ड्रागडदि अनट किट धों धों

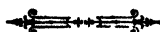
धोंकं धोट, त्रों त्रों सुखकदि अनंग जट नाश कर ॥ रा० ॥ ३ ॥ तलालों तलालों धिट निट किकरु धंग, भ्रमरि फिरत सुर अंगना सूरंग । धंद जय जयं नाभिनंद भवि चंकोर चंद, सिद्धगिरि ईस मम शिव वधूवर कर ॥ रा० ॥ ४ ॥ अजर अमर अज अलख आनंद घन, चिदानंद जगानंद राजत अन्यून घन । सेवक आनंद करो निजरूप रूप करो, आदिहीमें दान दीयो, पाप सब नाशकर ॥ रा० ॥ ५ ॥ एक भव तीन भव पंचही जनम धर, मुगती रमणी वर नरक तिर्यंग हर । महानंद कंद तूं विमलगिरि ईशवर, अनुभव रंग राज काज मेरो आज कर ॥ ॥ रा० ॥ ६ ॥ रोग सोग मान भंग जनम मरण संग, राग दोष मोह कोह विकट अनंग रंग । इत्यादि अनंत रिपु छीनमें विकार कर, आतम आनंद चंद सुधानंद वास कर ॥ रा० ॥ ७ ॥

॥ श्रीऋषजजिनस्तवनम् ॥ ए ॥

(राग–केरवो.)

(ऊगर बतादे पाहाऊीयां, ए देशी.)

ऊगर बतादें पियारीया, में तो पूजुंजो रिषन जिनंद ऊगर ॥ टेक ॥ रायण तरु तले चरण बिराजे, बीच बिराजे जिनराज ॥ ऊ० ॥ १ ॥ चउमुख दरस करूं ने सुख पाऊं, जिम सुधरे सब काज ॥ ऊ० ॥ २ ॥ विमलाचल मंऊन सब सोहे; मंऊन धर्म समाज ॥ ऊ० ॥ ३ ॥ आतम चंद जिमंदजी नेटी, वेग मिले शिवराज ॥ ऊ० ॥ ४ ॥



॥ श्रीऋषजजिनस्तवनम् ॥ १० ॥

(राग–लावणी.)

(सखीरी चल गढ गिरनारी ॥ यह चाल.)

प्रजुजी वि॰ लाचल राजे, जिहां प्रजु रिखन देव गाजे, जायके पूजन करना जेके, सन्न ही

कर्म सुभट भाजे ॥ भविजन तुम क्यों .आलस करते, तज दो अघ जेरा कर्म कंद हर बंधन टूटे; मिथ्या मत घेरा न तेरा शत्रु जग गाजे ॥ प्र० ॥ ॥१॥ प्रभुजी नाभिराय नंदा, काट सब कर्मनका फंदा, भये जगमें सुरतरु कंदा, सिमरो धर्मके आनंदा, निजगुण सत्ता चिद्घन प्रगटी पुण्य रास इक तान, अजर अमर पूरण पद पामी प्रगटे केवलज्ञान, भविजन महानंद काजे ॥ प्र० ॥ ॥ २ ॥ प्रभु तुम दरशन हितकारी, तरे भवबनसें नरनारी, जिनों ने चरण सरण धारी के खिनगढ निजगुण वन वारी, तीन पांच अरु एक भवंतर करत मुक्तिमें वास । जिन गणधर मुनि कथन रसीला, आतम अनुभव रास, निहारो नाथ जगत राजे ॥ प्र० ॥ ३ ॥



॥ श्रीऋषभजिनस्तवनम् ॥ ११ ॥

(राग ठुमरी.)

(महावीर तोरे समवसरणकी रे ॥ चाल)

जिनंदा तोरे चरण कमलकी रे ॥ हुं चाहुं सेवा प्यारी, तो नासे कर्म कटारो, भवभ्रांति मिट गइ सारी ॥ जिनंदा० ॥ विमलगिरि राजे रे, महिमा अति गाजे रे, वाजे जग डंका तेरा, तुं सच्चा साहेब मेरा, हुं बालक चेरा तेरा ॥ जिनंदा० ॥ १ ॥ करुणा कर स्वामी रे, तुं अंतरजामी रे, नामी जग पुनम चंदा, तुं अजर अमर सुखकंदा, तुं नाभिराय कुल नंदा ॥ जि० ॥ २ ॥ इण गिरि सिद्धारे, मुनि अनंत प्रसिद्धा रे, प्रभु पुंडरीक गणधारी, पुंडरगिरि नाम कहारी, ए सहु महीमा है थारी ॥ जि० ॥ ३ ॥ तारक जग दीठारे, पाप पंक सहु नीठारे, इठामो मनमें भारी, में कोनी सेवा थारी, हुं मास

रह्यो सुजचारी ॥ जि० ॥ ४ ॥ अब मोहे तारो रे, बिरुद तिहारो रे, तीरथ जिनवर दो जेटी, में जन्म जरा दुःख मेटी, हुं पायो गुणनी पेटी ॥जि०॥५॥ द्राविरू वारी खिल्ला रे, दश कोमि मुनि मिल्ला रे, हुइ मुक्ति रमणी जरतारा,कार्तिक पूनम दिन सारा, जिनशासन जग जयकारा ॥ जि० ॥ ६ ॥ संवत शिखि चारा रे, निधि इंदु उदारा रे, आतमको आनंदकारी, जिन दरसनकी बलिहारी, पाम्यो जवजलधि पारी ॥ जि० ॥ ७ ॥



॥ श्रीऋषजजिनस्तवनम् ॥ १२ ॥

(राग भैरवी.)

रिषज सुहंकर चिद्घन संगी, वंदो जवि जन तारे रे ॥ रि० ॥ अंचली ॥ वदन कमळ सुर नर मन मोहे, शांति सुधा रस धारे रे ॥ रि० ॥ १ ॥

ज्ञान अपायनस वचन सुहंकर, पूजा अतिशय चारे रे ॥ रि० ॥ २ ॥ स्थिर उत्पाद व्यय वस्तु निरधारी, स्याद्वाद अंक कारे रे ॥ रि० ॥ ३ ॥ यह जव परजव कष्ट निवारे, जन्म मरण अघ जारे रे ॥ रि० ॥ ४ ॥ मधुर सुधारस बचन रंगीले, पैंतीस अतिशय धारे रे ॥ रि० ॥ ५ ॥ चउसठ सुरपति अवर देव सब, मधुकर पर झंकारे रे ॥ रि० ॥ ६ ॥ जयो जगदीस सुहंकर स्वामी, सेवक सब दुःख टारे रे ॥ रि० ॥ ७ ॥ विमलाचल मंरून मुज प्यारो, आतम आनंद लारे रे ॥ रि० ॥ ८ ॥



॥ श्रीऋषभजिनस्तवनम् ॥ १३ ॥

(राग रामकली.)

(आंगण कल्प फल्यो री ॥ यह चाल)

आनंद अंग जयोरी, हमारे आनंद० ॥टेक॥ गण-

धर पुंडरीक इण गिरि सोहे, देखी अघ सहु जयोंरी ॥ ह० ॥ १ ॥ इस अवसर्पिणी तृतीय कालमें, इण गिरि मोक्ष वयोंरी. ॥ ह० ॥ २ ॥ पुंडरीक गिरि इण कारण प्रगटयो, नामें पाप हयोंरी ॥ ह० ॥ ३ ॥ नंदनको गणाधिप इण गिरि, कर्म सुभटथी लयोंरी ॥ ह० ॥ ४ ॥ जय पामी तुम मुक्ति बिराजे, सेवक हेज जयोंरी ॥ह०॥५॥ अरज करुं निज पद मुज आपो, तो सहु काज सयोंरी ॥ ह० ॥ ६ ॥ दशा तुमारी आतमानंदी, मुज प्रगटे तो सयोंरी ॥ ह० ॥ ७ ॥



॥ श्रीऋषभजिनस्तवनम् ॥ १४ ॥

आदि जिनंद दयाल हो, मेरी लागी लगनवा ॥ टेक ॥ विमलाचल मंडन दुःख खंडन, मंडन धर्म विसाल हो ॥ मे० ॥ १ ॥ विषधर

मोर चोर कामिजन, दरीसन कर निहाल हो ॥ मे० ॥ २ ॥ हुं अनाथ तूं त्रिभूवन नाथा, कर मेरी संभाल हो ॥ मे० ॥ ३ ॥ आतम आनंद-कंदके दाता, त्राता परम कृपाल हो ॥ मं० ॥ ४ ॥

॥ श्रीऋषभजिनस्तवनम् ॥ १५ ॥

(राग ठुमरी)

चलो सजनी जिन वंदन को, विमलाचल पाप निकंदनको ॥ टेक ॥ दरस करत सब पातक जावे; तिर्यग् नरक गति छिंदनको ॥ च० ॥ १ ॥ दुरभवी अभव्य न देखे, चूर करर सब धंदनको ॥ च० ॥ २ ॥ आतम रसभर आदि जिनंदा, मूरतसे भव बंधनको ॥ च० ॥ ३ ॥

॥ श्रीशांतिजिनस्तवनम् ॥

(राग कमाच)

(जिन दरशन आनंद खानी ॥ टेक)

राग द्वेष घिन काम अज्ञाना, हास्य निंद भय हानी. ॥ जिन० ॥ १ ॥ पंच विघन रति अरति नासो, भासी महानंद खानी ॥ जिन०॥२॥ मिथ्या रंग भंग कियो छिनमें, अविरति सोग जरानी ॥ जिन० ॥ ३ ॥ चिद्घन मूरति सूरति सोहे, शांति सुधारस दानी ॥ जिन० ॥ ४ ॥ बाल तरुन छद्मस्थ सुज्ञानी, जन अघहर निरवानी । जिन० ॥ ५ ॥ विश्वसेन नृप अचिराके नंदन, शाति शांतिके दानी ॥ जि० ॥ ६ ॥ जन्म सफल मुज प्रभु मुख निरख्यो, विमलाचल छाबे गनि ॥ जिन० ॥ ७ ॥ आतम आनंद करो जिनवरजी, तरुं जिम भवदुःख पानी ॥ जिन० ॥ ८ ॥

॥ श्रीमल्लिजिनस्तवनम् ॥ १ ॥

(श्रीराग)

(मल्लिजिन दरसन नयनानंद ॥ टेक)

नील वरण तनु नविजन मोहे, वदन कमल निरमल सुखकंद । निरविकार दृग दयारस पूरे, चूरे नविकजन अघवृंद ॥ म० ॥ १ ॥ शुचि तनु कांति टरी अघ भ्रांति, मदन मर्यो तुम करम निकंद । जय जय निर्मल अघहर ज्योति, द्योति त्रिभुवन निर्मल चंद ॥ म० ॥ २ ॥ केवल दरस ज्ञान युत स्वामी, नामी अडदस दोस जरंद । लोकालोक प्रकाशित जिनजी, वानी अमृत झरी वरसंत ॥ म० ॥ ३ ॥ पीके नविजन अमर नये है, फिर नही नवसागर ही फिरंद । नित्यानंद प्रकाश नयो है, करम नरमको जार्यो फंद ॥ म० ॥ ४ ॥ अवर देव वामारस राचे, नासे निज-गुन सहजानंद । तुं निर्मद विभु ईश शिवंकर,

टारे जनम मरन दुःख धंद ॥ म० ॥ ५ तेरेही चरण सरण हुं आयो, कर करुणा अर्हन् जगइंद। अंतर्गत मुज सहु तुं जाने, सरणागतकी लाज रखंद ॥ म० ॥ ६ ॥ गुरजर देश मैं आतमानंदी, जोयणी नजर उग्यो चंद ॥ त्रियत शिखि निधि इंदु शुभ वरसे, मास वैशाख पूनिम चंद ॥म०॥७॥



॥ श्रीमल्लिजिनस्तवनम् ॥ २ ॥

जिन राजा ताजा, मल्लि विराजे जोयणी गाममे ॥ टेक देश देशके जात्रु आवे, पूजा सरस रचावे, मल्लि जिनेसर नाम सिमरके, मनवंछित फल पावेजी ॥ जि० ॥ १ ॥ चतुर वरणके नर नारी, मिल मंगल गीत करावे; जय जयकार पंचध्वनि वाजे, शिरपर छत्र फिरावेजी ॥ जि० ॥ २ ॥ हिंसक जन हिंसा तजी पूजे, चरणे सीस नमावे, तुं ब्रह्मा तुं

हरि शिवंकर, अवर देव नही नावेजी ॥ जि० ॥ ३ ॥ करुणारस नरे नयन कचोरे, अमृतरस वरसावे; वदन चंद चकोर ज्युं निरखी, तन मन अति उलसावेंजी ॥ जि० ॥ ४ ॥ आतम राजा त्रिभुवन ताजा, चिदानंद मन नावे; मल्लि जिनेसर मनहर स्वामी, तेरा दरस सुहावेजी ॥जि०॥५॥

॥ श्रीमल्लिजिनस्तवनम् ॥ ३ ॥

॥ राग परज ॥

(निशदिन जोउं थारी वाटमी घर आवो मारा ढोला, ए देशी)

मल्लि जिनेश्वर साहिब तुं तो अंतरजामी ॥ आंचली ॥ करम सुनट रण अंगणे एक छिनकमें दामी, षट् मित्त प्रतिबोधक कीने जगत निकामी ॥ मल्लि० ॥ १ ॥ पर उपकारी तुं प्रनु करुणा कर स्वामी। तेरो मुख दीठे मीटे

मेरे मनकी खामी ॥ मल्लि० ॥ २ ॥ करम रोगके हरनकुं प्रजु तुं जगनामी, वैद्य धनंतरी मो मीले त्रिजुवन विसरामी ॥ मल्लि० ॥ ३ ॥ वरण प्रियंगु तनु धरे जवीजन सुख कामी, अष्टादश मल टालके जये निजगुण गामी ॥ मल्लि० ॥ ४ ॥ गुर्जर देश सुहंकरु जोयणो शुज नामी, जिहां विराजे तुं प्रजु करे जगको निरामी ॥ मल्लि० ॥ ५ ॥ करम रोगयुत हुं फीरुं शिव पद सुख धामी, जग जश ल्यो मुज तारके करो आतमरामी ॥ मल्लि० ॥ ६ ॥

॥ इति श्री मल्लिनाथ-जिनस्तवनानि संपूर्णानि ॥

॥ श्रीनेमिजिनस्तवनम् ॥ १ ॥

(क्यां करुं माता मेरी, पंफित के जाकेरी, ए देशी)

नव जव केरो प्रीत सजन, तुम तोमो न जावोरे ॥ नव० ॥ आंकणी ॥ मुगती रमणीस्युं लागी लगन, मनमें अति वैराग धरना । गेम

चले निज साथ सजन, मुख फेर देखावोरे ॥ नव०
॥ १ ॥ तुम छोडी अब जात कहुं, में नही छोडत
घर न रहुं । जोगन बनी तुम संग चलुं, नीज
ज्योती जगावोरे ॥ नव० ॥ २ ॥ आतम वेरन
कुमती छलुं, राग द्वेष मदमोह दलुं । मुगती नगर
तुम संग चलुं, नीज जोर जनावोरे ॥ नव० ॥३॥

॥ श्रीनेमिजिनस्तवनम् ॥ २ ॥

आवो नेम सुख चेन करो, दुःख काही
देखावोरे ॥ आंकणी ॥ विरह तुमारो अतीही
कठन, सही न शकुं पल एक छीन। जगत लाग्यो
सब हांसी करन, मत छोडीने जावोरे ॥आवो० ॥१॥
करुणासिंधु नाम धरन, सुण अनाथके नाथ-जीन।
रुदन करुं तुम चरन परन, टुंक दया दील
लावोरे ॥ आवो० ॥ २ ॥ अरुजव सुंदर प्रीत

करी, अब क्युं उलटी रीत धरी। आतम हित जग लाज टरी, निज भुवन सीधावोरे ॥आवो०॥३॥



॥ श्रीनेमजिनस्तवनम् ॥ ३ ॥

(राग बिहाग.)

वारक है शिवादेवीके नंदन, करम कठिन दुःख दाइरी; मार धार अघ दूर करी हे, श्याम रूप दरसाइ सखीरी ॥ वा० ॥ १ ॥ मदन कदन शिव सदनके दाता, हरण करन दुःखदाइरी। करम भरम जग तिमिर हरनको, अजर अमर पद पाइ सखीरी ॥ वा० ॥ २ ॥ जदुपति वंदन करत आनंदन, स्वप्न चार ठितराइरी । अमम अमम जिन रूप सरीसो, जिनवर पद उपजाइ सखीरी ॥ वा० ॥ ३ ॥ राजिमती निज वनीता तारी, नवभव प्रीति निभाइरी। हलधर रथकर मृग तुम नामे, ब्रह्मलोक सुर थाइ सखीरी ॥

वा० ॥ ४ ॥ गजसुकुमाल लाल तुम तार्यो, नव-
वन सगरे जराइरी। ए उपगार गिनु जग केता,
करुणा सिंधु सहाइ सखीरी ॥ वा० ॥ ५ ॥ पिण
निज कुटुंब उद्धार नाथजी, तारक बिरुद धरा-
इरी। ए गुण अवर नरनमें राजे, इनमें कांइ बडाइ
सखीरी ॥ वा० ॥६॥ रेवताचल मंडन दुःख खंडन,
महेर करो जिनराइरी। मुज घट आनंद मंगल
कर तो, हुं पिण आतमराइ सखीरी ॥ वा० ॥ ७ ॥



॥ श्रीनेमिजिनस्तवनम् ॥ ४ ॥

(राग केरवा.)

(डगर बतादे पूजारीया, में तो भेटुं नेमि.
जिनंद, डगर ॥ टेक)

प्रथम टुंक प्रभु जिनजी विराजे, राजे सुर-
तरुकंद ॥ ड० ॥ १॥ सहस्रावन प्रभु चरण विराजे,
भेटीये परम आनंद ॥ ड० ॥ २ ॥ ऊंची विखमी

पंचमी टूंके, काटे कर्मका फंद ॥ रु० ॥३॥ अवर टूंक पर चरण सुहंकर, पूजो आतमचंद ॥रु०॥४॥

॥ श्रीनेमिजिनस्तवनम् ॥ ५ ॥

(राग ठुमरी.)

(चलो रुजनी जिन वंदनको, गिरनारी नेमि सामरीया ॥ टेक)

ऊंचेरे गढपर प्रभुजी बिराजे, दरस करत भवजल तरीया ॥ च० ॥ १ ॥ श्याम वरण तनु भविजन मोहे, शांति रूप तन मन ठरीया॥च०॥ ॥ २ ॥ आतम आनंद मंगल मूरती, सूरति जिन हिरदे धरीया ॥ च० ॥ ३ ॥

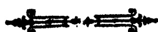
॥ श्रीनेमिजिनस्तवनम् ॥ ६ ॥

(राग ध्रुपद)

(आई इंद्र नार कर कर शृंगार ॥ चाल)

तुम मदन जार, निजरूप धार, गिरवर

सधार, मन काम डार, सुन पशु पूकार, जग सब तज दीनो ॥ तुम० ॥ १ ॥ तुम दयावान, सब गुण निधान, मैं धरूं ध्यान, तुम चरन आन, शिव गत निधान, तुम नाम नगीनो ॥ तुम० ॥ २ ॥ सुर इंद, चंद नर इंद वंद, तुम दरस नयन, मुज सुख आनंद, आतम आनंद, चरनन चित्त दीनो ॥ तुम० ॥ ३ ॥



॥ श्रीनेमिजिनस्तवनम् ॥ ७ ॥

(राग मराठी)

नेमि निरंजन नाथ हमारे, अंजन मदन रदन कहीये । जिन राजुल त्यागी, रूपमें रंभा जगमें ना लहिये ॥ ने० ॥ १ ॥ अवर देव वामा वस कीने, भीने कामरसे गहीये । तूं अद्भूत योद्धा नामसें, मार करमका जर दहीये ॥ ने० ॥ २ ॥

रेवताचल मंडन दुःख खंडन, मंडन धर्म धुरा कहीये । तुम दरशन करके, पापके कोट छिनकमें सब ढहीये ॥ ने०॥३॥ आतम रंग रंगीला जिनवर, तुमरी चरन सरन लहीये । तो अलख निरंजन, ज्योतिमें ज्योति मिलीने संग रहीये ॥ने०॥ ४॥

॥ श्रीनेमिजिनस्तवनम् ॥ ७ ॥

(राग ठुमरी)

मन मगन नेमि जिन दरसनमें ॥ टेक ॥ आवो सखी मिल गिरवर चलिये, नेमि चरन युग फरसनमें ॥ मन०॥ १॥ रेवताचल भये तीन कल्यानक, मुगति देत सेवक जनने ॥मन०॥ २॥ आतम रूप गहु मन मोहे न छोडुं रूप रस तन धनने ॥ मन० ॥ ३ ॥

॥ इति श्रीनेमिजिनस्तवनानि संपूर्णानि ॥

॥ श्रीपार्श्वजिनस्तवनम् ॥ १ ॥

(राग ठुमरी)

चलो सजनी जिन वंदनको, मधुवनमें पास निरंजनको ॥ च० ॥ टेक ॥ समेत शिखरपर प्रभुजी विराजे, दरशन पाप निकंदनको ॥ च० ॥ १ ॥ अश्वसेन नरपतिके नंदा, दुर करो दुःख बंधनको ॥ च० ॥ २ ॥ आतमराम आनंदके दाता, वामा मात आनंदनको ॥ च० ॥ ३ ॥

॥ श्रीपार्श्वजिनस्तवनम् ॥ २

(पारस नाथ जपत है जो जन, ए देशी)

पास जिनंद आनंदके दाता, तीन भवनमें मोह लियोरे ॥ पा० ॥ टेक ॥ वामानंदन पापनिकंदन, तीन भवनमें नाम गयोरे ॥ पा० ॥१॥ कमठासुरको मद हर लीनो, सात जनममें जयकार लियोरे ॥ पा० ॥ २ ॥ आतम समेत शिखर चल जाउं, जनम मरन दुःख दूर थयोरे ॥पा०॥३॥

॥ श्रीपार्श्वजिनस्तवनम् ॥ ३ ॥

(राग केरबा)

डगर बतादे पहाडीया, मैं तो पूजुं परम आनंद ॥ डगर० ॥ टेक ॥ पासचरन भेटनकी मनमें, लांगी बहुत उमंग ॥ ड० ॥ १ ॥ धन्य दिवस वो सकल गिनूंगा, जाऊं समेत उत्तंग ॥ ड० ॥ चातक घन जिम दरशन चाहुं, मनमें भाव अभंग ॥ ड० ॥ २ ॥ आतमरस भरी जिनवर निरखुं, फले मनोरथ चंग ॥ ड० ॥ ३ ॥

॥ श्रीपार्श्वजिनस्तवनम् ॥ ४ ॥

(राग ठुमरी)

मैं देखा पारसनाथ निरंजन, सफल फली मंन आसजी ॥ मैं० ॥ टेक ॥ गिरि समेत प्रभु सोहे मोहे, मोहे भवि जन रासजी ॥ मैं० ॥ १ ॥

देश देशके जातरु आवे, कोई न थावे निरासजी ॥ मैं० ॥ २ ॥ संघ सुहावन मधुवन सुंदर, जिहां प्रभुलीना वासजी ॥ मैं० ॥ ३ ॥ आतम आनंद मंगल मूरत, आनंद घन सुख रासजी ॥मैं०॥४॥



॥ श्रीपार्श्वजिनस्तवनम् ॥ ५ ॥

पारसनाथ जपत है जो जन, ॥ ए देसी ॥ पास जिनंद रटत है जो जन, दुर टले भव सागर फेरे ॥ पा० टेक ॥तीन भवनमें तिलक विराजे, अष्टादश दोष सब मेरे ॥ पा० ॥ १ ॥ अवर देव वामा वस कीने, भीने मदन मदंध घनेरे ॥ पा० ॥ २ ॥ शांतिरूप तुम दरसन कीने, नाम लेत सब बंधन फेरे ॥ पा० ॥ ३ ॥ गिरि समेत प्रभु अटल विराजे, आतम आनंद रसको लेरे ॥ ४ ॥



॥ श्रीपार्श्वजिनस्तवनम् ॥ ६ ॥

॥ राग ठुमरी ॥

प्रभु पास निरंजन जयकारी ॥ टेक ॥

बालपने प्रभु अद्भूत ज्ञानी, राख्यो नाग लकर फारी ॥ प्र० ॥ १ ॥ दे नवकार फणीधर कीनों, एक दया दिलमें धारी ॥ प्र० ॥ २ ॥ वाणीरस अमृत वरसायो, भविजनके कारज सारी ॥ प्र० ॥ ३ ॥ समेतशिखर प्रभु मुक्ति विराजे, जिन आतमगुण ले लारी ॥ प्र० ॥ ४ ॥

॥ श्रीपार्श्वजिनस्तवनम् ॥ ७ ॥

(राग ठुमरी)

जिन पास दरस कर मगन भये ॥ टेक ॥

चरन सरन प्रभु तुम रस राचे, काटे करम-कलंक गये ॥ जि० ॥ १ ॥ तेरे भजनसें पाप पखारे, जनम मरन दुःख दुर भये ॥ जि० ॥५॥

गिरि समेत प्रभु त्रिभुवन मोहे, आतम रसमें मगन थये ॥ जि० ॥ ३ ॥

॥ श्रीशंखेश्वरपार्श्वजिनस्तवनम् ॥ ७ ॥

(राग भैरवी)

लागी लगन कहो केसे छुटे ।. प्राणजीवन प्रभु प्यारेसें, ए देसी । श्री शंखेश्वर निज गुनरंगी, प्राणजीवन प्रभु तारेरे ॥ श्री शंखेश्वर० । आंचली ॥ अश्वसेन वामाजीको नंदन, चंदन रस सम सारेरे । अनीयाली तोरी अंबुज अखीयां, करुणा रसभरे तारेरे ॥ श्री शंखेश्वर० ॥ १ ॥ नयन कचोले अमृत रोले, भविजन काज सुधारेरे । भवि चकोर चित्त हरखे निरखी, चंद किरण सम प्यारेरे । श्री शंखेश्वर० ॥ २ ॥ तेरो ही नाम रटत हुं निशदिन, अन्य आलंबन टारेरे । शरण पकये को पार उतारे, ऐसो बिरुद तिहारेरे॥

श्री शंखेश्वर० ॥ ३ ॥ भ्रमत भ्रमत शंखेश्वर स्वामी, पामी भ्रम सब फोरेरे ॥ जनम मरणकी भीति निवारी, वेग करो भव पार रे ॥ श्री शंखेश्वर० ॥ ४ ॥ आतमराम आनंद रस पूरण, तुं मुज काज सुधारेरे ॥ अनहद नाद बजे घट अंतर, तुंही तुंही तान उच्चारेरे ॥ श्री शंखेश्वर० ॥ ५ ॥

॥ श्रीशंखेश्वरपार्श्वजिनस्तवनम् ॥ ए ॥

(राग खमाच)

श्री शंखेश्वर दरस देख, कुमति मोरी मिट गइरे आज ॥ आंचली ॥ ज्ञान वचन पूजा रस गायो, नाश कष्ट भविजन मन भायो ॥ युं जिन मूरति रंग देख, दुरगति मेरी खुट गइरे ॥ श्री-शंखेश्वर० ॥ १ ॥ निरविकार वामासंग त्यागी, जपमाला नहीं नाथ निरागी । शस्त्र नहीं कर द्वेष मिटे, भ्रमता सब छुट गइरे ॥ श्री शंखे-

श्वर० ॥ २ ॥ निज विभूति लीनी लार, लोका-
लोक करी उजवार । नाम जपे सब पाप कटे,
दुर्मति सब लुठ गइरे ॥ श्री शंखेश्वर० ॥ ३ ॥
आनंद मंगल जगमें चार, मंगल प्रथम
जगत करतार । श्रीवामासुत पास तुंही,
अघ भ्रांति मिट गइरे ॥ श्रीशंखेश्वर० ॥ ४ ॥
श्याम मेघ सम पासजी निरखी, आतम आनंद
शिखी जिम हरखी । करत शब्द मुख पास तुंही,
यही रटना रट लइरे ॥ श्री शंखेश्वर० ॥५॥ इति ॥



॥ श्रीशंखेश्वरपार्श्वजिनस्तवनम् ॥ १० ॥

(राग पंजाबी ठेकानी ठुमरी)

मोरी बैयां तो पकर शंखेश स्याम, करुणा
रसभरे तोरे नैन स्याम ॥ मोरी० ॥आंचली ॥
तुम तो तार फणींद जग साचे, हमकुं वीसार
न करुणा धाम ॥ मोरी० ॥ १ ॥ जादवपति

अंरति तुम कापी, धारित जगत शंखेश नाम ॥ मोरी० ॥ २ ॥ हम तो काल पंचम वस आये, तुमारो शरण जिनेश नाम ॥ मोरी० ॥ ३ ॥ संयम तप करने शुद्ध शक्ति, न धरुं कर्म ऊकोर पाम ॥ मोरी० ॥ ४ ॥ आनंद रस पूरण सुख देखी, आनंद पूरण आतमराम ॥ मोरी० ॥ ५ ॥



॥ श्रीशंखेश्वरपार्श्वजिनस्तवनम् ॥ ११ ॥

[राग कालींगडो]

पास प्रभुरे तुम हम शिरके मोर ॥ पास० ॥ टेक ॥ जो कोइ सिमरे शंखेश्वर प्रभुरे, फारेगा पाप निचोर ॥ पासप्रभु० ॥ १ ॥ तुं मनमोहन चिद्घन स्वामी रे, साहेब चंद चकोर ॥ पासप्रभु० ॥ २ ॥ त्यूं मन विकसे भविजन केरारे, फारेगा कर्म हींफोर ॥ पासप्रभु० ॥ ३ ॥ तुं मुज सुनेगा दिलकी बातांरे, तारोगे नाथ खरोरे ॥ पासप्रभु०

॥ ४ ॥ तुं मुज आतम आनंद दातारे, ध्याता हुं तुमेरा किशोर ॥ पासप्रभु० ॥ ५ ॥

॥ श्रीशंखेश्वरपार्श्वजिनस्तवनम् ॥ १२ ॥

(राग पंजाबी ठेकानी ठुमरी)

तोरी छबी मनोहारी शंखेश स्याम, नीलांबुजवत तोरे नैन स्याम । तोरी० ॥ आंचली ॥ चंद ज्यूं वदन जगत तम नासे, चरण कमल पंक पखारे नाम ॥ तोरी० ॥ १ ॥ नीलवरण तनु छवि मन मोहे, सोहे त्रिभुवन करुणा धाम ॥ तोरी० ॥ २ ॥ पारस पारस सम करे जनको, हाटक करन तुमारो काम ॥ तोरी० ॥ ३ ॥ अजर अखंडित मंडित निज गुन, ईश निजीत पूरे काम ॥ तोरी० ॥ ४ ॥ अनघ अमल अज चिद्घनरासी, आनंद घन प्रभु आतमराम ॥ तोरी० ॥ ५ ॥

॥ श्रीशंखेश्वरपार्श्वजिनस्तवनम् ॥ १३ ॥

(राग भेरवीमें गझल.)

मुख बोल जरा यह कहदे खरा, तुं और नहीं में और नहीं ॥ मुख० ॥ आंचली ॥ तुं नाथ मेरा में हुं जान तेरी, मुजे क्युं विसराइ जान मेरी ॥ जब करम कटा और भरम फटा ॥ तुं और नहीं० ॥ १ ॥ तुं हे ईश जरा में हुं दास तेरा ॥ मुज क्युं न करो अब नाथ खरा ॥ जब कुमति टरे और सुमति वरे ॥ तुं और नहीं० ॥ २ ॥ तुं हे पास जरा में हुं पास परा ॥ मुजे क्युं न छोडावो पास टरा ॥ जब राग कटे और द्वेष मिटे ॥ तुं और नहीं० ॥ ३ ॥ तुं हे अचरवरा में हुं चलन जरा, मुजे क्युं न बनावो आपसरा ॥ जब होश जरे और सांग टरे ॥ तुं और नहीं० ॥ ४ ॥ तुं हे भूपवरा शंखेश खरा, में तो आतमराम आनंद भरा ॥ तुम दरस करी सब भ्रांति हरी ॥ तुं और नहीं० ॥ ५ ॥

॥ श्रीशंखेश्वरपार्श्वजिनस्तवनम् ॥ १४ ॥

(राग सोरठ.)

लगीलो वामानंदन स्युं । जरम ज्ञंजन तुं ॥ लगीलो० आंकणी । जाय सब धन जाय वामा, प्राण जाय न क्युं । एक जिनजीकी आण मेरे रहोने ज्युंकी त्यूं ॥ लगीलो० ॥ १ ॥ नांहि तप बल नांहि जप बल, शुद्ध समय त्यूं । एक प्रज्रू-जीके चरण शरणां, ज्रांति ज्ञांजी कहपुं ॥ लगीलो० ॥ २ ॥ घट अंदरकी जाने तुं जिन कथन करनेसुं, देख दीन दयाल ॥ मुजको तार जगसें तुं ॥ लगीलो० ॥ ३ ॥ इंद्र चंद्र सुरींद्र पदवी, को न वांछुं हुं । एक तुम दग करुणा जीने, सदा निरखु ज्युं ॥ लगीलो० ॥ ४ ॥ तार आतमराम राजा, मुक्ति रमणि वरुं । श्री शंखेश्वर नाथ जिनवर शुद्धानंद जरुं ॥ लगीलो० ॥ ५ ॥



॥ श्रीफलवर्धिपार्श्वजिनस्तवनम् ॥ १५ ॥

(राग माढ.)

पूजो तो सही मेरा चेतन पूजो तो सही, थे तो फलवर्धी पारसनाथ प्रभुको पूजो तो सही ॥ टेक ॥ अष्टादश दूषण करी वरजित देखो तो सही, टुक स्याम सलूनो रूप आनंद नर जोवो तो सही ॥ १ ॥ परमानंद कंद प्रभु पारस पारस तो सही, तुम निज आतमको कनक करन टुक फरसो तो सही ॥ २ ॥ अजर अमर प्रभु ईश निरंजन अंजन कर्म कही, एतो सेवक मन वंछित सब पूरण अद्भूत कल्प सही ॥ ३ ॥ चंद्र[१] अंक[९] वेद[४] दिव[०] संवत् षष्ठो मैत्र लही, मन हर्ष हर्ष प्रभूके गुण गावत परमानंद लही ॥ ४ ॥

॥ श्रीनवखंडापार्श्वजिनस्तवनम् ॥ १६ ॥

(राग बिहाग)

दायक हे प्रभू पास निरंजन, अंजनतिमिर

मिटाइरी। अनुजूति निज प्रगट जइ है, परमानंद जराइ सखीरी ॥ दायक० ॥ १ ॥ सप्त जंग षट्जंग अजंग, रंगे गुण परजाइरी ॥ चार जंग अरु पक्ष सुज्ञाता, ध्याता शिवसुख पाइ सखीरी ॥ दा० ॥ २ ॥ चार निखेपा नय घन सातो, ज्ञान क्रिया समुदाइरी ॥ तिमिर एकांत मिथ्या मत टारी, अंतर्ज्योति लगाइ सखीरी ॥ दा० ॥ ३ ॥ तुम जाने बिन नाथ निरंजन, काल अनंत गमाइरी ; पर गुण राच रच्यो नट नाटक, नयना मैल जराइ सखीरी ॥ दा० ॥ ४ ॥ तुम अंजनने तिमिर नसायो, दुर्जन पिंथर मिटाइरी ॥ निज स्वरूपके जान जये हम, जिन मिलने मन लाइ सखीरी दा० ॥ ५ ॥ ढुंढत ढुंढत बंदर गोधे विजू, तुम दरसन पाइरी । निर्यामक तुं कांठे मिलियो, अब हम क्या परवाह सखीरी ॥ दा० ॥६॥ इण का-

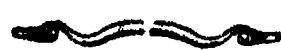
रण तुम ञवोदधि कांठे, बैठे ध्यान लगाइरी।
करुणासिंधु ञवपार करो मुज, चरण सरण तुम आइ सखीरी ॥ दा० ॥ ७ ॥ तुम सम तारक कोइ न दीसे, त्रिभूवन सगरे मांइरी ॥ कौन बैठे ञव सायर तीरे, पास प्रञु विना सांइ सखीरी ॥ दा० ॥ ८ ॥ जयो जिनचंद आनंदके दाता, सगरे काज सराइरी ॥ आतमचंद उद्योत कियो है, ञवोदधि वेग तराइ सखीरी ॥ दा० ॥ ए ॥

॥ श्रीचिंतामणिपार्श्वजिनस्तवनम् ॥ १७ ॥

[चाल सरवणकी]

अब मोहे पार उतार, चिंतामणी. अब मोहे० ॥ रामनगरमंरुण डुःखखंरुण, अवर न कोइ आधार ॥ चिं० ॥ १ ॥ आस पास प्रञु अजित जिनेसर, मुनिसुव्रत चित्त धार । चंद्र प्रञु श्रीवीर जिनेसर, शासनके सिरदार ॥ चिं०॥

२ ॥ एक इहक प्रभु लोह कंकण लइ, नृपति अंग संग कार ॥ वचनयुक्तिसें हैम हुओ है, येह शक्ति संसार ॥ चिं० ॥ ३ ॥ चिंतामणी तुम नाम धरावो, चिंतत किम नही कार ॥ सेवकने विल-विलता देखी, अपना नाम संभार ॥ चिं० ॥४॥ भ्रमत भ्रमत चिंतामणी पायो, रामनगरमें सार । पांच सेवक प्रभु पांच जिनेसर, पंचमी गति द्यो सार ॥ चिं० ॥५॥ संवत भुवन भुवन निधि दधिसुत, आश्विन मास अतिसार ॥ कर्मवाटी प्रतिपदि गुण गाया, कर आतम उद्धार ॥ चिं० ॥ ६ ॥



॥ श्रीपार्श्वजिनस्तवनम् ॥ १० ॥

(राग प्रभाती)

पारस नाथ दया कर मोपर, भवसागरथी पार उतारो ॥ पा० ॥ १ ॥ अवर देव सब त्याग करीने, सरण लियो प्रभु अब में थारो ॥ पा० ॥

२ ॥ काशी देश बनारसी नगरी, जिहां लियो है प्रभु अवतारो ॥ पा० ॥ ३ ॥ अश्वसेन वामाजीके नंदन, भव वन काटनको प्रभु आरो ॥ पा० ॥ ४ ॥ येह संसार पलाल पुंजको, दह करनको अग्निझारो ॥ पा० ॥ ५ ॥ येह संसार विकट अटवीमें, काम क्रोध दुख देते हैं भारो ॥ ६ ॥ सरण लियो सुत अश्वसेनको, कर प्रभू आतम अब उद्धारो ॥ पा० ॥ ७ ॥



॥ श्रीपार्श्वजिनस्तवनम् ॥ १९ ॥

(राग भैरवी)

नीलवरण प्रभु पासजी विराजे, दरसनथी दुःख भाजेरे ॥ नील० ॥ टेक ॥ जो जात्री प्रभु दरसन पावे, फिर मनसें नहीं जावेरे । दरस अपूरव कर कर प्राणी, पाप नाश कर जावेरे ॥ नी० ॥ १ ॥ चार खूंट फिर सब जग जोया,

दरस ऐसा नहीं होयारे। दाशरथीपुर नीलवपु जिन, मल मेरा सब धोयारे ॥ नी० ॥ २ ॥ जो प्रभुजीका दरस करे नित, नूतन रूप दिखावेरे। नूतन रूपको फल है येही, रूप नवीन फुरावेरे ॥ नी० ॥ ३ ॥ चित्त एकागर कर कर कोइ, दरस प्रभु तन पावेरे। ते रजनी सुपनामें देखे, फेर जनम नही आवेरे ॥ नी० ॥ ४ ॥ कर उपर कर प्रभुजी बिराजे, सूचन ध्यान पतावेरे। तीन छत्र प्रभु कंपर कहकर, त्रिभुवन स्वामी जनावेरे ॥ नी० ॥ ५ ॥ चामर कहत है नीचै फूक कर, ऊर्ध्वगति तुम जावेरे। जामंमल पूठे प्रभु दरसन, तम मिथ्यात गमावेरे॥नी०॥६॥ अयुत जोजन ध्वज आगल प्रभुके, तिस उपर कर साखारे। जिष्णु छदमथी एम कहत है, स्वामी इक जग ताजारे ॥ नी० ॥ ७ ॥ जिनवरकी सेवामें नित, गंभु श्रावक राच्यारे। आतम लिप्स पूरण कीजो, मोक्ष मारग एक जाच्यारे ॥ नी० ॥ ८ ॥

॥ श्रीपार्श्वजिनस्तवनम् ॥ २० ॥

पास जिनंद निहार हो, तुं त्रिभुवन त्राता ॥ टेक ॥ तुम दरसनसें अजर अमर हो, निरंजन निराकार हो ॥ तुं० ॥ १ ॥ अवर देव नीके कर देखे, पेखे सर्व विकार हो ॥ तुं० ॥ २ ॥ अब मोहे तारो ढील न कीजो, आतम आनंद कार हो ॥ तुं० ॥ ३ ॥

॥ श्रीपार्श्वजिनस्तवनम् ॥ २१ ॥

(राग दादरो)

बढ्योजी मम भाग बढयोजी मम भाग निरखी जिन बिंबको बढयोजी ॥ टेक ॥ मिट गइ फिकरी करम अघ आज, जिनँद जस अखीयां जगत सिर ताज ॥ ब० ॥ १ ॥ सटक गइ ममता कुगुरु भइ लाज, पाखंड गढ खंडनी जिनंद किरपाज ॥ ब० ॥ २ ॥ भटक मरी जडता

आनंद खिरयो आज, जिनंद वामानंदको आ-
तम जग राज ॥ व० ॥ ३ ॥

॥ श्रीपार्श्वजिनस्तवनम् ॥ २२ ॥

(राग दादरो.)

करोजी भरपूर करोजी भरपूर, आनंद सुख-
कंदको करोजी ॥ टेक ॥ वामाजीके नंदा करम
दल चूर, दया दिल रखीया कुगति करो दूर ॥
क० ॥ १ ॥ सरण तुम लीनो काटोजी जव मूर,
खूलेजी मोरी अखीयां जगत जैसें सूर ॥ क०
॥ २ ॥ सफल जइ चिंता भयोंजी सुख पूर, आ-
नंद दिल रखीया तिमिर हरो दूर ॥ क० ॥ ३ ॥



॥ श्रीपार्श्वजिनस्तवनम् ॥ २३ ॥

॥ राग ठुमरी ॥

में देखा चिदघन पारसको मेरे काज सरे

सब आजजी ॥ में० टेक ॥ नीलवरण तनु सुर
नर मोहे, शांति वदन सुख साजजी ॥ में० ॥१॥
अष्टादश दूषण गए दूरे, सारे जक्त सब काजजी
॥ में० ॥ २ ॥ चंदवदन छबि जन मन मोहे, तुं
त्रिभुवन सिर ताजजी ॥ में० ॥ ३ ॥ जनम जनममें
तुम पद सेवुं, एही आतमराजजी ॥ में० ॥ ४ ॥

॥ श्रीपार्श्वजिनस्तवन ॥ २४ ॥

(राग अंग्रेजी बाजेकी चाल)

आनंद तेरे दर्शका जिनराज मानुं हुं ॥
आ० ॥ टेक ॥ तुंही आनंदकंदका है तार जानुं
हुं, अवर देव देखीये विशेषीयेजी तुं ॥ आ०
॥ १ ॥ मुजे करो अमार तार मार जार तुं, तुंही
जो आज भेटीयो चमेटीयोजी तुं ॥ आ० ॥ २ ॥
आत्मा आनंद चंद फंद फार तुं, मुज एक रुप
कीजीए दातार पास तुं ॥ आ० ॥ ३ ॥

॥ श्रीपार्श्वजिनस्तवनम् ॥ २५ ॥

(राग ध्रुपद)

(आई इंद्र नार ॥ देशी ॥)

सब करम जार, जिन सरन धार, तुम नाम सार, जवी सरत कार, अनुजव आधार, समय-तरस जीनो. ॥ स० ॥ १ ॥ जवोदधि अपार, करतार तार, जग सत्थवाह, सब जग आधार, तुंही पास नाथ, अजरामर कीनो ॥ स० ॥ २ ॥ सब मेट सोग, सब विषय जोग, कर आज योग, मिटे मनका रोग, तुम नाम लेत, मोह जट जय कीनो ॥ स० ॥ ३ ॥ मम सर्यो काम, तुम चरन पाम, तुम धर्यो ध्यान, गयो पाप नाम, आतम आनंद, दरसन कर लीनो ॥ स० ॥ ४ ॥

॥ श्रीपार्श्वजिनस्तवनम् ॥ २६ ॥

[राग प्रभाति]

थोमीसी जिंदगी सुपनसी माया, इनमें क्यों

मुरझायाहै रे ॥ थो० ॥ टेक ॥ तन धन जोबन
बिनकर्में विनसे, जिस पर मन रिझायाहै रे
॥ थो० ॥ १ ॥ गरव जार जगमें न समाते,
बादर जिम विरलायाहै रे ॥ थो० ॥ २ ॥ नज
प्रभु पास देवनके देवा, आतम अविचल माया
है रे ॥ थो० ॥ ३ ॥

॥ श्रीपार्श्वजिनस्तवनम् ॥ २३ ॥

(पालना गडल्यारे बढइया, ए देशी ॥)

पालने जिन पास पोढइया ॥ टेक ॥ सुरपति
मिल सब देत हलोरी, हरषी वामादेवी
मइया ॥ पा० ॥ १ ॥ इंद्राणी मिल मंगल
गावे, नाच करे तात थइया ॥ पा० ॥ २ ॥ तुं
मेरा लाला जग सब व्हाला, फिर फिर मुख
मटकइया ॥ पा० ॥ ३ ॥ आतम कल्पतरु जग
प्रगटयो, दीठा आनंद लइया ॥ पा० ॥ ४ ॥

॥ श्रीपार्श्वजिनस्तवनम् ॥ २८ ॥

(राग मराठी)

अर्हन पदको भजके चेतन, निज स्वरुपमें रम रहीये; तुम अकल सरूपी, झोरुके परगुन निज सत्ता लहीये ॥ अ० ॥ १ ॥ भेदानंद. अजर अविनाशी, रूप रंग विना तुमे कहीये; निज रंग रंगीला, झोरुके लीला निज गुनमे रहीये अ० ॥ २ ॥ संध्या रंग अनंग संग त्यूं, जोवन तन धन क्यों गहीये। क्यों भरम भूलाने, सुपनसी माया इसमें ना वहीये ॥ अ० ॥ ३ ॥ आतम घटमें खोज पियारे, बाहिर भटकते ना रहीये। गरुबरु सब त्यागी, पासके चरण कमलमें जा रहीये ॥ अ० ॥ ४ ॥



॥ श्रीपार्श्वजिनस्तवनम् ॥ २९ ॥

(राग बिहाग.)

सिमर सिमररे सुज्ञानी जिनंद पद० ॥ टेक ॥

अजर अमर सब अलख निरंजन, जंजन कर्म कहानी ॥ जि० ॥ १ ॥ चिदानंद घन अजर अमूरत, सुरत त्रिजुवन मानी ॥ जि० ॥ २ ॥ शांति सुधारस जिनवर पारस, आरस लोक निशानी ॥ जि० ॥ ३ ॥ कोटला नगरे बिंब बिराजे, आतम अनुजव दानी ॥ जि० ॥ ४ ॥

॥ श्रीपार्श्वजिनस्तवनम् ॥ ३० ॥

(राग इमन अथवा पीलु.)

तोरी सूरतिकी जाउं बलिहारी, मानुं बबि समता मतवारी ॥ तो० ॥ टेक ॥ समतारस जरे नयन कचोले, अमृत रस वरसे दृग तारी । शांत वदन जविजन मन मोहे, सोहे आनंदरस करतारी ॥ तो० ॥ १ ॥ काम मदन जामिनी संग नाही, शस्त्ररहित नहीं द्वेष विकारी । समरस मगन मगन निजरूपे,

सब देवनकी छबि मदहारी॥ तो० ॥ २ ॥ ध्यान मगन कर उपर करारी, पद्मासन विपदा सब गारी। पूरण ब्रह्म आनंद घन स्वामी, नामी नाम रटे अघ टारी ॥ तो० ॥ ३ ॥ शांतरसमय मूरति राजे, निरविकार समतारस जारी ॥ तीन भुवनके देवनकी छबि, तनकही तैसो रूप न धारी ॥ तो० ॥ ४ ॥ तीनोही देव अनंग सुभटनें, वश कीने शक्ति सब जारी ॥ आतम आनंद निज रस राची, पारसनाथकी हुं बलिहारी ॥तो० ॥५॥इति॥ ॥ इति श्रीपार्श्वनाथ जिन स्तवनानि संपूर्णानि॥



॥ अथश्रीमहावीरजिनस्तवनम् ॥ १ ॥

(राग आइ वसंत.)

वीर जिनंद कृपाल हो, तुं मुज मन भाया ॥ टेक ॥ तेरे बिन कौन अधम उद्धारण, वारण

मिथ्या जाल हो ॥ तुं मुज ॥१॥ वचन सुधारस तुम जग प्रगटे, गटके भविजन लाल हो ॥ तुं मुज० ॥ २ ॥ आतम आनंदरस भर लीनो, अजर अमर अकाल हो ॥ तुं मुज० ॥ ३ ॥

॥ श्रीमहावीरजिनस्तवनम् ॥ २ ॥

चलो भाई चलके देखावे, आज प्रभु वीर दरस पावे ॥ टेक ॥ कुंदनपुर महाराज बिराजे, महिमा जस गावे ॥ चलो० ॥१॥ त्रिशलानंदन सुरतरू जगमें, वांछित फल पावे ॥ चलो० ॥२॥ मन वचतनुसें भक्ति करत जो, अमरापुर जावे ॥ चलो० ॥ ३ ॥ जन्म कल्याणक प्रभुको प्रगट्यो, आतम जस गावे ॥ चलो० ॥ ४ ॥



॥ श्रीमहावीरजिनस्तवनम् ॥ ३ ॥

चलो भाई तुमको ले जावे, जिहां प्रभु वीर दरस पावे ॥ टेक ॥ पावापुर महावीर बिराजे, सुर नर जस गावे ॥ चलो० ॥१॥ पाडल केतकी दमन मरुवा, चंबा चुन लावे ॥ चलो ॥२॥ मदन ताप सब दूर करनको, पूजी सुख पावे ॥ चलो० ॥ ३ ॥ आतम आनंद मुक्ति कल्याणक, जय जयकार थावे ॥ चलो० ॥ ४ ॥



॥ श्री महावीर जिन स्तवनम् ॥ ४ ॥

अथ श्री महावीर पालना [चाल होरी]

त्रिशलादे गोद खिलावे बे ॥ टेक ॥ वीर जिनंद जगत किरपाल, तेराही दरस सुहावे बे ॥ त्रि० ॥ १ ॥ आ मेरे लाला त्रिभुवन लाला, ठुमक ठुमक चल आवे बे ॥ त्रि० ॥ २ ॥

पालने पोढयो त्रिजुवन नायक, फिर फिर कंठ लगावे हे ॥ त्रि० ॥ ३ ॥ आवो सखी मुज नंदन देखो, जगत उद्योत करावे हे ॥ त्रि० ॥ ४ ॥ आतम अनुजव रसके दाता, चरण सरण तुम जावे हे ॥ त्रि० ॥ ५ ॥

॥ श्रीमहावीरजिनस्तवनम् ॥ ५ ॥

(राग ठुमरी.)

चलो जविजन जिन वंदनको, जिहां वीर जिनंद मुगति वरीयारे ॥ टेक ॥ पावापुरीमें जिनजी बिराजे, नाथ निरंजन सुख करीयारे ॥ च० ॥ १ ॥ चरम चौमासा करी जिनवरने, गौतम केवलपद वरीयारे ॥ च० ॥ २ ॥ आनंद मंगल प्रजुजीके नामे, आतम अनुजव जव तरीयारे ॥ च० ॥ ३ ॥

॥ श्रीमहावीरजिनस्तवनम् ॥ ६ ॥

(राग अंग्रेजीवाजेकी चाल)

जिनंद चंद देखके आनंद भयो हुं ॥ टेक ॥ तुंही कलंक पंकको निपंक कार तुं, बंध कर्म धंधको विकार कार तुं ॥ जि० ॥ १ ॥ दासको निहार तार वीर नाथ तुं, रंग भंग मोहको विरंग जार तुं ॥ जि० ॥ २ ॥ निरख तात रैन रैन नाथ साथ तुं, तेरेही दर्श परसको आनंद मानुं हुं ॥ जि० ॥३॥ सूर नूर रंगको अनंगकार तुं, आंतम आनंद रंग राज आज हुं जि० ॥४॥



॥ श्रीमहावीरजिनस्तवनः ॥ ७ ॥

(राग बिहाग)

युं सिमरोरे सुज्ञानी, जिनंद पद ॥ टेक ॥ वदन चंद ज्युं शीतल सोहे, अमृत रसमयी

वानी ॥ जि० ॥ १ ॥ चिदानंद घन अजर अमर तुं, ज्योतिमें ज्योति समानी ॥ जि० ॥ ॥ श्रेणिक नरपति पदकज सेवी, जिनवर पद उपजानी ॥ जि० ॥ ३ ॥ आतम आनंद मंगल-माला, अजर अमर पद खानी ॥ जि० ॥ ४ ॥



॥ श्रीमहावीरजिनस्तवनम् ॥ ७ ॥

(राग माढ)

प्रीत लागी रे जिनंदशुं प्रीत लागी रे ॥ आंचली ॥ जैसे धेनु वन फिरेरे, मन वछरे केरे मांह । चरण कमल त्यूं वीर केरे, छिनकही विसरत नाह ॥ जिनंद० ॥ १ ॥ विंध्याचल रेवा नदी रे, गज वर झूलत नाह ॥ मनमोहन तुम मूरति रे, सिमरत मिटे दुःख दाह ॥ जिनंद० ॥ २ ॥ तें तार्यो प्रजु मोहको रे, हरि जवसागर पीर ॥ ज्ञान नयन मुजे तें दीये रे, करुणा रस-

मय वीर ॥ जिनंद० ॥ ३ ॥ कोमि वदन कोमि जीजसें रे, कोमि सागर पर्यंत । गुन गाउं तेरे जक्तिशुं रे, तो तुम रिणको न अंत ॥ जिनंद० ॥ ४ ॥ कदि एक दिन मुज आवशे रे, निरखुं तेरो रे रूप । मो मन आशा तो फलेरे, फिर न परुं जव कूप ॥ जिनंद० ॥ ५ ॥ चरण कमलकी रेणुमें रे, हुं लोटूं जगदीश । अंश न ढोडूं तव लगेरे, न करे निज सम ईश ॥ जिनंद० ॥६॥ आतमराम तुं माहरो रे, त्रिसला नंदन वीर । ज्ञानदिवाकर जग जयो रे, जंजन पर डुःख जीर ॥ जिनंद० ॥७॥



॥ श्री महावीरजिनस्तवनम् ॥ ए ॥

(राग रामकली)

तेरो दरस मन जायो चरम जिन तेरो ॥ आंचली ॥ तुं प्रज्जु करुणा रसमय स्वामी, गर्जमें

सोग मिटायो ॥ त्रिसला माताको आनंद दीनो, ज्ञात नंदन जग गायो ॥ चरम० ॥ १ ॥ वरसी दान दे रोरता वारी, संयम राज्य उपायो। दीन हीनता कबुय न तेरे, सतचिद् आनंद रायो ॥ चरम० ॥ २ ॥ करुणा मंथर नयने निरखी, चंम कौशिक सुख दायो, आनंदरस नर सरग पहुंतो, एसा कौन करायो ॥ चरम० ॥ ३ ॥ रतन कंबल द्विजवरको दीनो, गोशालक उधरायो ॥ जमाली पन्नर नव अंते, महानंद पद गायो ॥ चरम० ॥ ४ ॥ मत्सरी गौतमको गणधारी, शासन नायक ठायो । तेरे अवदात गिनुं जग केते, करुणासिंधु सुहायो ॥ चरम० ॥ ५ ॥ हुं बालक शरणागत तेरो, मुजको क्युं विसरायो। तेरे विरहसे हुं दुःख पासुं, कर मुज आतम रायो ॥ चरम० ॥ ६ ॥

॥ श्रीमहावीरजिनस्तवनम् ॥ १० ॥

(राग वसंत सिंध काफी)

वीर प्रज्ञु मन भायोरे मेरे भवदुःख टारे ॥ वीर० ॥ आंचली ॥ देशना अमृत रस जरी नाकी, जवजव ताप मिटायो । शोल पहोर लग दे जिनव जी, करुणासिंधु सुहायोरे ॥ मे० ॥१॥ पचपन सुन्न फल पचपन इतरे, यही अध्ययन सुनायो । ठत्रीस विन पूछे प्रश्नोंका, उत्तर कथन करायोरे ॥ मे० ॥ २ ॥ एक अध्ययनही नाम प्रधाने, कथन करत महारायो । महानंद पद जग गुरु पायो, जय जयकार करायोरे ॥ मे० ॥ ३॥ कल्याणक निर्वाण महोच्छव, कार्त्तिकमांवास ठायो । चउसठ सुरपति सोग करतहे, जरत तरणि ठिपायो रे ॥ मे० ॥ ४॥ गौतम देवशरमा प्रतिबोधी, सुन मनमें गन्नरायो । वर्धमान मुजे ठोरु जगतमें, एको ही मोक्ष सिधायो रे ॥ मे० ॥५॥

कोण आगल हुं प्रश्न करशुं, उत्तर कोन सुनायो।
कुमति उल्लुक बोलेंगे अधुना, अंधकार जग
छायो रे ॥ मे० ॥ ६ ॥ तुं नहीं किसका को नहीं
तेरा, तुं निज आतमरायो ॥ इम चिंतत ही केवल
पायो, जय जय मंगल गायो रे ॥ मे० ॥ ७ ॥

॥ श्रीमहावीरजिनस्तवनम् ॥ ११ ॥

(राग–सोरठ)

वीर जिने दीनो मांने एक जरी, [1]एक
भुजंग [2]पंचविश नागन, सुंघत तुरत मरी ॥ आं-
चली ॥ कुमति कुटल अनादिकी वैरन, देखत
तुरत डरी, [3]चारो ही दासी पूत भयंकर, हुए
भसम जरी ॥ वीर० ॥ १ ॥ [4]बावीस कुमति पूत
हठिले, नाठे मदसें गरी । [5]दोउ सुभट जर
मूलसें नासे, बुट्यो [6]मदन मरी ॥ वीर० ॥ २ ॥

१ मिथ्यात्व, २ किरिया, ३ कषाय, ४ परीषह, ५ राग-
द्वेष, ६ कामदेव.

महानंद रस चाखत पायो, तन मन दाह ठरी ।
अजरामर पद संग सुहायो, भव भव ताप हरी ॥
वीर० ॥ ३ ॥ सिव वधु वसी करणको नीकी,
तीनो रत्न धरी । आतम आनंद रसकी दाता,
वीर प्रभु दान करी ॥ वीर० ॥ ४ ॥

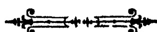


॥ श्रीमहावीरजिनस्तवनम्॥ १२ ॥

(राग–श्री)

वीर जिन दर्शन नयनानंद, वीर जिन० ॥
चंद्र वदन मुख तिमिर हरे जग, करुणा रस
दृग भरै मकरंद । नीलांबुज देखी मन मधुकर,
गूंजे तूंहो तूंही नाद करंद ॥ वीर जिन० ॥ १ ॥
कनक वरण तनु भवि मन मोहे, सोहे जीते
सुर गन वृंद । मुखथी अमृत रस कस पीके,
शीखी वत भवि जन नाच करंद ॥ वीर जिन०
॥ २ ॥ तपत मिटी तुम वचनामृतसे, नासे ज-

न्म मरण दुःख फंद । अब परे तुम दरस करीने, प्रतक्ष मानुं हुं जिन चंद ॥ वीर जिन० ॥३॥ अरज करतहुं सुन जयरंजन, रंजन निज गुन कर सुखकंद । त्रिशला नंदन जगत जयंकर, कृपा करो मुज आतम चंद ॥ वीर जिन० ॥४॥



॥ श्रीमहावीरजिनस्तवनम् ॥ १३ ॥

॥ राग बसंत सिंध काफी ॥

रे सुन वीर जिनंदा, चरण शरण ल्युं तेरा ॥ सुन० ॥ काम क्रोध मद राग अज्ञाना, लोभ द्वेष मोह चेरा । माया कुरांडी मदयुत सांडी, इन दिनों मुजे घेरारे ॥ सुन० ॥ १ ॥ मन वचन तनुसें करत आकर्षन, वाम रस नेरा । सब धन दाहे अकर रोगको, रंजित पर गुण केरारे ॥ सुन० ॥ २ ॥ संका कंखा भ्रांति बढावे, ममता आश घनेरा । अप्रीति करे छिनकमें जनको, दीयो

गति चार बसेरा रे ॥ सुन० ॥ ३ ॥ चारित्र रा-
जको त्रास दीये नितु, निज गुन दावे मेरा ॥
सद् आगम संतोष सुरंगा, सम्यग दरसन मेरा
रे ॥ सुन० ॥ ४ ॥ हुकम करो करें सांनिध मेरी,
नासे भरम अंधेरा । आतम आनंद मंगल दीजे,
हुं जिन बालक तेरा रे ॥ सुन० ॥ ५ ॥

॥ श्रीमहावीरजिनस्तवनम् ॥ १४ ॥

(राग गोडी.)

वीर जिनेश्वर स्वामी आनंद कर । वीर० ॥
मो मन तुम बिन कितही न लागे ॥ ज्युं भा-
मनी वश कामी ॥ आ० ॥ १ ॥ पतित उधारण
बिरुद तिहारो । करुणारस मय नामी ॥ आ०
॥ २ ॥ अन्य देव बहु विधि कर सेवे । कबुय नहीं
हुं पामी ॥ आ० ॥ ३ ॥ चिंतामणि सुरतरु तुम
सेवी । मिथ्या कुमतकुं वामी ॥ आ० ॥ ४ ॥

जन्म जन्म तुम पद कज सेवा। चाहुं मन विसरामी ॥ आ० ॥ ५ ॥ रंभा रमण सुरिंद पद चक्रि। वांछुं हुं नहीं निकामी॥आ०॥६॥आतमाराम आनंद रस पूरण। दे दरसण सुख धामो॥आ०॥७॥



॥ श्रीमहावीरजिनस्तवनम् ॥ १५ ॥

॥ राग पंजाबी ठेकानी ठुमरी ॥

मैरी सैया ॅ नजर कर वर्धमान । तुं साचो वीर करुणानिधान । मैरी सैयां ॥ आंकणी ॥ तेरेहि चरण कमलको मधुकर। वीर वीर मुख रटित नाम ॥ मैरी सैयां० ॥ १ ॥ तुम विरहो दुःखम पुन आरो । मन बल दुर्बल तनुकताम ॥ मैरी सैयां० ॥ २ ॥ उत्तराध्ययनमें तुम वच राजे। तेही आलंबन चितमें ठाम ॥ मैरी सैयां० ॥ ३ ॥ तुम बिन कौन करे मुज करुणा। विनती सीकारो करु-

णाधाम ॥मेरी सैयां०॥४॥ करुणादृग जरी तनु कंज निरखो। पामुं पद जीम आतमराम ॥मेरी सैयां०॥५॥



॥ श्रीमहावीरजिनस्तवनम् ॥ १६ ॥

(राग भोपाली ताल दीपचंदी.)

इतनुं मागुंरे देवा इतनुं मागुंरे, जव जव चरण शरण तुम केरो ॥ इतनुं० ॥ आंचली ॥ सिधारथ नृप नंदन केरो, त्रिशला माता आनंद वधेरो। ज्ञातनंदन प्रभु त्रिजुवन मोहे, सोहे हरित जव फेरोरे॥ इतनुं० ॥ १ ॥ दीनदयाल करुणानिधि स्वामी, वर्धमान महावीर जलेरो ॥ श्रमण सुहंकर दुःखहर नामी । आर्यपुत्र प्रभु जूत दलेरो ॥ इतनुं० ॥ २ ॥ तेरेहि नामसें हुं ... भाता, स्मरण करत आनंद जरेरो । तेरे जरोसें ही प्रीति नीवारी, आनंद मंगल तुमही

खेरेरो ॥ इतनुं० ॥ ३ ॥ पूरण पुण्य उदय करी सामी, शासन तुमरो नाश अंधेरो । जयो जगदीश्वर वीर जिनेश्वर । तुं मुज ईश्वर हुं तुम चेरो ॥ इतनुं० ॥ ४ ॥ आतमराम आणंद रस पूरण, मूरंण करम कलंक ठगेरो । शासन तेरो जग जयवंतो, सेवक वंदित निशदिन तेरो ॥ इतनु० ॥ ५ ॥



॥ श्रीमहावीरजिनस्तवनम् ॥ १७ ॥

(राग भोपाली ताल जलद एक ताल.)

नाचत सुर पठित छंद मंगल गुनगारी. । नाचत ॥ आंचली ॥ सुर सुंदरी कर संकेत, पिकधुनी मील भ्रमरी देत, रमक ठमक मधुरी तान, घुंघरु धुनिकारी ॥नाचत०॥१॥ जय जिनंद, शिशिरचंद, भवि चकोर मोद कंद, काम वाम भ्रम निकंद, सवेक तम वारी ॥नाचत० ॥२॥ धूंधूं धप तार चंग, खुखुरु घुटट जलतरंग, वेणु वीणा तार रंग, जय

जय अघटारी ॥ नाचत० ॥३॥ सिरि सिद्धारथ नृप नंद, वर्धमान जिन दिनंद, मध्यमा नगरी सुरींद, करे उछव मनहारी ॥ नाचत० ॥४॥ गौतम मुख मुनिवरिंद, तार भ्रम काट फंद, आतम आनंद चंद, जय जय शिव चारी॥ नाचत० ॥ ५ ॥

॥ इतिश्री महावीर जिन स्तवनानि संपूर्णानि॥



॥ अथश्रीहस्तिनापुरस्तवनम् ॥

॥ देशी, रासधारीकी ॥ कान्हा में नही रेहनारे, तुम चेरे संग चलूं ॥ यह चाल ॥ प्रभु अविचल ज्योति रे, निज गुण रंग रली ॥ टेक ॥ प्रभु त्रिभुवन चंदा रे, तामस दूर टली ॥ प्र० ॥ १ ॥ जग शांतिके दाता रे, अघ सब दूर दली ॥ प्र० ॥ २ ॥ प्रभु दीन दयाला रे, अब मुज आश फली ॥ प्र० ॥ ३ ॥ प्रभु चार कल्यानक रे, विपदा दूर टली ॥ प्र० ॥ ४ ॥

जिन गर्भ कल्यानक रे, जनम जिन दीक्षा थली ॥ प्र० ॥ ५ ॥ शांति कुंथु जिनंदा रे, अर जिननाथ वली ॥ प्र० ॥ ६ ॥ एह तीरथ नूमि रे, पूरण पुण्ये मिली ॥ प्र० ॥ ७ ॥ हस्तिनापुर आया रे, दिल्लीसे संघ चली ॥ प्र० ॥ ८ ॥ प्रनु संमेतशिखरे रे, ज्योतिमें ज्योति मिली ॥ प्र० ॥ ॥ ए ॥ अंक गुण निधि इंदु रे (१ए३ए), अमावस पोष फली ॥ प्र० ॥ १० ॥ प्रनु आतमानंदी रे, विकसित चंप कली ॥ प्र० ॥ ११ ॥

॥ श्री राधनपुरे बिराजमान चउवीस जिन साधारण स्तवनम् ॥

(राग ठुमरी.)

जिनंदा तोरे चरण कमलको रे। हुं नक्ति करुं मन रंगे, ज्युं कर्म सुनट सब नंगे, हुं बेसुं शिवपुर ढंगे ॥ जिनंदा० ॥ आदि जिन स्वामी रे,

तुं अंतरजामी रे, प्रनु शांतिनाथ जिनचंदा, तुं अजर अमर सुखकंदा, तुं नान्निराय कुल नंदा ॥ जिनंदा० ॥ १ ॥ चिंतामणि नामेरे, वंछित धामे रे, जिन शांति शांति करतारा, पाम्यो नव जलधि पारा, तुं धर्मनाथ सुखकारा ॥ जिनंदा० ॥ २ ॥ शांति जिन तारो रे, बिरुद तिहारो रे, चिंतामणि जगमें जाचो, कल्याण पास जगसाचो, तुम पास सामले राचो ॥ जिनंदा० ॥ ३ ॥ सहस्र फण सोहे रे, मोहन मन मोहे रे, गोमी जिन शरण तुमारी, तुं धर्मनाथ जयकारी, तुं अजित अचर सुखकारी ॥ जिनंदा० ॥ ४ ॥ कुंथुजिनराजारे, वासुपूज्य ताजा रे, वागे जग ऊंका तेरा, तुं महावीर गुरु मेरा, हुं बालक चेरा तेरा ॥ जिनंदा० ॥ ५ ॥ कुंथु जिनचंदा रे, विमल सुखकंदा रे, शीतलकी हुं बलिहारी, नेमीश्वर राजुल तारी, श्रीमंदिर आनंदकारी ॥ जिनंदा० ॥ ६ ॥ वीरजिन दाता रे, करो मुज शाता रे, प्रनु तुं

तारक मुज केरा, करुणानिधि स्वामी मेरा, हुं शासन मानुं तेरा ॥ जिनंदा० ॥ ७ ॥ शरणागत तोरी रे, नहीं अन्य मति मोरी रे, तुम नाम-तणा आधारा, तुम सिमर सिमर सिरिकारा, तुम वीरहो दुःखम आरा ॥ जिनंदा० ॥ ८ ॥ संव मन हरना रे, अक्षय निधि जरना रे, नायक श्री मूल जिनंदा, राधणपुर नगर सुहंदा, सहु संघने मोद करंदा ॥ जिनंदा० ॥ ९ ॥ राधणपुर वासो रे, मास चार रही खासो रे, सहु संघ मने आनंदी, जव ज्रांती सब ही नीकंदी, चउवीसें जिन-वर वंदी । जिनंदा० ॥ १० ॥ अंबुनिधि वेदारे, अंक इंदु निखेदारे, संवत आयो सुखकारी, द्वात्रिंशती मुनि मनोहारी, सहु निज आतम हितकारी । जिनंदा० ११ ।

॥ इति समाप्तानि श्री ऋषजादिजिनस्तवनानि ॥

॥ अथश्री तीर्थवंदनम् ॥

विहरमान जिनंद वंडुं उदित केवल जास्करं,

असंख लोक निवास प्रभुना शाश्वता अघ नास्करं। अष्टापदे सम्मेत चंपा नेम गढ गिरि मंडना, श्री वीर पावा विमल गिरिवर केसरा दुःख खंडना ॥१॥ आबु तरंगा दरस चंगा शिव अनंगा कारणा, श्री अंतरिक्ष जिनंद पारस थंभणा दुःख वारणा। संखेसरा अलवेसरा जग पावना जीराववा, चिंतामणि फलवार्ध पारस मल्लि नवदधि नाव्वा ॥ २॥ वरकाण राण नाकोल नगरे वीर घाणे गोडीए, श्री नाडुलाइसु वीर राता वंदीए नव तोडीए । श्री पाली पाटण राजनगरे घनोघ मंडन पासजी, इम जेह थानक चैत्य जिनवर नविक पूरे आसजी ॥३॥ सहु साधु गणधर केवली फुन संघ नव जल तारणा, सुध ज्ञान दरसन चरण साचा महानंद कारणा । यह तीर्थ वंदन नव निकंदन नविक शुध मन कीजीए, निज रूप धारो नरम फारो अनघ आतम लीजीए ॥ ४ ॥

॥ इति समाप्तं श्री तीर्थवंदनम् ॥



(न्यायाम्भोनिधिश्रीमद्विजयानंदसूरिवरविरचिता.)

अथ द्वादश भावना।

॥ तत्र प्रथमा अनित्यभावना ॥

योवन धन थीर नही रेहना रे ॥ आंचली ॥
प्रात समय जो नजरे आवे, मध्य दीने नहीं दीसे। जो मध्याने सो नहीं रात्रे, क्यों विरथा मन हींसे ॥ योवन० ॥ १ ॥ पवन झकोरे बादल बिनसे, त्युं शरीर तुम नासे। लच्छी जल तरंगवत चपला, क्यों बांधे मन आसे॥ योवन० ॥ २ ॥ वल्लभ संग सुपनसी माया, इनमें राग हि कैसा। छिनमें उडे अर्क तूल ज्युं, योवन जगमें ऐसा ॥ योवन० ॥ ३ ॥ चक्री हरि पुरंदर राजे, मद माते रस मोहे। कौन देशमें मरी पहुंते। तिनकी खबर न कोहे ॥ योवन० ॥ ४ ॥ जग मायामें नहीं लोभावे, आतम-

राम सयाने । अजर अमर तुं सदा नित्य है, जिन धुनि यह सुनी काने ॥ योवन० ॥ ५ ॥



॥ अथ दूसरी अशरणजावना ॥

(राग मराठी)

अपने पदको तज कर चेतन, परमें फसना ना चाइये ॥ ए देशी ॥

निज स्वरूप जाने बिन चेतन, जगमें नहीं कोइ है सरना । क्यों जरम जूलाना, जान निज रूप आनंद रस घट जरना ॥ निज० ॥ १ ॥ इंद्र उपेंद्र आदि सब राने, बिना सरन यममुख परना । अति रोग जराये, जीवकी कौन करे जगमें करुणा ॥ निज० ॥ २ ॥ मात पिता स्वसु भ्रात पुत्रके, देखत ही यम ले चलना । मुख वाय रहेंमे, सरणा नहीं तिननें को करना ॥ निज० ॥ ३ ॥ मृतक देखी सोच करे मन, अपना सोच नहीं करना ।

इंढ मूरख तुं रे, करम की गतिसे सहु जगमें फो-
रना ॥ निज० ॥४॥ जगवन दुःख दावानल दहके,
हिरन पोतकों को सरना । तिम सरण विना तुं,
मोहसे पाप पिंडकों क्यों जरना ॥ निज ॥ ५ ॥
हरि विरंचि ईश नहीं त्राते, आपही तिनकों क्यों
मरना । जिन वचन हि साचे, जीवना जितना
ही आयु धरना ॥ निज० ॥ ६ ॥ आतमराम तुं
समज सयाने, ले जिनवरवचका सरना । ममता
मत कीजे, नहीं तेरी मेरी में तें परना ॥ निज०॥७॥

॥ अथ तृतीयसंसारजावना ॥

॥ राग सोरठ ॥

(कुबजाने जादु डारा, ए देशी)

उरझायो आतम ज्ञानी, संसार दुखांको खानी
॥ उरंझायो० ॥ आंचली ॥ वेद पाठी मरी पा-
णज होवे, स्वामी सेवक पामी । ब्रह्मा कीट हूज-

वर रासज, नृपवर नरक ही गामी ॥ जर० ॥ १ ॥
सुरवर खर खर जगपति होवे, रंक राज त्रिसरामो।
जगनाटकमें नटवत नाच्यो, कर नानाविध तानी
॥ जर० ॥२॥ कौन गतिमें जीव न जावे, ठोरे नहीं
कुण थानी। संसारी कर्म संगथी पूर्यो, कचवर कुटी
जगनामी ॥ जर० ॥ ३ ॥ एक प्रदेश नहीं जग
खाली, जनम मरण नहीं ठानी। पवन झकोरे पत्र
गगन ज्युं, जमत फिरे जम कामी ॥ जर० ॥४॥
सतचित आनंद रूप संजारा, ठारो कुमत कुरानी।
जिनवरजाषित मग चल चेतन, तो तुम आतम-
ज्ञानी ॥ जर० ॥ ५ ॥

॥ अथ चतुर्थ एकत्व जावना ॥

(राग वढंस)

तुम क्यों जूल परे ममतामें, या जगमें कहो
कोन हे तेरा ॥ तुम० ॥ आंचली ॥ आया एक ही

एकही जावे,साथी नहीं जग सुपन वसेरो। एक ही सुख दुःख जोगवे प्राणी,संचित जो जन्मांतर केरो ॥तुम० ॥१॥ धन संच्यो करी पाप जयंकर, जोगते स्वजन आनंद जरेरो। आप मरी गयो नरकही थाने, सहे कलेश अनंत खरेरो ॥ तुम० ॥ २ ॥ जिस वनितासे मद नहि मातो, दिगे आजरण हि वसन जलेरो। सो तनु सजी पर पुरुषके संगे, जोग करे मन हर्ष घनेरो ॥ तुम० ॥ ३ ॥ जीवित रूप विद्युत सम चंचल, काज अनी उद बिंदु लगेरो। इनमें क्यों मुरझायो चेतन, सत चिद आनंद रूप अकेरो ॥ तुम० ॥ ४ ॥ एक ही आतमराम सुहंकर, सर्व जयंकर दूर टरेरो। सम्यग दरसन ज्ञान स्वरूपी, जेष संयोग हि बाह्य घेरेरो ॥ तुम० ॥५॥



॥ अथ पंचमी अन्यत्व भावना ॥

(राग भेरवी.)

ब्रह्मज्ञान रस रंगी रे चेतन ॥ ब्रह्म० ॥ आचली ॥ तन धन स्वजन सहायक जे ते, इनसें अन्य निरंगी रे । जीवसें एही विलक्षण दीसे, अन्यपणा इग संगी रे ॥ ब्रह्म० ॥ १ ॥ जो भवी देह बंधु धन जनसे, आतम भिन्नहि मंगी रे ॥ तिनकों सोग शंकुसें पीरा, व्यापे नहीं दुःखभंगी रे ॥ ब्रह्म० ॥ २ ॥ जैसे कुधातुसें कंचन बिगरयो, दीसे स्वरूप विरंगी रे ॥ गये कुधातुके निजगुण सोहे, चमके निजगुन चंगी रे ॥ब्रह्म०॥३॥ करम कुधातुसें चेतन बिगर्यो, भाम सबहि एकंगी रे। सम्यग दरसन चरण तापसें, दहे करम सरंगी रे ॥ ब्रह्म० ॥ ४ ॥ आतम भिन्न सदा जकतासें, सत चिद रूप धरंगी रे । आनंद ब्रह्म सुहंकर सोहे, अजर अमर अनंगी रे ॥ ब्रह्म० ॥ ५ ॥

॥ अथ छट्ठी अशुचिभावना ॥

(राग सिंध काफी.)

तनु शुची नहीं होवे, काहेकुं भरम भुलाना रे ॥ तनु० ॥ आंचली ॥ रस लोही मल मेद हाडसे, मज्जा रेत गुहाना रे । आंत मूत पित्त भिन्न ही कसमल, अति ही दुर्गंध भराना रे ॥ तनु० ॥१॥ नवहि ज श्रोत झरे मलगंधि, रस कर्दम असुहाना रे । तनुमें शुचि संकल्प हि करना, एही ज नाम अज्ञाना रे ॥ तनु० ॥ २ ॥ नव वरननी मुख चंद्र ज्यूं, निरखी मनमें अति हरषाना रे। रुधिर पूय मल मूत्र पटमें, नस नस मेल भराना रे ॥ तनु० ॥ रुधिर मंसकी कुच ग्रंथी है, मुखसे लाल बहाना रे । गूथ मूत्रके द्वार घनीले, तिंनसे भोग कराना रे ॥ तनु० ॥ ४ ॥ अशुचितर खान देह शुचि नाही, जो सत स्नान कराना रे । आतम आनंद शुचितर सोहे, देह ममता तजराना रे ॥ तनु० ॥ ५ ॥

॥ अथ सातमी आश्रवजावना ॥

(राग ठुमरी भेरवी.)

आश्रव अति दुःख दाना रे चेतन, आश्रव० ॥ आंचली ॥ मन वच कायाके व्यापारे, योग यही मुख माना रे । कर्म शुनाशुन जीवकों आवे, आश्रव जिनमत गाना रे ॥ आश्रव ॥ १ ॥ मैत्र्यादि जावना वासित मन, पुन्याश्रव सुख-दाना रे । विषय कषाये पोषित चेतन, पापे पकिं जराना रे ॥ आश्रव० ॥ २ ॥ जिन आगम अ-नुसारि वचने, पुन्यानुबंधी पुनाना रे । मिथ्या-मतं वचनें करी आवे, पापाश्रव दुःख याना रे ॥ आश्रव० ॥ ३ ॥ गुप्त शरीरसे पुन्य सुहंकर, करे जगवासी सियानारे । हिंसक षट्कायाको जंतु, जगमें पाप कराना रे ॥ आश्रव० ॥ ४ ॥ योग क-षाय विषय परमादा, विरति रहित हि अज्ञाना रे । मिथ्या दरसनी आरत रौद्री, पाप कर सुख-

हाना रे ॥ आश्रव० ॥ ५ ॥ आतम सदा सुहंकर निर्मल, जिन वच अमृत पाना रे । करके जीव सदा निरंगी, पाम पद निरवाना रे ॥ आश्रव० ॥ ६ ॥

॥ अथ आठमी संवर भावना ॥

(राग विहाग)

जिनंद वच संवर सुनरे सुज्ञानी ॥ आंचली ॥ सब आश्रवको आवत रोके, संवर जिनवर वानी । सो भी दोय भेद से वरन्यो, द्रव्य भाव सुखदा-नी ॥ जिनंद० ॥ १ ॥ करम ग्रहणका छेद करे जो, संवर दरव विधानी । भव हेतु किरियां जो त्यागे, भाव संवर सुख खानी ॥ जिनंद० ॥ २ ॥ जिस जिस कारण सेंती रुंधे, आश्रव जल पथ पानी । ते ते उपाय निरोधके तांइ, जोके पंडित ज्ञानी ॥ जिनंद० ॥ ३ ॥ खम मृदु सरल अनीहा सेती, क्रोध मान छल थानी । लोभ ए चारों क्रमसें रुन्धे, तो कहीए शुभ ध्यानी ॥ जिनंद० ४ ॥ करे अ-

संयम दृढता जिनकी, ते विषयों विष मानी । इ-
न्द्रिय संयम पूरन सेवी, करे जर मूर से हानी ॥
जिनंद० ॥ ॥ ५ ॥ तीन गुप्तिसे योगको जीते, हरे
परमाद कुरानी । अपरमादे पापयोगकुं, विरतीसे
सुख जानी ॥ जिनंद० ॥६॥ सम्यग् दरससें मिथ्या
जीती, आरत रौद्र हि धानी । थीर चित करीने
जीत चिदानंद, आतमपद निर्वानी ॥ जिनंद०॥७॥

॥ अथ नवमी निर्जरा जावना ॥

॥राग खमाच॥ (दुर्मति डारदे मेरे प्राणी दुरमति ए देशी)

चेतन निर्जरा जावना जावे रे ॥ चेतन० ॥ आं-
चलो ॥ जग तरु बीज जूत करम जे । खरु कर
सुख पाये । सो निर्जरा दोय जेद सुनीजे । सका-
माकाम बतावे रे ॥ चेतन० ॥ १ ॥ संयमीको
सकाम निर्जरा, इतरांको इतर कहावे । कर्म पा-
पका फल जो जोगे, खय उपाय सुनावे रे ॥ चे-
तन० ॥ २ ॥ मलयुत कनक तप्त वह्निसे, जैसे दोष

जरावे। तप अग्निसें कर्म तपाये, तेसें जीव सुज्ञावे रे ॥ चेतन० ॥ ३ ॥ खाना नाहिं ऊनोदरि करनी, विरती संखेप गिनावे। रस त्यागे तनु कष्ट करे जो, इन्द्रिय विषय रुंधावे रे ॥ चेतन ॥ ४ ॥ षट् भेदे बाह्य कह्यो तप, षट् विध अंतर गावे। पायछित्त वियावच्च सुहंकर। विनय व्युत्सर्ग धरावे रे ॥ चेतन० ॥ ५ ॥ शुभ ध्याने तपो अग्नि दीपे, बाहिर अंतर जावे। संयमी जन करे अट्ठ निर्जरा, दुर्जर कर्म खय जावे रे ॥ चेतन० ॥ ६ ॥ बंधन गये तुंब ज्यूं जलमें, बिनकर्में ऊर्ध्व हि आवे। आतम निर्मल सुध पद पामी, जनम मरण मिटावेरे ॥ चेतन० ॥ ७ ॥

॥ अथ दशमी धर्मभावना ॥

(राग माढ)

चेतनजी थाने धर्मनी भावना दाखांजी, महाराज हो चेतन जी० ॥ आंचली ॥ धर्म जिनंद

बताया जी महारा राजरे कांइ, जेहने आलंबी भवोदधिमें न डुबायाजी महारा राज ॥ चेतन० ॥ ॥ १ ॥ संयम सत्व सुहाया जी महारा राजरे कांइ, ब्रह्म अकिंचन तप शुचि सरल गिनायाजी महारा राज ॥ चेतन० ॥ २ ॥ खांति मार्दव मुक्तिजी महारा राजरे कांइ, दशविध धर्मो वीर जिनंद सुनाया जी महारा राज ॥ चेतन० ॥ ३ ॥ नरक पडंता राखेजी महारा राजरे कांइ, तीर्थंकर पद धर्म थकी जग पायाजी महारा राज ॥ चेतन० ॥ ४ ॥ संकटमें सुख आपेजी महारा राजरे कांइ, आतमानंदी धर्म अति सुखदायाजी महारा राज॥चे०॥५॥

॥ अथ एकादशमी लोकस्वरूपभावना ॥

(राग० जन्द काफी)

भवी लोक स्वरूप समररे सम० ॥ आंचली ॥

कटि धरि हाथ चरण विस्तारी । नर आकृति

चित्त धररे। षट् द्रव्य पूरण लोक समरचे, उप-
जत बिनसत थिररे ॥ जवी० ॥ १ ॥ त्रिजुवन व्या-
पक लोक बिराजे. पृथ्वी सातमु धरे। घनोदधि
घन तनु वात वलि कलशे। चार ओर रही थीररे
॥ जवी० ॥ २ ॥ वेत्रासन सम लोक अधो है, ऊ-
ल्लरी निज मध्यवर रे। मुरजाकार ही उर्ध्वलोक
है। जाषे जग जिनवर रे ॥ जवी० ॥ ३ ॥ रचना
इसको किन ही न कीनो, नहीं धार्यों किन कर
रे। स्वयं सिद्ध निराधार लोक ये, गगन रह्यो ही
अचर रे ॥ जवी० ॥ ४ ॥ ईश्वर कृत्यही लोक जो
माने, सो अज्ञान ही वर रे। आत्मानंदी जिनवर
जप्पो, मान मिथ्या मत हररे ॥ जवी० ॥ ५ ॥

॥ अथ द्वादशमो बोधिदुर्लजजावना ॥

(राग ठुमरी)

अनंत कालसे बोधि दुर्लज पानारी। सखी
बोधि०। आंचली। अकाम निरजरा पुन्यसे प्रानी।

थावरसें त्रस थानारी ॥ सखी० ॥ १ ॥ बि त्रि चतु पंच इन्द्री सुहंकर । क्रम सें तिरयग माना री ॥ सखी० ॥ २ ॥ नरजव आरज देश सुजाति । इन्द्रिय पटुतर गानारी ॥ सखी० ॥ ३ ॥ लंबी आयु कथक श्रवण गुन । श्रद्धा शुचितर तानारी ॥ सखी० तत्त्व निश्चय बोधि रतन सुहंकर । शिव सुखकी खानारी ॥ सखी० ॥५॥ दुर्लभ बोधि भावना भावें । तो तुं आतमरानारी ॥ सखी० ॥ ६ ॥

॥ इति श्रीमद्विजयानंदसूरीश्वरकृता द्वादश भावना समाप्ता ॥

॥ अथ विध विध पदो ॥

॥ पद पहेलुं ॥ (राग भैरवी)

मेरी क्याहो वेदरदी रहो ॥ मे ॥ तोरे नाथसे घर ना वसाय ॥ मे ॥ १ ॥ में तो मूर हती न तो मैं रही । जग भ्रामकातो अब हो रही ॥ तो० ॥ २ ॥

हुं तो ढुंढ रही न तो यार मिला ॥ अब काल अ-
नंतो ही रोय रही ॥ तो० ॥ ३ ॥ न तो मीत विवेक
न धर्म गुनी । अब सीस धुनी हुं तो बेठ रही ॥
तो० ॥ ४ ॥ हुं तो नाथ ही नाथ पुकार रही ।
कुमता जर जारही जार रही ॥ तो० ॥ ५ ॥ तुं
तो आप मिला मन रंग रला । अब आनंद रूप
आराम लही ॥ तो० ॥ ६ ॥

॥ पद बीजुं ॥ (राग वसंत)

(हमकु ठांरु चले बन माधो, ए देशी)

तुं क्युं भोर भये शिव राधो । वाधा मोच करो
मनमां रे ॥ तुं० ॥आंकणी ॥ फूली वसंत कंत चित्त-
शांति, भ्रांति कुवास फूल मति दोरे । मनमोहन
गुण केतकी फूली, समता रंग चर्यों घर तोरे ॥ तुं०
॥ १ ॥ इला रोधन तस भइ घट, जरत भयो अघ
घांस भलो रे । समता सीतलता मन मालो, गुण-

स्थानक शुद्ध श्रेणि चलो रे ॥ तुं० ॥ २ ॥ पावस भूमि चेतनकी शुद्ध, ठेरत नइ चित्त अंबुधर रे। वरसत जन वन शुद्ध नरीया, नरीय चैन वन- बाग वर रे ॥ तुं० ॥ कुमता ताप मीटी घट अंदर, मन बंदर सठ शांत नये रे। अनुनव शांतिकी बुंद परी घट, मुक्ताफल शुद्ध रूप थये रे ॥ तुं० ॥४॥ आतमचंद आनंद नये तुम, जिनवर- नाद अनंग सुएयो रे ॥ सगरे संग त्याग शिव- नायक, ज्ञायक नाव सुभाव थुएयो रे ॥ तुं० ॥५॥

॥ पद त्रीजुं ॥ (राग वरवा)

ऐसे तो विषम बाजी। पियाको उन्माद जागी॥ ऐसी आवे मन मेरेको, जाय अघध्वसरी ॥ ए० ॥१॥ मोहको सिरोद सुन, कूदत नइकारी। नादकेव जइ वावे, तो हरन लागे हंस गइरी ॥ ऐ० ॥ २ ॥ चितहूंकी सार गइ, मारहूंने तार

दहस, करहो हंस वंस निकस आइ जंसरी ॥ ऐ०
॥३॥ ऐसी आवे मन मेरे, बदन वन ठेद जारुं ।
प्रगटे आनंद कंत,जारो वाली संसरी ॥ ऐ० ॥४॥

॥ पद चोथुं ॥ (राग वसंत)

(हमकुं ढांफ चले वन माधो, ए देशी)

अब क्युं पास परों मनहंसा, तुम चेरे जिननाथ खरेरे । जार मार ममता दृढगंन, राग स्निग्ध अच्यंग करेरे ॥ अब० ॥ १ ॥ जव तरु जार ताण विस्तरीया, मोह कर्म जफ मूल जर्योरे। क्रोध मान माया ममतारे, मतवारे चहुंकु न चर्योरे ॥ अब० ॥ २ ॥ पास परन वामारस राच्यो, खांच्यो कर्म गति चार पर्योरे ॥ राग द्वेष जिहां जये रखवारे, जव वन सघन जंजीर जर्योरे ॥ अब०.॥ ३ ॥ पूरण ब्रह्म जिनेंद्रकी वानी, करण रंध्रमें शब्द पर्योरे । अनुजव रस जरी ठीनकर्में जरुयो, आतमराम आनंद जर्योरे ॥ अब० ॥ ४ ॥

॥ पद पांचमुं ॥ (राग माढ)

प्रीति न्नांगी रे कुमतिशुं प्रीति ॥ ए आंचली ॥ ज्ञान दरस वरणी दोउंरे, इसके पूत कुरूप। ज्ञान दरस दोउं निज गुणोरे, ढाद कीने अनूप॥ कुमति० ॥ १ ॥ महानंद गुण सोसियोरे। वेदनी दास करुर। कुमता तात नयंकररे। मोहे मोह गरुर ॥ कुमति० ॥ २ ॥ नास्यो मोह अनादिकोरे, चेतन आयोरे ठाम। हनि वंदन आयु नस्योरे। नाम चितारारे ताम ॥ कुमति० ॥ ३ ॥ कुंन्नकार गोतर गयोरे। विघ्नराज नसमंत । दरसन चरण अमरणकोरे। रूप रहित विसंत ॥ कुमति० ॥ ४ ॥ अगुरु लघु गुण उल्लस्योरे, आतम शक्ति अनंत। सतचिद आनंद आदि लेरे, प्रगटयो रुप महंत ॥ कुमति० ॥ ५ ॥



॥ पद ७वुं ॥ (राग माढ)

प्रीति लागीरे सुमतिशुं प्रीति ॥ आंचली ॥
पीर मिटी अनादिकीरे, गयो अज्ञान कुरंग । विषधर सरपणी पंचजेरे, निरविषरूप विरंग ॥ सुमति० ॥ १ ॥ पंचो नल बंधन कीयेरे, काढी करमको नीर । तप तापे करी सूकीयोरे, धोये नीज गुन चीर ॥ सुमति० २ ॥ प्रकटो निधि निज रूपकोरे, रिण रंचक सिर नाह । मिटि अनादिकी वक्रतारे,चाल्यो शिवपुर राह॥सुमति० ॥३॥ क्रोध मान मद मोहकी रे, नासी अज्ञानकी रेह ॥ कुमति गइ सिर कुटतीरे, त्रुव्यो हम तुम नेह ॥ सुमति० ॥ ४ ॥ सोहं सोहं रटि रटनारे । छांड्यो परगुण रूप ॥ नट ज्युं सांग उतारीनेरे । प्रगट्यो आतम चूप ॥ सुमति० ॥ ५ ॥



॥ पद सातमुं ॥

(नेम राजुल विषे वैराग्य पद.)

॥ राग सुहा विहाग रे सामरे ना जारे सामरे ॥ आंचली ॥ नव नवकेरो नेह निवारो । बिनकमें ना ठटकाजारे ॥ सामरे ॥ १ ॥ हुं जोगन नइ नेह सब जारीरे । अंग विभूति रमाजारे ॥ सामरे ॥ २ ॥ नव सागरमें नइया फिरत है । मुजको पार लगाजारे ॥ सामरे ॥ ३ ॥ आप चलतहो मोक्ष नगरे । मुजको राह बताजारे ॥ सामरे ॥ ४ ॥ में दासी प्रनु तुमरे चरनकी । आतम ध्यान लगाजारे ॥ सामरे ॥ ५ ॥

॥ आतमाने शिखामणनुं पद आठमुं ॥

(राग विहाग.)

रे मन मूरख जनम गमायो । निज गुन त्याग विषयन रस लुधो। नेम शरण नहीं आयो

॥ रे मन० ॥ १ ॥ यह संसार सुहासा वरजो। संबल देख लुजायो। चाखन लाग्यो रुइसी उड गइ। हाथ कबुय न आयो ॥ रे मन० ॥ २ ॥ यह संसार सुपनसी माया। मुरख देख लोजायो। उड गइ निंद खुली जब अखीयां। आगे कबुय न पायो ॥ रे मन० ॥ ३ ॥ पर गुन तजकर निज गुन राचो। पुन्य उदय तुम आयो। एक अनादि चिन्मय मूरति। सुमति संग सुहायो ॥ रे मन० ॥ ४ ॥ परगुन बकरीके संग चरतो। हुरु नाम धरायो। जिनवर सिंघको नाद सुन्यो जब। आतम सिंघ सुहायो ॥ रे मन० ॥ ५ ॥

॥ पद नवमुं ॥ राग षट् ॥

समज समज वश मन इंद्री, परगुन संगी न होरे सयाना। समज० ॥ आंचली ॥ इनहीके वश सुद्ध बुद्ध नासी। महानंद रूप जुलाना ॥

सांग धार जग नट वत नाच्यो । माच्यो पर गुन-ताना ॥ वश कर० ॥ १ ॥ चार कषायां इन संग चाले । चंचल मन हि जराना । मोह मिथ्या-मद मदनहियाले । साथे हि मूर अज्ञाना ॥ वश कर० ॥ २ ॥ तुं चाहे संयम रस राचुं । धरुं शिर वीरनी आना । उलट उलट्ये करे तुज मनकुं । नासे मनोरथ माना ॥ वश कर० ॥ ३ ॥ ज्रामक मन तनकों उकसावे । डारे ज्ररमकी खाना । मृग-तृसना वत दोडी फिरत हे । करी कल्पना नाना ॥ वश कर० ॥ ४ ॥ आतमराम तुं समज सयाने । कर इंडिय वस दाना ॥ पीके आनंद रस मगन रहोरे । नीको मील्यो अब टाना ॥ वश कर० ॥ ५ ॥

॥ आत्मोपदेश पद दशमुं ॥

(राग गुजरी)

तें तेरा रूप न पायारे अज्ञानी, तें तेरा०

॥ आंचली ॥ देखी रे सुंदरी परकी विभूति । तुं मनमें ललचाया रे । अज्ञानी० ॥ १ ॥ एक ही ब्रह्म रटि रटना रे । पर वश रूप भूलाया रे ॥ अज्ञानी० ॥ २ ॥ माया प्रपंच हि जगतकों मानी । फिर तिनमेंहि भूलायारे । अज्ञानी० ॥ ३ ॥ सुकर्वत पाठ पढो ग्रंथनको । मिथ्या मत मुरझायारे ॥ अज्ञानी० ॥ ४ ॥ जैसे करछी फिर व्यंजनमें । स्वाद कछुय न पायारे । अज्ञानी० ॥५॥ परगुन संगी रमणी रसराच्यो । आगो अद्वैत सुनायारे ॥ अज्ञानी० ॥ ६ ॥ आतमघाती भाव हिंसक तुं । जगमें महंत कहायारे॥अज्ञानी० ॥७॥

॥ आत्मोपदेश पद अग्यारमुं ॥

(राग गुजरी)

तें तेरा रूपकुं पायारे सुज्ञानी, तें तेरा० ॥ आंचली ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्म रस भीनो । मि-

थ्या मत छिटकायारे ॥ सुज्ञानी० ॥ १ ॥ धार महाव्रत सम रस लीनो । सुमति गुप्ति सुहाया रे ॥ सुज्ञानी० ॥ २ ॥ इंद्रिय मन चंचल वश कीने । जायो मदन कुरायारे ॥ सुज्ञानी० ॥ ३ ॥ स्याद्वाद अमृत रस पीनो । भूले नहीं भुलायारे ॥ सुज्ञानी० ॥ ४ ॥ निश्चय व्यवहारे पंथ चाल्यो । दुर्नय पंथ मिटायारे ॥ सुज्ञानी० ॥ ५ ॥ अंतर निश्चय बहि व्यवहारे । वीर जिनंद सुनायारे ॥ सुज्ञानी० ॥ ६ ॥ आतमानंदी अजर अमर तुं । सतचिद आनंद रायारे । सुज्ञानी० ॥७॥

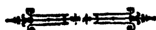
॥ इति न्यायाम्भोनिधि श्रीमद्विजयानन्दसूरीश्वर-
विरचितपदानि समाप्तानि ॥

॥ समाप्तः श्रीविजयानंदसूरिकृतिरूपः प्रथमो विभागः ॥



॥ विभाग दूसरा ॥

श्रीमद् उपाध्यायजी महाराज श्रीवीर-विजयजी महाराज विरचित स्तवनावली.



॥ श्रीआदिजिनस्तवनम् ॥

(राग जेजेवंती)

आदि मंगल करुं, आदि जिन ध्यान धरुं, फेर नही पास परुं, जव वन जालमें । लागी तोरी माया जोर, देखत हुं ठोर ठोर, दरिसण डुरलभ, लीयो बहु कालमें ॥ आ० ॥ १ ॥ माता मरुदेवां नंद, नाभी राय कुल चंद, ऋषभ जिनंद प्रभु, आदि को करण है । छोडी सब राज रीद्धि, संजमसे प्रीति किधी। जगतकी नीति सब रीति बतलाइ है ॥ आ० ॥ २ ॥ डुरधर तप करी, अ-

ष्टापदोपरि चम्ी, अणशण करी वरी, शिव पटराणी है । ऐसी गति तिहारी देव, तुही जाणे नित्यमेव, अकल अलख तेरो अगम स्वरूप है ॥ आ० ॥ ३ ॥ अहनिश तेरे विच, कीये जिने समचित्त, नयि तिने नीरजीक, सुगति सोनागी है । नक्तकी सुणी राव, चित्तमें किजे ठराव, आतम आनंद वीरविजय मांगत है ॥ आ० ॥४॥



॥ श्रीअजितजिनस्तवनम् ॥

(राग भोपाल, ताल संगीत)

ध्याउं जिन अजित देव, नवी जन हितकारी ॥ आंकणी ॥ तुम प्रनु जित राग द्वेष । कर दिये सब कर्म खेद । थीर चित्त करुं तुमरी सेव । जिम थाउं नवपारी ॥ ध्या० ॥ १ ॥ तुम बिन नही ज्ञान ज्ञेय, तुम बिन नहीं ध्यान ध्येय, तुम विना करुं किनकी सेव, अंतर मत

धारी ॥ ध्या० ॥२ ॥ अब चित्त धरो करो विचार, खंट पट सब दुर जार, ऊट पट अब मुजको तार, आनंद सुखकारी ॥ ध्याउं० ॥३॥ प्रभु जई कीयो मुक्ति वास, सेवककुं एही आश, आतम आनंद कर विलास, वीर विजयकुं तारो ॥ ध्याउं० ॥ ४ ॥

श्रीसंभवजिनस्तवनम् ।

(राग महावीर चरणमें जाय, ए देशी)

प्रभु संभव जिन सुखदाई । चित्तमें लागी रहो ॥ प्र० ॥ चि० ॥ आंकणी ॥ दुःखसंभव में दूर कीयो है । सुख संभव थयो आज ॥ चि० ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ एह संसार असार सार है । तुम शरणा महाराज ॥ चि० ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ मोह-सेन सब चुर लीयो है । शिवपुर केरो राज ॥ चि० ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ दीन हीन दुःखियो मुज देखी । सारो सेवकको काज ॥ चि० ॥ प्रभु० ॥४॥

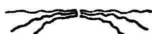
मोह द्रोह सब नाश करीने। राखो सेवककी लाज ॥ चि० ॥ प्रभु० ॥५॥ आतम आनंद प्रभुजी दीजो। वीरविजयको आज ॥ चि० ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥

॥ श्रीअभिनंदनजिनस्तवनम् ॥

(राग ठुमरीका भेद)

अभिनंदन स्वामी हमारा। प्रभु भव दुःख-भंजनहारा । ए दुनियां दुःखकी धारा । प्रभु इनसे करो निस्तारा ॥ अ० ॥ १ ॥ हुं कुमता कुटिल भरमायो । दुरनीति करी दुःख पायो। अब शरण लीयो है थारो । मुज भव जल पार उतारो ॥ अ० ॥ २ ॥ प्रभु शीख हैये नहीं धारी । दुरगतीमें दुःख लीयो भारी। इन कर्मों-की गति न्यारी । कीये बेर बेर खुवारी ॥ अ० ॥ ॥ ३ ॥ तुम करुणावंत कहावो । जग तारक बि-रुद धरावो। मेरो अरजीनो ए दावो । इन दुःख

से. क्युं न ढोळावो ॥ अ० ॥ ४ ॥ में विरथा जनम गमायो । नहीं तन धन नेह निवार्यो । अब पारस परसंग पामी । नहीं वीरविजयकुं खामी ॥ अ० ॥ ५ ॥



॥ श्रीसुमतिजिनस्तवनम् ॥

(राग गोडी)

सुमति जिनेश्वर स्वामी । मेरे प्रभु सुमति-जिनेश्वर स्वामी ॥ आंकणी ॥ भ्रमत भ्रमत जग-जाल फस्यो में ॥ दरिसण पुन्ये पामी ॥ मे० ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ अष्ट करमके झगडे जिति । सुमति सुनाम कहानी ॥ मे० ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ अंतरग-तकी पोरु हमारी । तुं जाणे विसरामी ॥ मे० ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ बाल ख्यालमें तुमहो न जाने । रोग निकंदन कामी ॥ मे० ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ जग चिंतामणि सुरतरु सरिखो । नीरखो गद सब वामी ॥ मे० ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ तारण तरण छे

बिरुद तुमारो । नव नय नंजनहारी ॥ मे० ॥ प्रजु० ॥ ६ ॥ आतम आनंद रसके दाता । वीरविजय हितकारी ॥ मे० ॥ प्र० ॥ ७ ॥



॥ श्रीपद्मप्रजजिन स्तवनम् ॥

(राग रेखता)

(खलक एक रैनका सुपना, ए देशी)

पद्मप्रजु प्राणसे प्यारा । बोमावो कर्मनी धारा। करम फंद तोमवा धोरी। प्रभुजीसे अर्ज हे मोरी ॥ प० ॥ १ ॥ लघुवय एक थे जीया। मुक्तिमें वास तुम कीया ॥ न जाणी पीर तें मोरी । प्रजु अब खेंच ले दोरी ॥ प० ॥ २ ॥ विषय सुख मानी मो मनमें । गये सब काल गलफतमें ॥ नारक दुःख वेदना नारी। नीकलवा ना रही बारी ॥ प० ॥ ३ ॥ परवश दीनता कीनी। पापकी पोट शिर लीनी ॥ जक्ति नहीं

जाणी तुम केरी । रह्यो निशदिन दुःख घेरी ॥ पु० ॥ ४ ॥ इनविध वीनती तोरी । करुं में दोय कर जोडी ॥ आतम आनंद मुज दीजो । वीरनुं काज सब कीजो ॥ प० ॥ ५ ॥



॥ श्रीसुपासजिनस्तवनम् ॥

(राग सामेरी ठुमरीका भेद)

पूजो रे भाई श्रीसुपास जिणंदा । पूजो रे ॥ आंकणी ॥ नवण विलेपन कुसुम धुपथी, दीप धरो मन रंगे ॥ पू० ॥ १ ॥ अक्षत फल नैवेद्य धर्याथी, दुष्ट करम निकंदे ॥ पू० ॥ २ ॥ विधिसुं अष्टप्रकारी पूजन, करतां भवदुःख भंगे ॥ पू० ॥ ॥ ३ ॥ नाटक तान मानसें करतां, तीर्थंकर पद बंधे ॥ पू० ॥ ४ ॥ जिन पूजा ए सार जगतमें, जाणी करवा उमंगे ॥ पू० ॥५॥ वीरविजय कहे इन पुरुषकुं, अविचल सुखमां संगे ॥ पू० ॥ ६ ॥



॥ श्रीचंद्रप्रभजिनस्तवनः ॥

(राग माढ जलानी देशी)

जीया रे चंद्रप्रभुजिनी मुरती मोहनगारी रे । जयकारी महाराज चंद्रप्रभुजिनी मुरती मोहनगारी रे दयाल । आंकणी ॥ जीयारे चंद्र वदन प्रभु मुखको शोभा सारी रे ॥ जय० ॥ चं० ॥ १ ॥ जीयारे शम रस भरियां नेत्र युगलकी जोडी रे ॥ जय० ॥ स० ॥ २ ॥ जीयारे प्रभुपद लीनो कामनीको संग छोडी रे ॥ जय० ॥ प्र० ॥ ४ ॥ जीयारे अब में प्रभुजीसे अरज करुं कर जोडी रे ॥ जय० ॥ अ० ॥ ५ ॥ जीया रे चंचल चितकुं कीण विध राखुं झाली रे ॥ जय० ॥ चं०॥६॥ जीयारे फिर फिर बांधे पाप करमंकी क्यारी रे ॥ जय० ॥ फिर० ॥ ७ ॥ जीयारे नेक नजर करी नाथ निहारो धारी रे ॥ जय० ॥ ने० ॥ ८ ॥ जीयारे तुम चरणांकी सेवा द्यो मुज

प्यारी रे ॥ जय० ॥ तु० ॥ ए ॥ जियारे जिम मुज मनकुं अंतर घटमें आवेरे ॥ जय० ॥ जिम० ॥ १० ॥ जियारे आनंद मंगल वीरविजयकुं थावेरे ॥ जय० ॥ आ० ॥ ११ ॥

॥ श्रीसुविधिजिनस्तवनम् ॥

(राग ध्रुपद)

(आइ इंद्र नार कर कर शृंगार, ए देशी)

श्री सुविधिनाथ, प्रनु मोक्ष साथ, में नयो अनाथ, मुज पकरु हाथ, हुं पतित नाथ, धर धर कर लीजो ॥ श्री० ॥ १ ॥ शिर मोह राट, तिन जगमें हाक, सब जग विख्यात, जे न धरे धाक, कर दुःखनों दाट, जग वश कर लीनो ॥ श्री० ॥ २ ॥ एक अजब बात, इन मोहराट, कीयें तुमने घात, मुख मारी लात, गई इनकी लाज, थर थर कर दीनो ॥ श्री० ॥ ३ ॥ घट

अंतर बात, कुण जाणे नाथ, मुज मोहराट, दियो दुःख अगाध, कीयो बहु उचाट, दुरगति दुःख दीनो ॥ श्री० ॥ ४ ॥ अब मेरी लाज, प्रभु तेरे हाथ, सब दुःख निरास, करो सुविधिनाथ, आतमके दास, वीरविजे एम कह्यो ॥ श्री० ॥५॥



॥ श्रीशीतलजिनस्तवनम् ॥

(राग श्री)

शीतल जिनपति पूर्णानंद ॥ शी० ॥ आंकणी ॥ चौमुख समोवसरणमें सोहत, निरखत भवि-जन नयनानंद ॥ शी० ॥ १ ॥ बत्तिस विध ना-टककी रचना, जोरे शचीपति बहु सुखकंद ॥ शी० ॥ २ ॥ देवकुमार कुमारिका वीरचो, मुख-थी थेइ थेइकार करंद ॥ शी० ॥ ३ ॥ धप मप धुंधुं मादल बाजें, वेणु वीणा अति झणकंत ॥ शी० ॥ ४ ॥ ताल मृदंग ढक चेरीने फेरी, माधुरी

धुनी सुनाद करंद ॥ शी० ॥ ५ ॥ कोमल करयुग तालिका लेती, चूडीनो खलकार करंत ॥शी०॥६॥ प्रभु गुण गावती अति मन रंगे, अपने जनमके लाव लहंत ॥ शी० ॥ ७॥ देखण इस विध नाटक रचना, वीरविजय मन चाह करंद ॥ शी० ॥ ८ ॥

॥ श्रीश्रेयांसजिनस्तवनम् ॥

(राग भैरवी)

श्रीश्रेयांसजिन अंतरजामी, दील विसरामी मेरोरे ॥ दी० ॥ आंकणी ॥ अधम उधारण दुःख निवारण, तारण तीन जग केरो रे। चंद्रवदन तुम दरिसण पामी, नांग्यो नवको फेरोरे ॥ श्री० ॥ १ ॥ चंद चकोर मोर घन चाहंत, पद्मणी चाहत प्यारो रे ॥ युं चाहत प्रभु मुज मन नमरो, चरण कमल दुग तेरो रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ काल अनंत दरिसण पायो, प्राणनाथ प्रभु तेरो रे ॥

कर्म कलंक सब दूर निवारो, ज्युं सुधरे नव मेरोरे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ दरिसण करी परसन मन मेरो, में हुं सेवक तेरो रे ॥ आतम आनंद प्रभुजी दीजो, वीरविजयने घनेरो रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥

॥ श्रीवासुपूज्यजिनस्तवनम् ॥

(लगियां दिल नेमीके लार, ए देशी)

में छोरुी औरकी आश चाहुं तुम सेवा महाराज ॥ आंकणी ॥ वासुपूज्य पंचमी गति गामी, और देवनमें हे बहु खामी, तुम तोरुी मोहकी पास ॥ चा० ॥ में० ॥ १ ॥ धनुष तीर गदा चक्रना धारी, कामिनीने संग काम विकारी । ते देवने नहीं कांइ लाज ॥ चा० ॥ मे० ॥ ॥ २ ॥ जप माला गले रुंरुनी माला, जोग लेवा अति हे विकराला । तुम छोरुो ते देवनो ख्याल ॥ चा० ॥ मे० ॥ ३ ॥ जोग विकार तें सघला

वामी, तुम जये वासुपूज्य जग स्वामी; तुं देवनो देव कहेवाय ॥ चा० ॥ मे० ॥ ४ ॥ वासुपूज्य सम देव न डुजो, सुरतरु ठोमी बाउल मत पूजो। जेथी मन वंछित फल थाय ॥ चा०॥ मे० ॥ ५ ॥ आतम आनंद दीजो जोरी, इनमें शोजा हे प्रभु तोरी। तुं वीरविजयने तार ॥ चा० ॥ मे० ॥ ६ ॥

॥ श्रीविमलजिनस्तवनम् ॥

(राग केरबो)

विमल सुहंकर मुज मन वसीया ॥ मु० ॥ आंकणी ॥ अष्ट करम मल दूर करीने । सतचित्त आनंद रूप फरसीया ॥ वि० ॥ १ ॥ अंतरंग करुणा करी स्वामी । देशना अमृतं मेघ वरसीया ॥ वि० ॥ २ ॥ जम चेतनको संग अनादि। एक पलकमें उषार धरसीया॥वि०॥३॥ वपु संग सब दूर होवाथी । अनुजव आनंद रसमें

हरसीया ॥ वि० ॥ ४ ॥ प्रभुकी वाणी अमीय समाणी । पान करी परमानंद वरिया ॥ वि० ॥ ॥ ५ ॥ जब तुम वाणी करण धारी । वीरविजयकुं आनंद दरसीया ॥ वि० ॥ ६ ॥

॥ श्रीअनंतजिनस्तवनम् ॥

(राग वरवा पीलु)

अनंत जिणंद अनंत बलधारी । सब जीवनकुं भय हितकारी ॥ मोह अज्ञान घन तिमिर अंधेरा ज्ञान अनंतसे कीयारे उजेरा ॥ अ० ॥ १ ॥ भव भव भमवा भावठ भांगे । अनंत जिनंदसुं प्रीत जो मांडे ॥ जब लग ज्ञान दशा नहीं जागी । तब लग दुःख अनंतको भागी ॥ अ० ॥ ॥ २ ॥ जनम मरणकी आदि न पाई । इनमें कोई न भयेरे सहाई ॥ जब प्रभु तुमरो दरिसण पायो । जनम सफल सब लेखे आयो ॥ अ० ॥ ३ ॥ तारो मुजको

अनंत जिन स्वामी । नही तो लागशे तुमने रे खामी ॥ आतम आनंद दिजो जोरी । वीरविजय मागे कर जोडी ॥ अ० ॥ ४ ॥



॥ श्रीधर्मनाथजिनस्तवनम् ॥

(राग काफी)

धर्म जिनंदसुं प्रीत लागी मुनेरे धर्म जिणंदसुं प्रीत ॥ आंकणी ॥ प्रीत पुराणी न तोडो जिनजी । ए सज्जनकी न रीत ॥ लागी० ॥ १ ॥ दान शील तप भावना चौविध । धर्मकी थापना कीध ॥ लागी० ॥ २ ॥ दश द्वादश विध साधु श्राद्धके । देशना धर्मकी दीध ॥ लागी० ॥ ३ ॥ जगत जंतु उद्धारण खातर । मारग कीया रे प्रसिद्ध ॥ लागी० ॥ ४ ॥ धर्मनाथ जिन धर्म प्रकाशी । जगमें बहु जश लीध ॥ लागी० ॥ ५ ॥ वीरविजय आतम पद लेवा । धर्म सुणयानी रे प्रीत ॥ लागी० ॥ ६ ॥



॥ श्रीशांतिनाथजिनस्तवनम् ॥

(राग देश सोरठ)

प्रभु शांति जिनंद सुखकारी, घट अंतर करुणाधारी ॥ प्रभु० ॥ आंकणी ॥ विश्वसेन अचिराजीको नंदन, कर्म कलंक निवारी। अलख अगोचर अकल अमर तुं, मृगलंछन पदधारी ॥ प्र० ॥ १ ॥ कंचन वरण शोभा तनु सुंदर, मूरती मोहनगारी। पंचमो चक्री सोलमो जिनवर, रोग शोग भय वारी ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ पारापत प्रभु शरण ग्रहीने, अभय दान लीयो भारी। हम शांति जिनेश्वरनामे, लेशुं शीव पटराणी ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ शांति जिनेश्वर साहिब मेरा, शरण लीया में तेरा। कृपा करी मुज टालो साहिब, जनम मरणना फेरा ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ तन मन थीर करे तुम ध्याने, अंतर मेल ते वामे। वीरविजय कहे तुम सेवनथी, आतम आनंद पामे ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥



॥ श्रीकुंथुजिनस्तवनम् ॥

(राग लावणी)

कुंथु जिनेश्वर तुं परमेश्वर, तेरी अजब गति कहिये । कुंथु कुंजरथी धारके करुणा, जिन पद्वी लहिये ॥ कुं० ॥ लख चौरासी जीव जोनीमें, हमको रखनां ना चइये । ए दिलमें धारी तारके सरणा जिनवरका दइये ॥ कुं० ॥ २ ॥ शांग धारक त्रिभुवन नाचो, नरग निगोदे दुःख सहिये । ए दिलकी वातां, सुखसे तुम बिन किस आगे कहिये ॥ कुं० ॥ ३ ॥ प्रभु मुज तारो पार उतारो, गुण अवगुण तो ना लहिये । ए धरम काममें नाथकुं ढीलको करना ना चइये ॥ कुं० ॥ वीरविजयकी एही अरज है, आतम आनंद रस दइये । ए अरज सुणीने नाथको नेक नजर करना चइये कुं० ॥५॥

॥ श्रीअरजिनस्तवनम् ॥

(चिंतामणि पास प्रभु अर्ज है सुनो तोसही, ए देशी)

अर जिन देव विना औरकुं मानुं तो नहीं तुम बिन नाथ दुजो देव में चाहुं तो नहीं ॥ अर० ॥ आंकणी ॥ काम क्रोध मद मोह द्रोहे करी भरियल हरिहर देवने मानुं तो नहीं ॥ अर० ॥ २ ॥ मनवंछित चिंतामणि पामीने काच शकल हवे हाथमां झालुं तो नहीं ॥ अर० ॥ ३ ॥ गले मोतियनकी माला में पेहेरीने और माला काठकी हृदयमें धारुं तो नहीं ॥ अर० ॥ ४ ॥ खीर समुद्रकी लहेर हुं छांडीने छिल्लर जलनी में चाहना करुं तो नहीं ॥ अर० ॥ ५ ॥ शांत स्वरूप प्रभु मूरति देखीने तन मन थीर करी आतमा ठारुं तो सही ॥ अर० ॥ ६ ॥ वीरविजय कहे अर जिन देव विना और देवनकी में वार्त्ता मानुं तो नहीं ॥ अर० ॥ ७ ॥



॥ श्रीमल्लिजिनस्तवनम् ॥

(राग ठुमरी दक्षणी)

आज जिनंदजीका दीठा में तो मुखडां, मल्लि जिनंद प्रभु हम पर तुठडां ॥ आ० ॥ १ ॥ चउ गति फिरत में पायो बहु दुःखडां, तुम प्रभु चरण ग्रहुं जो थाय सुखडां ॥ आ० ॥ २ ॥ तुच्छ जे विषय सुख लागे मुने मीठडां, नरग तीर्यंगमांही तेना फल दीठडां ॥ आ० ॥ ३ ॥ ताहारे चरोसें प्रभु लाग्युं मारुं मनडुं, कृपा करी तारवाने करो एक तनडुं ॥ आ० ॥ ४ ॥ आनंद विजयनो सेवक मागे एटलुं, वार वार प्रभुजीने कहुं हवे केटलुं ॥ आ० ॥ ५ ॥

॥ श्रीमुनिसुव्रतजिनस्तवनम् ॥

(राग धारी की देशी)

जिनंदजी एह संसारथी तार । मुनिसुव्रत जिनराज आज मोहे एह संसारथी तार ॥ आं-

कणी ॥ पद्मावतीजीको नंदन निरखी, हरषित तन मन थाय ॥ जि० ॥ कछप लंछन प्रभु पद धारे, शामल वरण सोहाय ॥ शा० ॥ मु० ॥ १ ॥ लोकांतिक सुर अवसर देखी प्रतिबोधनकुं आय ॥ जि० ॥ राज काज सब छोड दइ प्रभु, संजमशुं चित्त लाय ॥ सं० ॥ मु० ॥ २ ॥ तप जप संजम ध्यानानलथी, कर्म इंधन जल जाय ॥ जि० ॥ लोकालोक प्रकाशक अद्भुत, केवल ज्ञान तुं पाय॥ के० ॥ मु० ॥ ३ ॥ ज्ञानमें भाली करुणा धारी, जीव दया चित्त लाय ॥ जि० ॥ मित्र अश्व उपगार करणकुं, भरुअच्छ नगरमें आय ॥ भ० ॥ मु० ॥ ४ ॥ अश्व उगारी बहु जन तारी, अजर अमर पद पाय ॥ जि० ॥ वीरविजय कहे मेहेर करो तो, हमने ते सुख थाय ॥ ह० ॥ मु० ॥ ५ ॥

॥ श्रीनमिनाथजिनस्तवनम् ॥

(देशी वधाइनी)

आज वधाइ वाजे छे, नगर मथुरांमांही वि-
जय घर ॥ आज वधाइ० आंकणी ॥ विप्रा रा-
णीये बेटो जायो, शुभ मुहूर्त्त शुभ वार । सोहम
सुरपति चित्त धरी आवे, विजयराय दरबार ॥
वधाइ० ॥ १ ॥ मात नमी करी पंचरूप धरी, कर
कमले प्रभु लीध । चौसठ सुरपति सुरगिरि रंगे,
जन्म महोत्सव कीध ॥ वधाइ० ॥२॥ विधि पूजन
करी अष्ट मंगल धरी, गीत गान बहु कीध।
सोना रूपाके फुल वधाइ, जनमको लाहो लीध॥
वधाइ० ॥ ३ ॥ जन्म महोच्छव ठाठ करीने, जननी
पासें लाय। सुरपति सघला महोच्छव करवा, द्वीप
नंदीसर जाय॥ वधाइ० ॥ ४ ॥ प्रात समय जय
अति आनंदसे, विजयराय दरवार। धवल मंगल
सब गीतनादसें, पुत्र वधाइ थाय ॥ वधाइ० ॥५॥

सुतक कुल मरजाद करीने, जोजन बहुविध कीध। वीर विजय कहे नात जमावी, नमिकुमार नाम दीध॥ वधाइ० ॥ ६॥



॥ श्रीनेमिनाथजिनस्तवनम् ॥

(राग ठुमरी पंजाबी.)

मेरे प्रजुसें एही अरज हे, नेक नजर करो दया करी॥ मे० ॥ आंकणी ॥ समुद्रविजय शिवादेवीना जाया, छप्पन दिगकुमरी हुलराया। अनुक्रमे प्रजु जोबन पाया, परणी नहीं एक नार, थवा अनगार के तृष्णा दूर करी ॥ मेरे० ॥ १ ॥ तुमे तो सघली माया तोडी, राजोमती स्त्रीने छोडी। सहसावनपे रथको जोडी, गये प्रजु गिरनार, लिये व्रत चार के झगडा दूर करी ॥ मेरे० ॥ २ ॥ तप जप संजम कीरिया धारी। प्रजुजी वसीया गढ गिरनारी। नेम प्रजुकी हुं बलिहारी।

पामी केवलज्ञान, थया शिवराण के अघ सब दूर करी॥ मेरे० ॥३॥ तुमे हो प्रज्नु साहिब मेरा। हम तो हैं प्रज्नु सेवक तेरा। अपने घाले तुमसें घेरा॥ मुजे उतारो पार, मेरा सरदार के जम दुःख जाय टरी ॥ मेरे० ॥४॥ श्याम वरण तनु शोज्ना सारी। मुखमटकालुं छबी हे न्यारी। नेम प्रज्नुकी मुरती प्यारी। वीरविजयकी बात, सुणो एक नाथ के ज्नवोज्नव तुंही धणी ॥ मेरे० ॥५॥

॥ श्रीपार्श्वजिनस्तवनम् ॥

(राग पंजाबी टप्पो.)

मोरी बइयां तो पकरु, सुखकारी स्वाम, तोरुं पार्श्वनाथ परतक्ष नाम ॥ मोरी० ॥ आंकणी ॥ अश्वसेन वामाजीको नंदन,वणारसी नगरीमें जनम ठाम.॥ मोरी० ॥१॥बालपणमें अद्‍ज्नुत ज्ञानी, जीवदयाका हो करुणा धाम ॥ मोरी० ॥१॥ कष्ट करंता कमठ समीपे, आये प्रज्नु तुमे धारी हाम

॥ मोरी० ॥ ३ ॥ काष्ठमें ज्वलतो फणी निकाली, मंत्रसें दिया प्रभु स्वर्ग धाम ॥ मोरी० ॥ ४ ॥ अवसरे दीक्षा तप जप साधी, प्रभूजी लीयो तुमे मोक्ष ठाम ॥ मोरी० ॥ ५ ॥ वीरविजयकी एही अरज है, हमको हे प्रभु एही काम ॥ मोरी० ॥ ६ ॥

॥ श्रीमहावीरजिनस्तवनम् ॥

(राग धन्यासरी)

वीरहसें जयोरे उदासी । वीर जिन वीरहसें जयोरे उदासी ॥ टेक ॥ दुषम कालमें दुःखीयो ठोक्षी । तुम जये शिवपुर वासीरे ॥वी०॥१॥ प्रभु दरिसण परतक्ष न दीठुं । इणशुं जयोरे नीराशीरे ॥ वी० ॥ २ ॥ करमराय सुजटे मुज घेर्यो । महारी करे सब हांसीरे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ तुम विना एकाकी मुज देखी । कारी गले मोह फांसीरे ॥ वी० ॥ ४ ॥ प्रभु विना कोन करे मुज

करुणा । देखो दिलमें विमासीरे ॥ वी० ॥ ५ ॥
पीण तुज आगम ने तुज मुरति। एही शरण मुज
थासीरे ॥ वी० ॥६॥ एही जरोंसो मुज मन मोटो।
जांगी जवकी उदासीरे ॥ वी० ॥७॥ वीरविजय कहे
वीर प्रभुकी । मुरती शरणज थासीरे ॥वी० ॥८॥



॥ अथ कलश ॥

(राग रेखता)

चौवीस जिनराज में गाया, परम आनंद
सुख पाया । प्रभु गुण पार ना पावे, जो सुरगुरु
वर्णवा आवे ॥ चौवी० ॥ १ ॥ अलपसी बुद्धि है
मोरी, करी पिण वर्णना तोरी । प्रभु तुम मान-
जो साची, न थाये जगतमें हांसी ॥चौवी०॥ २ ॥
मेरी अब लाज तुम हाथे, बांहे ग्रही लिजियें
साथे । कहो प्रभु जोर क्या तुमने, जरा उद्धा-
रतां हमने ॥ चौवी० ॥ ३ ॥ प्रभु चौवीस जग

स्वामी, पुरवले पुन्यथी पामी । हरो सब दुःखनो घेरो, नसे जरा मर्णनो फेरो ॥ चौवी० ॥ ४ ॥ वेद[४] युग[४] अंक[९] इंदु[१] वर्षे, आषाढे मास शुक्ल पक्षे । तिथौ जली पूर्णिमा पूरी । जयो सोमवार सुख भूरी ॥ चौवी० ॥ ५ ॥ विजे आनंद गुरु पायो, बहु मन वीर हरषायो । जृगुकछ पुरं चौमासी, रही करी बिनती साची ॥ चौ० ॥ ६ ॥

श्री जावनगर मंरूण श्री चंद्रप्रज जिन स्तवन ॥

(राग इंद्रसभा दादरो)

चंद्रवदन शुज चंद्र प्रजू ताहरा । देखी दिल शांत मन चकोर रीझे माहरा ॥ १ ॥ नयन युगल जये शांत रस ताहरा । प्रभु गुण कमल जमर मन माहरा ॥ २ ॥ प्रभू तोही ज्ञान सोही मान सर ताहरा, जहां मनहंस खेले रातदीन

माहरा ॥ ३ ॥ प्रभू करुणा दृष्टि हमसे नई ताह-
री । तब मद मोह किसी निंद खुली माहरी
॥ ४ ॥ अति उत्कंठसें में दर्श .चाह ताहरा ।
करमके फंदेसें जो जाग्य खुले माहरा ॥५॥ जाव-
पुरे वास जया खास प्रभू ताहरा । सिद्ध हुवा
काज वीरविजय कहे माहरा ॥ ६ ॥

॥ श्रीशंखेश्वरपार्श्वजिन स्तवनम् ॥

(राग दादरो)

चितहर मारा शंखेश्वर प्यारारे ॥ चि० ॥
आंकणी ॥ प्रभु मोरी विनती दिलमें धारोरे, अ-
रज शीकारोरे भ्रांति निवारोरे ॥ शं० ॥ चि० ॥१॥
वेरण कुमति हुं जरमायोरे, करम वश आयोरे,
जवे भटकायोरे ॥ शं० ॥ चि० ॥ २ ॥ पुरव पुन्य-
उदे करी पायोरे, मनुष्यगति आयोरे, चित्त हर-
खायोरे ॥ शं० ॥ चि० ॥३॥ अब चरणोंकी सेवा

में पामीरे दील विसरामीरे ॥ शं० ॥ चि० ॥४॥ तुम प्रभु आतम आनंद दाईरे, वीरने सहाईरे, कर करुणाईरे ॥ शं० ॥ चि० ५ ॥



॥ श्रीतारंगाजीमंडनश्रीअजितजिनस्तवनम् ॥

(विषयोंके नेडे मत जाओ, ए देशी)

तारंग तीरथे सोहाय, तारंग तीरथे सोहाय ॥ प्रभु मेरोरे तारंग तीरथे सोहाय ॥ आंकणी ॥ मुलनायक श्री अजित जिनेश्वर, भेट्यां भव दुःख जाय ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ भव भव भटकत शरणे हुं आयो, अब तो रखोजी मोरी लाज ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ तारंग तीरथे भवि जन तारण, बैठे ध्यान लगाय ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ हुं अनाथ मुजको जो तारो, जगमें बहु जश थाय० ॥४॥ वीरविजयनी विनती एही, आवागमन निवार ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥



॥ श्री धुलेवा मंडन केसरियाजी स्तवनम् ॥

(राग सारंग)

हांहांरे वाला आज केसरियाजी भेटीया, धुलेवा मंडनरायरे । हांहांरे वाला भव्य करम परजालवा, वेगा. तुमे ध्यान लगायरे ॥ १ ॥ हांहांरे वाला वासर एटले न जाणीयो, तुमे तारण तरण जि-हाजरे । हांहांरे वाला भूल अनादिनी माहरी । अब भांगी दीन दयालरे ॥ २ ॥ हांहांरे वाला चौगति चौटे नाचियो, सांग धारी नव नव नाथरे । हांहांरे वाला भव नाटकमें नाचतां, प्रभु काढ्यो अनंतो कालरे॥३॥ हांहांरे वाला मोटे पुन्ये पामीयो । एह मानवनो अवताररे। हांहांरे वाला गाम नगर पुर ढुंढतां, तुं मिलियो धुलेवामांहीरे ॥ ४ ॥ हांहांरे वाला आज मनोरथ सवी फल्या, माहरो भव नाटक गयो दूररे। हांहांरे वाला ओछव रंग वधामणां, थयां वीरविजय भरपूररे॥५॥



श्री केसरियाजीस्तवनम् ।

(आज बधाइ वाजे छे, ए देशी)

नगर धुलेवामांही, जाई प्रभु आज केसरीयाजी जेटथावे ॥ नगर० ॥ आंकणी ॥ लोटपणे में खेलताजी, तुम हम नवले वेस । त्रिभुवन पदवी तुमे लहीजी, हमें संसारिके वेस ॥ के० ॥ १ ॥ अवसर लही अब विनवुंजी, तुम हो दीनदयाल । जे पदवी तुमने लहीजी, ते आपो महाराज ॥ के० ॥ २ ॥ दायक दान देतां थकांजी, नवी करे ढील लगार । इछित हरिचंदन दीएजी, तो तुमरी क्या बात ॥ के० ॥ ३ ॥ समरथ नहीं ते दानने जी, हरि हरादिक देव । जोग्य जाण कर जाचीयोजी, अब मिलीयो प्रभु मेल ॥ के० ॥४॥ सुणी अरजी सेवक तणीजी, चित्तमें चतुर सुजाण । आतम लक्ष्मी दिजीएजी, वीरविजयकुं दान ॥के०॥ ५ ॥



॥ श्रीआबुजीमंडन ऋषभजिन स्तवनम् ॥
(राग काफी)

भेट्यो अर्बुदराजरे आज सफल घमी भई ॥ भे० ॥ आंकणी ॥ नाभिनंदनजीके दरस सरससें, दूर गई मिथ्यावास । अनुभव ज्योत भई निज घटमें, त्रुटी भवकी पासरे ॥ अ० ॥ १ ॥ दीन उद्धार करण तुम सरिखो, नही दीठो इण संसार । प्रवहण प्रेरक जिम निरजामक, बांहे ग्रही तिम तारेरे ॥ आ० ॥ २ ॥ चौगति चुरण चौमुख जिनवर, अचल गढे मनोहार । दरिसण कर कर दुरित नासे, पाप गये परिहाररे ॥ आ० ॥ ३ ॥ तुम गुण केरा पार न पाउं, जिम जलधि हे अगाध । कल्पवृक्ष चिंतामणि छोमके, बाउल मा· दियो बाथरे ॥ आ० ॥ ४ ॥ छीण छीण पल पल नाथ, तुमारो ध्यान धरुं सुलतान । तुम गुण मकरंद पान कर कर, वीरविजय गुलतानरे ॥ आ० ॥५॥

॥ श्रीजीरामंडन चंद्रप्रभजिन स्तवनम् ॥

(आइ इंद्र नार कर कर शृंगार, ए देशी)

प्रभु अरज धार, मनमें विचार, तुम हो कृपाल, करो मारी सार, महसेन तात, लक्ष्मणा उर जायो ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ हुं हाथ जोड, कहुं मान मोड, महा पाप घोर, हे तेहनो जोर, हरो दुःखनी क्रोड, करो निज रूप जेसो ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ तुम हो दयाल, धरो बिरुद सार, मेरो भव संसार, काढो तेहथी बार, दीनाके नाथ, मेरी अरज सुणिजे ॥ प्रभु० ॥ ॥ ३ ॥ हुं रह्यो निराश, वस्यो गरभावास, महादुःख नीरास, जाणे नरकावास, अब मिलियो नाथ, दुःख हरा प्रभु मेरो ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ आज आणंद अंग, मनमें उमंग, जाणे पुनमचंद, शीतल अभंग, हे लंछन चंद, एसो चंद्र प्रभु दिठो ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ जीरानगर खास, प्रभु करे निवास, मन धरे जे आश, मीले मोक्ष वांस, लक्ष्मीके दास; विरविजे एम कह्यो ॥ प्रभु ॥ ६ ॥

॥श्रीजयपुर मंडन श्रीसुमतिजिनस्तवनम् ॥

(राग बरवा पीलु.)

साहिब सुमति जिनेश्वर स्वामी, सुण हो कृपानिधि अंतरजामी । काल अनादि चिहुं गति जामी, फीरतां आयो में शरणे तिहारी ॥ ॥ सा० ॥ गरज्ञावासमें अति दुःख ज्ञारी, उंधे मस्तक हुवोरे खुवारी । मोह करमकी हे गति न्यारी, जनम मरण नहीं छोडत लारी ॥ सा० ॥ २ ॥ तुम विन कोण करे मुज सारी, अब तो लो प्रभु खबर हमारी । जीव अनंते संसारसें तारी, पहोंचाम्हे प्रभु जक्ति मोजारी ॥ सा० ॥ ३ ॥ माहारी वेला मौन व्रत धारी, शोजा नहीं प्रभु इनमें तुमारी । तुम प्रभु तारक जग जयकारी, तुम पर वारी हुं जाउंरे हजारी ॥ सा० ॥ ४ ॥ तात मेघ मात मंगला तिहारी, वंश इक्ष्वागमें हुवो अवतारी । ज्ञाव सहित करे जक्ति तिहारी, ते होवे शिवरमणी

अधिकारी ॥ सा० ॥५॥ नगर जेपुरमें आनंदकारी, सुमति जिनेश्वर हे दातारी। लक्ष्मीविजय गुरु आणाकारी, वीरविजय मांगे भवपारी सा० ॥६॥



॥श्रीराणकपुर मंडन श्रीऋषभस्वामी स्तवनम्॥

(नेमीसर वनडेने गिरनारी जातां, ए देशी)

साजन हे राणकपुर महाराज, आज भले भेटिया हो राज, मिथ्या तिमिर अनादरो हो राज ॥ सा० ॥ दूर कीयो में आज, प्रभु मुख जोवतां हो राज ॥ प्र० ॥ सा० ॥१॥ सेवकरी एक विनति हो राज ॥ सा० ॥ अवधारो महाराय, दया करी माहरी हो राज ॥ द० ॥ सा० ॥ २ ॥ तस्कर च्यार भरामणा हो राज। लाग्या महारी लारके, वेगे निवारजो हो राज ॥ वे० ॥ सा० ॥३॥ काल अनादि लुंटियो हो राज ॥ सा० ॥ इण तस्करे मुज नाथ, वात कोण सांभले हो राज॥ वा० ॥

सा० ॥ ४ ॥ ज्ञान खड्ग मुज दिजिये हो राज ॥ सा० ॥ कीजीये सेवक सार वार करो माहरी हो राज ॥ वा० ॥ सा० ॥ ५ ॥ अब तुम चरणे आइने हो राज ॥ सा० ॥ भव भव संचित पाप, करम दल कोटसां हो राज ॥ क० ॥ सा० ॥ ६ ॥ धन धन मरुदेवी मातने हो राज ॥ सा० ॥ नाभिराय कुलहंस, वंस इक्वागनो हो राज ॥ वं० ॥ सा० ॥७॥ सेवक दुःखिया देखीने हो राज ॥ सा० ॥ मनमें आणी महेर, भवोदधि तारिये हो राज ॥ भ० ॥ सा० ॥ ८ ॥ आतम लक्ष्मी दिजिये हो राज ॥ ॥ सा० ॥ वीरविजयने आज, काज सरे माहरो हो राज ॥ का० ॥ सा० ए ॥

॥ श्रीगीरनारमंरूणनेमनाथजिनस्तवनम् ॥

मैं आज दरिसण पाया, श्री नेमनाथ जिनराया ॥ मैं ॥ आंकणी ॥ प्रभु शीवादेवीना जाया,

प्रजु समुद्रविजय कुल आया, करमोके फंद छोडाया, ब्रह्मचारी नाम धराया, जिने तोडी जगतकी माया ॥ जि० ॥ मैं० ॥ १ ॥ रेवतगिरि-मंडण राया, कल्याणक तिन सोहाया, दिक्षा केवल शिवराया, जगतारक बिरुद धराया, तुम बेठे ध्यान लगाया॥ तु० ॥ मैं० ॥ २ ॥ अब सुणो त्रिभुवन राया, मैं करमोके वश आया, हुं चतुर गति जटकाया, मैं दुःख अनंते पाया, ते गिणती नाही गणाया ॥ ते० ॥ मैं० ॥ ३ ॥ मैं गरजवास-में आया, उंधे मस्तक लटकाया, आहार सरस विरस भुक्ताया, एम अशुज करम फल पाया, इण दुःखसें नाही मुकाया ॥ इ० ॥ मैं० ॥ ४ ॥ नर-जव चिंतामणि पाया, तब च्यार चोर मिल आया, मुजे चौटेमें लुंट खाया, अब सार करो जिनराया, किस कारण देर लगाया ॥ कि० ॥ मैं० ॥ ५ ॥ जिने अंतरगतमें लाया, प्रजु नेम निरंजन ध्याया,

दुःख संकट विघन हठाया, ते परमानंद पद पाया, फेर संसार नहीं आया ॥ फे० ॥ मैं० ॥ ६ ॥ मैं दूर देशसें आया, प्रभू चरणे शीश नमाया, मैं अरज करी सुखदाया, तुम अब धारो महाराया, एम वीरविजय गुण गाया ॥ ए० ॥ ॥ मैं० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्रीराधणपुरमंमण श्रीऋषभजिनस्तवनम् ॥

(राग सारंग.)

चित्त चाहे सेवा चरणकी, प्रभुजी ऋषभ जिणंदकी ॥ चि० ॥ आंकणी ॥ चेतन ममता सबही छोमी, ए प्रभु सेवो एकमति । लोकातित स्वरूप ते जेहनुं, लेई वरो पंचमी गति ॥ चि० ॥ १ ॥ एक एक प्रदेशें अनंती, गुण संपतनी आवली । सुरगुरु कहेतां पार न पावे, एक अनेक मुखे करी ॥ चि० ॥ २ ॥ भव थकी अलगा छो प्रभु तुमही, भविजन ताहरा नामथी । पार भवोदधिनो ते पामे,

ए अचरिज मन छे अती ॥ चि० ॥ ३ ॥ तुम प्रभु तारक जग जयवंतो, नहीं जाएयो में डुरमती। मन वच काया थीर करीने, नहीं सेव्यो में एक रती ॥ चि० ॥ ४ ॥ अवसर पामी न करुं खामी, सीर धरुं प्रभुनी चाकरी । राधणपुरमंरूण डुःख खंरूण, सेवी वरो शिवसुंदरी ॥ चि० ॥ ५ ॥ वारवार विनवुं प्रभु तुमथी, जो अवधारो माहरी। आतम आनंद प्रभुजी दीजो, वीरविजयने मया करी ॥ चि० ॥ ६ ॥

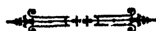
॥ श्रीसिद्धाचलजीनुं स्तवनम् ॥

(मनरी वातां दाखाजी महारा राज, ए देशी.)

प्रीतमजी सुणो दीलरी बात हमारी जी मारा राज ॥ आंकणी ॥ विमल गिरिंदकुं भेटो जी मारा राज । भव भवके संचित पाप करमकुं मेटो जी मारा राज ॥ प्रीत० ॥ १ ॥ पूरव नवाणुं वारा जो मारा राज । प्रभु रूषभ जिणंदा चरणे

चंध कर आया जी मारा राज ॥ प्री ॥ २ ॥
रुजादनी तरु गाया जी मारा राज । तुमे दिल
जर देखो रूषज जिणंदके पाया जी मारा राज॥
प्रीत० ॥ ३ ॥ पुंमरीक गणधर आदि जी मारा
राज । मुनि मुक्ति सधारे टाली सर्व उपाधि जी
मारा राज ॥ प्रीत० ॥ ४ ॥ प्रीतम तीरथ मोटुंजी
मारा राज । कांई ढील करोठो अमने लागे खोटुं
जी मारा राज ॥ प्रीत० ॥ ५ ॥ मिथ्या निंद
हठावो जी मारा राज। ए तीरथ जाके कुमतिके
गढ ढावो जी मारा राज ॥ प्रीत० ॥ ६ ॥
दुरजनरा जरमाया जी महारा राज । चेतनजी थे
तो चौगतीमें जटकाया जी मारा राज ॥ प्रीत०॥७॥
ह पावन तीरथ पामी जी मारा राज । सब दुःखके
चूरण मत करजो तुमे खामी जी मारा राज ॥
प्रीत० ॥ ८ ॥ चितमामें नित्य ध्यावोजी मारा
राज । गिरिवरके फरसी परमानंद पद पावो जी

मारा राज ॥ प्रीत० ॥ ए ॥ सुमता सखीरी वाणी मारा राज । तुम चित्तमां धरजो वरजो शिव पटराणी जी मारा राज ॥ प्रीत० ॥ १० ॥ गुण गावे मिली देवाजी मारा राज । वीर विजय मांगे आतम लक्ष्मी मेवा जी मारा राज ॥ प्रीत० ॥ ११ ॥



॥ श्री जिरामंरूणचिंतामणीपार्श्वस्तवनम् ॥

(राग दादरो ठुमरी भेद)

दिल विसरामी चिंतामण स्वामी रे ॥ टेक ॥ मोहन मुरती पाशजी तोरी रे, अवर न जोरीरे, चित्त लीयो चोरी रे ॥ चिं० ॥ १ ॥ अंतरगतकी अंतरज़ामी रे, कहुं शीर नामीरे, सुनो मेरे स्वामीरे ॥ चिं० ॥ २ ॥ मोहरायने मेनुं दुःख दीया रे, सबी लुट लीयारे, जुलम ही कीयारे ॥ चिं० ॥ ३ ॥ तुम बिन कौन सुने प्रभु मोरी रे, शरण गत्त तोरी रे, खबर लियो मोरोरे ॥ चिं० ॥ ४ ॥

दासकी आश प्रभु पाशजी पूरोरे, करम सब चूरोरे, बजे जय तूरोरे ॥ चिं० ॥ ५ ॥ वीरविजय कहे पाशजी पायोरे, जीरे जब आयोरे, दुःख विसरायोरे ॥ चिं० ॥ ६ ॥

श्री पट्टीमंडनपार्श्वजिनस्तवनम् । १

कर ले पारश संग । प्रभु हे अनंग नंग । कंचन कामनी संग । कमले क्युं थावदांजी ॥ क० ॥ १ ॥ मनुष्य जनम आंदा ॥ निंदमें क्युं सोई रेंदा । शुपनशी माया तेनु । फेर नहीं पावदांजी ॥ क० ॥ २ ॥ प्रभु हे पुरनचंद । अश्वसेन राय नंद । धन दिन आज साझा । प्रभू . घर आवदांजी ॥ क० ॥ ३ ॥ शीफत करां में केती । जिव्हान तो नांही रेंदी । सुर गुरु गुण तुं सांदा । पार नहीं पावदां जी ॥ क० ॥ ४ ॥ मनके मोहन पामीं, पुरतो पट्टी के स्वामी । अब तो न रखो खामी । वीरविजे गावदांजी ॥ क० ॥ ५ ॥

॥ श्रीघोघामंभ्रण नवखंडा पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

घनघटा ज्युघन रंग छाया, नव खंभा पासजी पाया ॥ आंकणी ॥ प्रभु कमठ हठीकुं हठाया, त्रि- षधर परजलती काया। दिल दया धरी के छोमाया। सेवक मुख मंत्र सुणाया। क्षणमें धरणेंद्र बनाया ॥ घ० ॥ १ ॥ में और देवनकुं ध्याया। सब फो- गट जनम गमाया। सुनो वामा राणीका जाया। कुछ परमारथ नहीं पाया। ज्युं फुटा ढोल बजाया ॥ घ० ॥ २ ॥ सुणी चामीकर भरमाया। में पी- तल हस्ते पाया। मुजे हुवा बहु दुःखदाया। कर- मोंने नाच नचाया। इस विध धक्के बहु खाया ॥ घ० ॥ ३ ॥ घोघा मंभ्रण सुख दाया। जग बहु उपकार कराया। नवखंभा नाम धराया। में सुणकर शरणे आया। उद्धार करो महाराया ॥ घ० ॥ ४ ॥ हुवा चतुरमास मुज आया। किस कारण अब बेठाया। थो मन बंछित सुख दाया। हुं प्रेमे प्रणमुं पाया।

सेवकका काज सराया ॥ घ० ॥५॥ शर युगँ निधिं इंदु कहाया। जला आश्विन मास सोहाया। दीवाली दिन जब आया। में आतम आनंद पाया। एम वीरविजय गुण गाया ॥ घ० ॥ ६ ॥

॥ स्तवन बीजुं ॥

नवखंका स्वामी । आप बिराजो घोघा शहेरमें, हांहां रे घोघा शहेरमें ॥ नव० ॥ आंकणी ॥ देश देशके यात्री आवे, पूजा आंगी रचावे। नवखंकाजी नाम समरतां। पूरण परचा पावेजी ॥ नव० ॥ १ ॥ अश्वसेन वामा सुत केरी, मूरति मोहनगारी। चंद्र सूरज आकाशे चकिया, तुम रे रूपसें हारीजी ॥ नव० ॥ २ ॥ मुखने मटके लोयण लटके, मोह्यां सुर नर कोमी। और देवनकुं हम नहीं ध्यावें, एम कहे कर जोमीजी ॥ नव० ॥ ३ ॥ तुं जगस्वामी अंतरजामी, आतमरामी मेरा। दिल

विसरामी तुमसें मांगु, टालो नवका फेराजी ॥ नव० कल्पवृक्ष चिंतामणि आशा, पूरे नहीं जरू नाषा। तीन भुवनके नायक जिनजी, पूरो हमारी आशाजी ॥ नव० ॥ ५ ॥ दायक नायक तुम हो साचा, और देव सब काचा। हरि हर ब्रह्म पुरंदर केरा, जूठे जुठ तमासाजी ॥ नव० ॥ ६ ॥ नटक नटक घोघा बंदरमें, दर्शन दूर्लन पाया। वीरविजय कहे आतम आनंद, आपो जिनवर रायाजी ॥नव०॥७॥

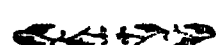


॥ सणखतरा मंरून श्रीधर्मनाथ जिनस्तवनम् ॥

(राग कानडा)

और न ध्याउं मैं और न ध्याउं॥ धरम जिणंदसें लगन लगाउं ॥ ध्यान अगनसें करम जलाउं। विनमें परमातम पद पाउं ॥ औ० ॥ १ ॥ लोह पारशको संगम पाई। हेम रूप धारत भेरे नाई ॥ नज ले धरमनाथ एक वारा। आतम हित

करं ले तुं प्यारा ॥ ऑ० ॥ २ ॥ इन बिन और देव नहीं दूजो । विधिसें धरम जिणंदकुं पूजो ॥ मनमें ध्यान धरो एक धारा । कामित फलके दे-वन हारा ॥ ऑ० ॥ ३ ॥ नूतनं मंदिर आप प-पधारो । एही सेवक अरजो अवधारो ॥ घंटारव नौबत जब गाजे । तब सेवकको आनंद जागे ॥ ऑ० ॥ ४ ॥ पुरव पुन्य दरिशण पायो । जब में हेमनगरमें आयो । वीरविजयकी विनती एही । आतम आनंद मुजको देही ॥ ऑ० ॥ ५ ॥



श्रीहुशियारपुरमंडन श्रीवासुपूज्यजिनस्तवनम् ।

(राग खमाच)

॥ आज दुविधा मेरी मिट गई, ए देशी ॥

वासुपूज्य जिनराज आज मेरो मन हरली-नोरे ॥ आंकणी ॥ वासव वंदित पद कज छंद । वसुपूज्य राजाके नंद । भविक कमल विकासी

चंद, तनू रक्त रंगीलोरे ॥ वा० ॥ १ ॥ कामित पूरण सुरतरु कंद । कठिन करमका काटे फंद । अरज करुं अति जाग्य मंद । कुछ दया दिल ल्यावोरे ॥ वा० ॥ २ ॥ फसियो मोह दशा महा फंद । अब काढो प्रजु करुणावंत । चरण शरण मागुं अमंद । क्युं देर लगावोरे ॥ वा० ॥ ३ ॥ तारक प्रजुजी जग जयवंत । तार्ये तुमने संत अनंत । मुज कीरपा कीजो जदंत । निज बिरुद संजालोरे ॥ वा० ॥ ४ ॥ जव जव जमियो में जगवंत । तुम दरिशण बिन काल अनंत । नगर हुस्यारपुरेमें चंग, प्रजु दरिशण पायोरे ॥ वा० ॥ ५ ॥ संवत् नेत्र[२] बाण[५] निधि[९] चंद[१], आसु शुक्र द्वितीया दिन चंग । वीरविजय मागे अजंग । आतम पद दीज्योरे ॥ वा० ॥ ६ ॥



॥ श्रीअमृतसरमंडनअरजिनस्तवनम् ॥

श्री अरजिन अंतरजामी । तुमसे कहुं सीर नामी । करुणा दृग् मोये करना । ज्युं वेगे हुवे तरनाजी ॥ श्री० ॥ १ ॥ धनं दोलत माल खजाना । नहीं मागुं त्रिभुवन राना । मन भमरेकुं ए आशा । तुज पद पंकजमें वासा ॥ श्री० ॥ २ ॥ ए दुषम काल दुःखदाई । तुज मुरती है सुखदाई । नहीं कुमतिके मन भाई । हुवे दुरगत के सहाई ॥ श्री० ॥ ३ ॥ कुपंथ जिनोने धारे । दुरगतिमें गये बिचारे । जिने तुम आज्ञा नहीं कीनी । तिन पाप पोट सीर लीनी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ अमृतसर मंडण स्वामी । घट घटमें तुं विसरामी । तोरी आज्ञा सिर पर धारी । हुं वेग वरुं शिव नारी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ निधिं युगं निधिं इंदु.वरसे, मास कार्तिक शुक्ल पक्षे । तिथि प्रतिपदा गुण गाया । ए वीरविजय सुख दाया ॥ श्री० ॥ ६ ॥



॥अथ अमृतसरमंमनशीतलजिनस्तवनम् ॥

चलो खेलिये होरी । शीतल जिन नाथ जयोरी ॥ च० ॥ आंकणी ॥ आये वसंत फूली वनराजी । जमर गुंजार जयोरी । माकंद मंजर सुंदर चारवी । कोकिल शोर थयोरी । मेरो मन अति उल्लस्योरी ॥ च० ॥१॥ मोघर चंपक केतकी फुली । और फुली चित्रवेली । चंबेली मुचकुंद ज फुली । दमनक कलियां मोरी । प्रभु की पूजा रचोरी ॥ च० ॥२॥ कुसुमाजरण करी प्रभु पूजो । ज्युं पामो जव पारी । केसर रंग के तिलक लगावो । धुप घटी विरचावो । जवो तुमे जावना जावो ॥ च० ॥३॥ ताल मृदंग विण डफ बाजत । भुंगल गाजत जेरी । गीत नृत्य प्रजुजी के आगे । करत मिटत जवफेरी । वसंतकी बाहार जलेरी ॥ च० ॥ ४ ॥ नंदानंदन जवदुःख कंदन । नाम से शीत भयोरी । शौच करत विचारो चंदन ।

नंदन वनमें गयोरी । जाको मान भंग थयोरी ॥ च० ॥५॥ ढुंढत ढुंढत शहेर सुधामे । शीतल नाथ मिल्योरी । विरविजय कहे आतम आनंद, आज हमारे थयोरी । दरशसें पाप गयोंरी ॥ च० ॥६॥

॥ अथ हस्तिनापुर स्तवनम् ॥
(राग होरी)

चालो खेलिये होरी जिहां जिन कल्याणक भयेरी ॥ चा० ॥ टेक ॥ सुंदर हस्तिनापुर है । कुरु देस मोझारी । जिहां जिन तिनके कल्याणिकका । कथन हे सूत्र मोझारी । सब जीवन हितकारी ॥ चा० ॥ १ ॥ शांतिनाथ श्रीकुंथुनाथजी अर जिन अंतरजामी । च्यवन जनम दीक्षा ने केवल । पाये प्रभु धारी । कल्याणिक जग सुखकारी ॥ चा० ॥ २ ॥ दो विध चक्री पद सुख भोगी । ते प्रभु आनंदकारी । समेतशिखर जाइ ध्यान लगाई । लीनी शिव पटराणी । करमक्षय-

सें ज्ञवपारी ॥ चा० ॥ ३ ॥ तीरथयात्रा करो शुन्न न्नावें । समकित निरमलकारी । जनम जनमके पाप निवारी । आतमके हितकारी । सदा सुखके दातारी ॥ चा० ॥ ४ ॥ शहेर दिल्लीसें यात्रा करनकुं । संघ सकल मिल आये । श्री श्री हस्तिनागपुरमें । धवल मंगल वरताये । पूजासें आनंद पाये ॥ चा० ॥ ५ ॥ संवत् भुवन[३] बाण[५] निधि[९] इंदु[१] । फाल्गुन शुदि सुखकारी । गुरुवार प्रतिपद जयकारी । वीरविजय हितकारी प्रन्नु न्नेटथां न्नवपारी ॥ चा० ॥ ६ ॥



॥ श्री मांकवगढमंकन श्रीसुपासजिनस्तवनम् ॥

(पानीहारीकी देशी)

मांडवगढमें बिराजता माहारा वालाजी ॥ मा० ॥ स्वामी सुपास जिणंदा ॥ वा० ॥ तिण कारण तीरथ वकुं ॥ माहा० ॥ न्नूमंकल प्रचंक ॥

वा० ॥ १ ॥ विषम पहाड़ झाड़ी घणी ॥ मा० ॥ दर्शन दुर्लभ देव ॥ वा० ॥ पुन्य विना पावे नहीं ॥ मा० ॥ मांडव मंडन सेव ॥ वा० ॥२॥ तीरथ महिमा अति घणो ॥ मा० सांभली लाभ अ-पार ॥ वा० ॥ जात्री जन आवे घणा ॥ मा० ॥ करवा भवनो पार ॥ वा० ॥३॥ लाभ लेवा जात्रा-तणो ॥ मा० ॥ रतनपुरीको संघ ॥ वा० ॥ मांड-वगढ प्रति निकले ॥ मा० ॥ बहु आंडबर चंग ॥ वा० ॥ ४ ॥ संघवी डुंगरसो भला ॥ मा० ॥ उस-वंस भूपाल ॥वा०॥ लुणिया गोते जाणिये । मा० । करता पर उपगार ॥ वा० ॥ ५ ॥ विजयकमलसूरि तिहां ॥ मा० ॥ दस मुनिके परिवार ॥ वा० ॥ साधवी श्रावक श्रावीका ॥ मा० ॥ ठाठ घणो बहु लार ॥ वा० ॥ ६ ॥ चउविध संघ शोभा घणीं ॥ मा० ॥ मुख वरणी नहीं जाय ॥ वा० ॥ मोतीजी कटारिया ॥ मा० ॥ आगेवानी थाय ॥

वा० ॥ ७ ॥ अनुक्रमे आवि विराजिया ॥ मा० ॥ धारा नगरीके मांय ॥ वा० ॥ चैत्य जुहारी तिहां बहु ॥ मा० ॥ उलट अंग न माय ॥ वा० ॥ ८ ॥ पूरव पुन्ये आवीया ॥ मा० ॥ मांडवपुरके मांय ॥ वा० ॥ श्रीसुपास जिन भेटिया ॥ मा० ॥ जेहनी शीतल छांह ॥ वा० ॥ ९ ॥ [1]शशी [6]रस [9]निधि [1]शशी वत्सरे ॥ मा० ॥ फाल्गुन मास प्रमाण ॥ वा० ॥ कर्मवाटी ए चतुर्दशी ॥ मा० ॥ कृष्णपक्ष-की जाण ॥ वा० ॥ १० ॥ सूर्यवारे सुखिया थया ॥ मा० ॥ भेटी प्रभुका पाय ॥ वा० ॥ वीरविजय कहे दी-जिये ॥ मा० ॥ आतम हित सुखदाय ॥ वा० ॥ ११ ॥



॥ श्रीसमेतशीखरजीनुं स्तवन ॥ १ ॥

वस गीया वस गीया वस गीयारे मेरा मनवा । मेरा मनवा शीखर पर वस गीयारे ॥ मे० ॥ आंकणी ॥ समेतशीखर गिरिवर को भेटी ॥

आनंद हृदयमें ज्नर गीयारे ॥ मे० ॥ १ ॥ धन्य घमी दिन आज हमारो। तीरथ जेटी तर गियारे ॥ मे० ॥ २ ॥ वोसे टुंके वीस जिनेश्वर। अजि-तादि प्रज्नु चरु गीयारे ॥मे० ॥३॥ अणशण करके कारज अपना । योग समाधीसे कर लीया रे ॥ मे० ॥ ४ ॥ अनंतबली जिनवरको जाणी। मोहराय पिण कर गिया रे ॥ मे० ॥ ५ ॥ करम कटण कल्याणिक जूमि। सब जिनवर जो कह गयारे ॥ मे०॥६॥ पुन्योदयसें पास शामला। समेत-शिखर पे दरश कियारे ॥ मे० ॥७॥ वीरविजय कहे तीरथ फरसो। आतम आनंद ले लिया रे ॥मे०॥८॥

श्रीसमेतशिखरजीनुं स्तवन ॥ २ ॥

तीरथनी आशातना नवी करीये, ए देशी ॥

समेतशीखरनी जातरा नित्य करिये। नित्य करियेरे नित्य करिये। नित्य करिये तो दुरित नो-

हरिये । तरिये संसार ॥ समे० ॥ १ ॥ शिववधु वरवा आविया मन रंगे । विश जिनवर अति उछरंगे । गिरी चढिया चढते रंगे । करवा निज काज ॥ समे० ॥ २ ॥ अजितादि वीश जिनेश्वरा वीश टुंके । कीधुं अणशण कीरिया न चुके । ध्यान शुक्ल हृदयथी न मूके । पाया पद निरवाण ॥ समे० ॥ ३ ॥ शिव सुख भोगी ते थया जिनराया । भांगे सादि अनंत कहाया । पर पुद्गल संग छोडाया । धन धन जिनराय ॥ समे० ॥ ४ ॥ तारण तीरथ तेहथी ते कहीये । नित्य तेहनी छांया रहीये । रहिये तो सुखिया थइये । बीजुं शरण न होय ॥ समे० ॥ ५ ॥ ओगणिसे बासठ माघनी वदी जाणो । चतुर्दशी श्रेष्ठ वखाणो । हमे भेट्यो तीरथनो राणो । रंगे गुरुवार ॥ समे० ॥ ६ ॥ उत्तम तीरथ जातरा जे करशे । वली जिन आज्ञा शिर धरशे । कहे वीरविजय ते वरशे । मंगल शिवमाल ॥ समे० ॥ ७ ॥

॥ श्रीसमेतशिखरजीनुं स्तवन ॥ ३ ॥

(रहेने रहेने रहेने अलगी रहेने, ए देशी)

भेटो भेटो भेटो भवियण भेटो । समेतशीखर गिरि भेटो ॥ भ० ॥ जनम मरण दुःख मेटो ॥भ०॥ आंकणी ॥ मोहरायने विवर दियो जब। भाग्योदय थयो बलियो। पूरव पुन्ये आज हमारे। तीरथ मेलो मलियो ॥ भ० ॥ १ ॥ आज हमारे सुरतरु प्रगट्यो। मनना मनोरथ फलिया। समेतशिखर गीरिवरने भेटी । भवना फेरा टलिया ॥ भ० ॥२॥ भवोदधि तरिये पार उतरिये । तीरथ कहिये तेह । पुन्यतणा तो पोठी भरिये । तेहमां नहीं संदेह ॥ भ० ॥ ३ ॥ स्वपरिवारे वीस जिनेश्वर। समेतशिखर गीरि चढिया। कास क्रोध मद मोह निवारी । समता रसना भरिया ॥ भ० ॥ ४ ॥ अजित संभव अभिनंदन सुमति । पद्मप्रभुजी जाणो । सुपास चंद्रप्रभु बे

सुविधि । शीतल जिनने वखाणो ॥ ज० ॥ ५ ॥ श्रीश्रेयांस विमल ने अनंत जिन । धर्म जिनेश्वर कहिये । शांति कुंथु अर जिनवरनी । जक्ति करी शिव लहिये ॥ ज० ॥ ६ ॥ मल्लिनाथ ने मुनि सुव्रत जिन । नमि पार्श्व गुण जरिया । वीसे टुंके वीस जिनेश्वर । अणशण करी शिव वरिया ॥ ज० ॥ ७ ॥ वीस प्रभु निरवाण थयाथी, वीस कल्याणिक जाणो । पावन तीरथ तेहथी कहिये । शंका मन नहीं आणो ॥ ज० ॥ ८ ॥ तीरथ सेवा सद्गति आपे । कहे सिद्धांत नहीं खोटुं । समकीत शुद्ध थवानुं कारण । ए तीरथ छे मोटुं ॥ज०॥ ए ॥ जात्रा करवा शिव सुख वरवा । संघ सकल हवे मलिया । स्वपरिवारे चकते जावें । लश्करथी निकलियो ॥ ज० ॥ १० ॥ शेठजी नथमल्ल वाघमल्लजी । लश्कर शहेरना जाणो । गोलेछा जो गोते कहिये । श्रावक श्रेष्ट वखाणो ॥ ज० ॥ ११ ॥



शेठजी नगीनचंद कपूरचंद । सुरत शहेरना क-
हीये । ललुभाइने दलसुखभाई । फुलचंदभाइने
लहिये ॥ भ० ॥ १२ ॥ भगवानसिंहजी भक्ति
करता । संघ सकल हवे चाले । काशी आदि
तीरथ करता । समेतशीखरजी आवे ॥ भ० ॥
१३॥ ओगणिसे बासठ माघ वदीनी । चतुरदशी
गुरुवारे । तीरथ भेटी जे आनंद लीधो। केवल-
ज्ञानी ते जाणे ॥ भ० ॥ १४ ॥ संघनी सहाजे
हमे भली भाते। जात्रानुं फल लीधुं । वीरविजय
कहे आज हमारा। मननुं कारज सिध्युं ॥भ०॥१५॥



॥ श्रीमहावीरजिनस्तवनम् ॥ १ ॥

महावीर महावीर भज ले तुं भाई। महा-
वीर. विन है न कोई सहाई ॥ मा० ॥ आंकणी ॥
मनुष्य जन्मकी करले कमाई । सिद्धारथ सूनु
भगा ले तुं सांई ॥ मा० ॥ १ ॥ निष्कारण बंधु

परम सुखदाई। महावीरजीकी है एही बमाई ॥ मा० ॥ २ ॥ स्वारथकी तुं बोमदे मात पित जाई। इनांसे न होगी तुज कुछ जलाई ॥ मा० ॥ ३ ॥ देखो दुनियांकी है कैसी सगाई। सबी लुंट लेवे ओ अपनी कमाई ॥मा०॥४॥ बोम सब मोह लोह दुःखदाई। शरण कर वीरविभु मेरे जाई ॥मा०॥५॥



॥ श्रीपावापुरीमहावीरजिनस्तवनम् ॥ २ ॥

हर लिया हर लिया हर लियारे, मेरा मनवा महावीरजीने हर लियारे ॥ आंकणी ॥ विचरता वीर जिनेश्वर आया। पावापुर पावन कीयारे ॥ मे० ॥ १ ॥ सुरवर समोवसरणकी रचना। करी जक्तिमें जर गीयारे ॥ मे० ॥ २ ॥ सिंहासनपें प्रभुजी बिराजी। देशना अमृत वरसियारे ॥ मे० ॥ ३ ॥ सोल पहोर प्रभु देशना दीनी। अवसर अणशणका लीयारे ॥ मे० ॥४॥

सर्वसमाधी अणशण पाली । मन वच काया वस कीयारे ॥ मे० ॥ ५ ॥ शिववधु वरिया भवोदधि तरिया । पारंगतका पद लियारे ॥ मे० ॥ ६ ॥ मोक्ष कल्याणिक महोछव जाणी । इंद्रादिक सब मिल गीयारे ॥ मे० ॥ ७ ॥ बडे ठाठसें महोछव करके । नाम पावापुरी कह गियारे ॥ मे० ॥ ८ ॥ तीरथ भेटी भवदुःख मेटी । आतम आनंद ले लियारे ॥ मे० ॥ ९ ॥ ओगणिस बासठ माघ शुदकी । पंचमी दिन पावन थियारे ॥ मे० ॥ १० ॥ वीरविजय कहे वीर जिणंदका । दर्शन बिन हम रह गयारे ॥ मे० ॥ ११ ॥

॥ कलकत्तामंडनमहावीरजिनस्तवनम् ॥ ३ ॥

रानी त्रिशलादे नंदारे वीर जिणंदा । सिद्धारथ कुल नभ चंदा रे सुखकोरे कंदा ॥ रानी० ॥ आंकणी ॥ जब जन्मे जिनवर राया । छप्पन

कुमरि हुलराया । हरि हरष धरी तब आयारे ॥ वीर० ॥ रानी० ॥ १ ॥ हरि पंचरूप बन जावे । प्रभु मेरुशीखर पे ल्यावे । करे जनम महोच्छव भावेरे ॥ वीर० ॥ रानी० ॥ २ ॥ अभिषेक कलस कर धारी । करे प्रभु नवणकी त्यारी । हरि शंका दिलमें धारीरे ॥ वीर० ॥ रानी० ॥३॥ प्रभु जनमतही हे नाणी । मन शंका शक्रकी जाणी । तब मेरु कंपायो ताणी रे ॥ वीर० ॥ रानी० ॥ ४ ॥ चमके सब सुरवर राया । शंका मन दूर कराया । करी महोच्छव आनंद पायारे ॥ वीर० ॥ रानी० ॥५॥ धन्य वीर जिनेश्वर स्वामी । तुं बालपणे भये नामी । तुम गुणमें को नहीं खामीरे ॥ वीर० ॥ रानी० ॥६॥ कलकत्ता मंरून राया । बैठे प्रभु ध्यान लगाया । में दर्श बगिचे पायारे ॥ वीर० ॥ रानी० ॥ ७ ॥ ओगणिसें त्रेशठ भाया । कार्तिक पुनम दिन आया । एम वीरविजय गुण गायारे ॥ वीर० ॥ रानी० ॥ ८ ॥

॥ आगरामंमन श्रीचिंतामणजिनस्तवनम् ॥

(राग कनडा शियाना)

चिंतामणजी पास मोहे प्यारा। मन वंछित-के पूरण हारा। नाम मंत्र जपलो एकवारा। कठिन करमके चुरनहारा ॥ चिं० ॥ १ ॥ अरज एक प्रजुजीसें मोरी। सेवा चाहु में जव जव तोरी। लक्ष चौरासी रुलता में आया। पूरव पुन्य चिंतामणि पाया ॥ चिं० ॥ २ ॥ और देवन को सेवा में कीनी। पापकी गठमी में सीर लीनी। कह्यो रे न मान्यो कुमति वस किसको। प्यालो न पीयो अमृत रसको ॥ चिं० ॥ ३ ॥ और देवनकुं कबहुं न मानुं। सच्चा पास चिंता-मणि जानुं। प्रभुके चरण शरण कर लीनी। और देवनकुं जलांजली दिनी ॥ चिं० ॥ ४ ॥ आगरा मंमन सब दुःख खंमन। पास चिंता-मणि शीतल चंदन। वीरविजय कहे तपत. बु-

ऊावो। नाम जगतमें हे तुम चावो ॥ चिं०॥५॥ जुग[४] रस[६] निधि[९] इंदु[१] वत्सरमें। मास नाद्र-पद शुक्ल पक्षमें। दिन संवच्छरीका जब आया। चिंतामणि पास गुन गाया ॥ चिं० ॥ ६ ॥



॥ श्रीअंबालामंडन श्रीसुपासजिनस्तवनम् ॥

क्युं न हो सुनाई स्वामी। ऐसा गुना क्या कीया ॥ आंकणी ॥ औरोंकी सुनाई जावे। मेरी वारी नाहीं आवे। तुम विन कोन मेरा, मुजे क्युं नूला दिया ॥ क्युं० ॥ १ ॥ नक्त जनों तार दीया, तारनेका काम कीया। विन नक्ति वाला मोंपे। पक्षपात क्युं लिया ॥ क्युं० ॥ २ ॥ राव रंक एक जानो। मेरा तेरा नहीं मानो। तरन तारन ऐसा। बिरुद धार क्युं लिया ॥ क्युं० ॥३॥ गुना मेरा बक्ष दिजे। मोपें इति रहेम कीजे। पक्काही नरोंसा तेरा। दिलोमें जमा लिया ॥

क्युं० ॥ ४ ॥ तुही एक अंतरजामी । सुनो श्री सुपास स्वामी । अब तो आशा पूरो मेरी । कहेना सो तो कह दीया ॥ क्युं० ॥ ५ ॥ शहेर अंबाले भेटी । प्रभुजीका मुख देखी । मनुष्य जनमका लाहा । लेना सो तो ले लीया ॥ क्युं० ॥ ६ ॥ उन्निसो गुणसठ भविला । दीपमाल दिन रंगिला ॥ कहे वीरविजे प्रभु । भक्तिमें जगा दिया ॥ क्युं० ॥ ७ ॥

॥ श्रीचंपामंडनवासुपूज्यजिनस्तवनम् ॥

चंपामंडन सुखदाया । श्री वासुपूज्य जिन राया ॥ आंकणी ॥ प्रभू जयादेवीके जाया । वसु रायंके वंस दीपाया ॥ मिल चौसठ इंद्रे गाया । में पुन्ये दरिसण पाया ॥ श्री० ॥ १ ॥ प्रभू पंच कल्याणिक जाया । च्युति जन्म वैराग्य भराया ॥ वर नाण परमपद पाया । मंगल चंपामें गवाया ॥

श्री० ॥ २ ॥ कल्याणिक भूमि जाणी । तिरथमें चंपा गवाणी । नगरीमें बन गई राणी ।ए महावीरकी वाणी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ तीरथकी महिमा जाणी । संघ यात्रा करे गुणखाणी । भूमंडल महिमा गवाणी । तीरथ भेटो भवी प्राणी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ यात्रा करनेकुं आवे । देस पूरवसे संघ ल्यावे । ताकी सोभा कहुं में भावें । सुणतां श्रद्धा चित्त आवे ॥श्री० ॥५॥ शहेर मुर्शिदाबाद कहाया। जिहां वसे धनपतसिंह राया । राणी मेनाकुमरी जाया । सुत महाराज बाहादुर राया ॥श्री० ॥६॥ मंत्रि बुद्धिके बलिया । गोपीचंद बाबु मलिया । हुल्लास बाबु मति जागी । संघ भक्ति करे बरुभागी ॥श्री०॥७॥ यात्राकी मरजी कीनी । तब गुरुसें आज्ञा लिनि । संघपति तिलक पद लीया । सूरिविजयकमलने दीया ॥ श्री० ॥ ८ ॥ संघवीकी सोभा भारी । संघवण कस्तुरकुमारी । हे पुन्यकी खुबी

न्यारी । चमके सकल नरनारी ॥ श्री० ॥ ए ॥ भेरी भंभा वजकावे । तब संघ सकल मिल आवे । गौरी मंगल गवरावे । सब जन चमते जावे ॥ श्री ॥ १० ॥ ओगणिसें त्रेसठ जाणो । मगसर शुदि नवमी वखाणो । शनिवारने सिद्धो जोगे । संघ निकले सुख संजोगे ॥श्री० ॥ ११ ॥ सेंपोद्-शत शकटानी । हस्ति घोमे गुलतानी । शेठ शा-हुकारने पाला । संघ लोक घणा मसराला ।.श्री० ॥ १२ ॥ सूरि विजयकमल गुण दरिया । एका-दस मुनि परिवरिया । उपदेस करे गुणरागी । जाके धरम वासना जागी ॥ श्री० ॥ १३ ॥ है चैत्य प्र-भुका संगे । संघ दरिसण करे मनरंगे । ऐसो विधि संघको जाणो । फेर नहीं मिले एहवो टाणो ॥ श्री० ॥ १४ ॥ अनुक्रमे चंपामें आया । ओगणिमें त्रेसठ भाया । पोसवदि एकादशी लीधी । बुधवारे यात्रा कीधी ॥श्री०॥१५॥ यात्रा करी आनंद लीया ।

नरभव बहु सफला कीया । आतम आनंद रस लीया । कहे वीरविजय भर पीया ॥ श्री० ॥१६॥

॥ श्रीहस्तिनापुरस्तवनम् ॥

(राग पीलु.)

चलोरी चलो तुम चमते रंगे । तीरथ यात्रा करो मन रंगे । तीरथ जात्रा जिनवर भाखी । इन बातनमें शास्त्र हे शाखी ॥ च० ॥ १ ॥ जिनवर कल्याणिक जिहां थावे । तीर्थंकर तीरथ फरमावे । जैन तीरथकी महिमा भारी । सब जीवनकुं हे हितकारी ॥ च० ॥ २ ॥ हथिणापुरमें हरष घनेरा । द्वादश कल्याणिक हे भलेरा । शांति कुंथु अर जिनवर केरा । दरश करनसें कटे भव फेरा ॥ च० ॥ ३ ॥ तीरथ जात्रा विधिशुं कीजे । मनुष्य जनमका लाहा लीजे । धरम करनमें देरी न कीजे। अमृत रस सोही झटपट पीजे ॥ च० ॥ ४ ॥ ए तीरथकी महिमा भारी । सुनके संघने किनी त्यारी । शहेर अंबालासें संघ च-

लियो । मनमोहन मानुं मेलो मलियो ॥ च० ॥
॥ ५ ॥ श्रावक जन सब संघकी सेवा । करता
भक्ति शिवसुख लेवा । अनुक्रमें हथिणापुरमें
आया । धवल मंगल आनंद वरताया ॥ च० ॥
॥६॥ इषु[५] रस[६] निधि[९] इंदु[१] वत्सरमें। चैत मास-
के कृष्ण पक्षमें । करमवाटी पंचमी दिन आना ।
जात्रा करी सब आनंद पाया ॥च०॥ ७ ॥ तीरथ-
सेवा नित्य नित्य कीजे। संसारमें नाही भमीजे
। वीरविजय कहे सुकृत कीजे । आतम आनंद
मुजको दीजे ॥ च० ॥ ८ ॥

॥ श्रीबीकानेरमंडनऋषभजिनस्तवनम् ॥

(तुम चिद्घन चंद आनंद लाल, ए देशी)

तुम आदि जिनंद मारुदेवानंद । अब
शरण लही प्रभु थारी ॥ आंकणी॥ प्रथम नरे-
श्वर प्रथम जिनेश्वर, प्रथम भये उपगारी॥मोरा०
॥ तु० ॥ १ ॥ लोक धरम मरजादाकारी । जुगलां
धरम निवारी ॥ मोरा० ॥ २ । संजमधारी वरस.

बिनआहारी । विचर्या उग्र विहारी ॥ मोरा०॥तु० ॥३॥ परिषह फोजकुं वेग विफारी । ज्ञान खङ्ग कर धारी ॥ मोरा० ॥ तु० ॥ ४ ॥ शुद्ध उपयोगी अद्भूत जोगी । विषय वासना वारी ॥ मोरा० ॥ तु० ॥ ५ ॥ अष्टापदपें आसन धारी । वरिया सदा शिव नारी ॥ मोरा० ॥ तुं० ॥ ६ ॥ प्रभुकी महीमा मुखसें कहिवा । जिन्नफली गई हारी ॥ मोरा०॥ तु० ॥७॥ वीकानेरमें आदि जिनंदकी। मूरति मोहनगारी ॥ मोरा० ॥ तु० ॥ ८ ॥ वीरविजय कहे प्रभुजी नेटी । दुरगति दुःख निवारी ॥ मोरा० ॥ तु० ॥ ९ ॥

॥ वीकानेर समोसरणका स्तवनम् ॥

(अपने पदको तजकर चेतन, ए देशी)

देखो प्रभुका अजब महोच्छव । कैसा ठाठ जमाया है । वीकानेरमें संघ सकल मिल। समोसरण विरचाया है ॥ दे० ॥ ॥ १ ॥ क्या कहुं मंडपकी शोभा । कहे बिन कोउ न रहेता है ।

देवलोकका एक निशाना । देखन वाला कहेता है ॥ दे० ॥ २ ॥ चौमुख समोसरण में सोहै । जिनवर मुज मन भाया है । दरिशण बाहाने देखो प्रभुकुं । कैसा ध्यान लगाया है ॥ दे० ॥३॥ चामर छत्र सिंहासन सोहै । झगमग ज्योति सवाया है । देख देखके प्रभु दरिशणकुं । नगर लोक सब आया है ॥ दे० ॥ ४ ॥ अजितनाथ प्रभुकी महिमाका । चमतकार ए पाया है । बीकानेर में आज अनोपम । धवल मंगल वरताया है ॥ दे० ॥५॥ गान तान सब साज मानसें । भेरी नाद बजाया है । तन मन धनसें ओच्छव करके । संघ सकल हरखाया है ॥ दे० ॥ ६ ॥ सपरिवारे विजयकमलसूरि । चतुरमास जब आया है । बीकानेरमें ओच्छव महोच्छव । अधिक अधिक झलकाया है ॥ दे० ॥७॥ ओगणिसें समसठ आशो सुदकी । पूर्णमासी दिन आया है । वीरविजय कहे प्रभु दरिशणसें । आतम आनंद पाया है ॥ दे० ॥ ८ ॥

॥ ओसियानगरीस्थ श्रीवीरजिनस्तवनम् ॥

(ए अरजी मोरी सैयां, ए देशी)

महावीरजी मुजरो लीजे । सेवककुं शरणा दीजे ॥ माहा० ॥ आंकणी ॥ तुं निष्कारण उपगारी । चंदनबालाकुं तारी । ऐसी नजर प्रभु कीजे । सेवककुं शरणा दीजे ॥ १ ॥ चंडकोसियो करमसें भारी । कीयो स्वर्ग तणो अधिकारी । युं बांह पकडकर लीजे ॥ सेव० ॥ २ ॥ संगमपे करुणा कीनी, उपसर्गमें दृष्टि न दीनी । प्रभु तारिफ केती कीजे ॥ सेव० ॥ ३ ॥ तुं ओसियामंडन स्वामी । पुन्ये प्रभु दरिशण पामी । कहे वीरविजय संग लीजे । सेवककुं शरणा दीजे ॥४॥

॥ अथ जेसलमेरस्थश्रीजिनस्तवनम् ॥

(जिनराज वधावोरे माणक मोती हीरा लालसुं, ए देशी)

जेसलमेर जावोरे जात्रा करण भवी भावसुं ॥ जिनराज जुहारोरे भाव भगती बहु मानसुं ॥ आंकणी ॥ जेसलमेरमें जिनवर केरा, चैत्य अनेक

भलेरा। चैत्य चैत्यमें सुंदर शोभे, अरिहंत बिंब घनेराजी ॥ जे० ॥ १ ॥ जैन तीरथ जेसलमेर जाणी। सरधा दिलमें आणी। देश देशके जात्री आवे। पुन्यवंत बहु प्राणीजी ॥ जे० ॥२॥ ओगणीसें सत्तसठ मगसर सुदकी। एकादशी सोमवारे। बीकानेरसें संघ निकलियो। सरव कुटुंब परिवारेजी ॥ जे० ॥ ३ ॥ चलते रंगे अति उछरंगे। संघ चतुरविध चाले। सपरिवारे विजयकमलसूरि। धरम देशना आलेजी ॥ जे० ॥४॥ संघवी शीवचंद शेठ सुराणा। संघवी पद हे पुराणा। जेसलमेरकी जात्रा जातां। आनंद हरष भराणाजी ॥ जे० ॥ ५ ॥ विकट पंथने विकट उजाड़ी। क्या कहुं उनकी कहाणी। कांटा भाठा भुरट झांखरां। पूरण न मिले पाणीजी ॥ जे० ॥ ६ ॥ ठाम ठाममें गाम न आवे। जो आवे तो धाणी। संघ मुकाम करे जंगलमें। डेरा तंबू ताणीजी ॥ जे० ॥७॥ दिनरात रस्तामें

पहेरा । देता चोंकीवाला । काढी मुंछाने मसं-
राला । हाथमें बंदूक भाला जी ॥ जे० ॥ ८ ॥
अनुक्रमे कठिण पंथ ओलंघी । विघनरहित सब
जावे । पोकरण फलोधी जात्रा करके । जेसल-
मेरमें आवेजी ॥ जे० ॥ ९ ॥ ओगणीसें सरूसठ
पोष शुदकी । दशमी मंगलवारे । जेसलमेरमें
जिनवर भेटया । आनंद मंगला च्यारेजी ॥ जे०
॥१०॥ तन मन धनसें जात्रा कीजे । नरभव लाहो
लीजे । वारवार अवसर नहीं आवे । सद्गुरुसें
सुणिजे जी ॥ जे० ॥११॥ करमरायने विवर दीयो
जब । भाग्योदय भया बलिया । वीरविजय कहे
आज हमारे । मनका मनोरथ फलियाजी॥जे०॥१२॥

॥ श्रीअंतरिक्षपार्श्वनाथजिनस्तवनम् ॥

मति विसरो पास जिनेश्वरकुं मति विसरो ।
मति विसरो अंतरिक्ष पारसकुं ॥ मति० ॥ आं-
कणी ॥ अश्वसेन वामाजीके नंदा । चरण सेवे
चौसठ इंदा ॥ मति० ॥ १ ॥ आसन धारे अधर

जिणंदा । पंचमकालमें सुखकंदा ॥ मति० ॥ २ ॥ सोहे अंतरिक्ष पास जिणंदा । ज्युं गगने सूरज चंदा ॥ मति० ॥३॥ चमतकार चौदिशमें चंदा ॥ आश पूरण सुरतरुकंदा ॥ मति० ॥ ४ ॥ ज्युं कमला दिलमें गोविंदा। ज्युं चकोर मनमें चंदा॥ मति० ॥ ५ ॥ त्युं मुज मनमें पासजिणंदा । नित्य रहो हरो दुःख दंदा ॥ मति० ॥ ६ ॥ भाग्यहीन प्रभु में मतिमंदा । नजर करो जिनवर इंदा ॥ मति० ॥ ७ ॥ रतनपुरी मालवमें सोहंदा । शेठ डुंगरसी गुणकंदा ॥ मति० ॥ ८ ॥ संघ निकाला हरष आनंदा । पुन्यवान् परगट बंदा ॥ मति० ॥ ९ ॥ ओगणिसें अडसठ वर्षे आनंदा । माघ कृष्ण द्वितीया नंदा ॥ मति० ॥ ॥ १० ॥ वीरविजय कहे पास जिणंदा । भेटी भया परमाणंदा ॥ मति० ॥ ११ ॥

॥ श्रीअजितजिनस्तवनम् ॥

अखियां तरुफ रही मेरी आजके । दरि-

शण देव दीजे। अखियां शांत कीजे ॥ १ ॥ अखियां बिन दरिशण जिनराजके । ऊुर ऊुर पानी वरसे। दरिशण खास तरसे ॥ २ ॥ अ-खियां काल अनंते बादके । तुम ठबी आज देखे। सब नये काज लेखे ॥३॥ अखीयां सफल नयी मेरी आज। अजित जिनराज ळेटे। सब ही पाप मेटे ॥ ४ ॥ अरजी वीरविजय की एह। अजित जिनराज लीजे। शिवपुर राज दीजे ॥५॥

॥ श्रीऊगमीयामंमनआदिजिनस्तवनम् ॥

(श्रीराग)

आदि जिन मूरति नयनानंद ॥ आंकणी०॥ क्या तारीफ करुं प्रत्तु तुमरी। दरिशण दिठे पर-माणंद ॥ आ० ॥ १ ॥ और सबी देवनकी ठबी आगे। तुम ठबी प्रभुजी सुखको कंद ॥ आ० ॥ २ ॥ सत् चित् आनंदरूप तुमारो । योगीश्वर सब ध्यान करंद ॥ आ० ॥ ३ ॥ पारंगत प्रत्तु तुम गुणवृंदको। त्रित्तुवनमें कोण पार लहंद ॥

आ० ॥ ४ ॥ शांत रसमय मूरति नेटी । नवि-जन नव संसार तरंत ॥ आ० ॥ ५ ॥ जग-मीयामंमन मुःखखंमन । काटो कठीण करम फंद ॥ आ० ॥ ६ ॥ वीरविजय कहे आदि जिनेश्वर । आयो प्रन्नुजी परमाणंद ॥ आ० ॥७॥

॥ श्रीगंधारमंमनश्रीचिन्तामणिपार्श्वजिनस्तवनम् ॥

मेरे तो चिन्तामणि प्रन्नु पारसजीका काम है जी ॥ ए आंकणी ॥ जलधि किनारे नारा, नगर गंधार सारा। चिंतामणि पास प्रन्नुका, उहां बमा धाम है जी ॥ मे० ॥ १ ॥ मूरति प्रन्नुकी मीठी, ऐसी ठबी नाही दीठी । शान्त सुधारस केरा, मानुं एक ठाम है जी ॥ मे० ॥ २ ॥ मुषम कालमें स्वामी, मुःखकी है नाही खामी ॥ आ-नंद समाधि दीजे, मुजे बमी हाम है जी ॥ मे० ॥ ३ ॥ अखूट खजाना तेरा, थोमा बहोत करदो मेरा । सुख जनकुं देना वे तो, प्रन्नु तोरा काम है जी ॥ मे० ॥ ४ ॥ बिरुद संनाल लीजे, मेरा

तेरा नाहीं कीजे। तरण तारण ऐसा, प्रभु तोरा नाम है जी ॥ मे० ॥ ५ ॥ वीर कहे सीर नामी, सुनो हो गंधारस्वामी ॥ देना हो तो ज्ञान देदो, दुजा नही काम है जी ॥ मे० ॥६॥ निधि[९] रस[६] [९]निधीन्दु[१] वर्षे, पोस मासे सित पक्षे। चतुर्दशी दिन भेटे, एही अभिराम है जी ॥ मे० ॥ ७ ॥

॥ श्रीसीनोरमंडनसुमतिजिनस्तवनम् ॥

सुखकारी, सुखकारी, सुखकारी, कृपानाथ हो जाउं वारी, सुमतिजिन सुमति सेवकने दीजियेजी ॥ ए आंकणी ॥ दरिसण देव दीजे, कुमतिकुं दूर कीजे॥ एही मागुंबुं हे दातारी॥ कृपा० ॥ १ ॥ कुमतिने कामण कीया, मुजको भरमाई दीया। इनसें छोडा दो हे सरदारी ॥कृपा०॥ २ ॥ पंचम अवतार लीया, दुनियाकुं तार दीया ॥ आशा पूरो कहुंबुं पोकारी ॥ कृपा० ॥ ३ ॥ निरादर नाहीं कीजे, बिरुद संभाल लीजे। तरणतारण हो हे अधिकारी ॥ कृपा० ॥ ४ ॥ सीनोर-

मंकन नामी, सुमति जिनेश्वर स्वामी ॥ बेडो उतारो प्रभुजी हमारी ॥ कृपा० ॥ ५ ॥ निधिं रस[६] निधिं चंदा, संवत् है सुखकंदा । वीरविजयकुं आनंदकारी ॥ कृपा० ॥ ६ ॥

॥ अथ विध विध पदो ॥ पद पहेलुं ॥

(नेम राजुल संबंधी पद—राग पंजाबी ठेको)

पीया कारण गढ गोरनार चली । राणी राजेमती व्रत चित्त धरी ॥ पी० ॥ १ ॥ अधिक प्रीत रस रीत जानके । नेम प्रिया कर सीर धरी ॥ पी० ॥ २ ॥ तप जप संजम ध्यानानलसें । करम इंधन परजाल चली ॥ पी० ॥ ३ ॥ नेम राजुलकी प्रीत पुराणी । अंतमें ज्योतीसें ज्योत मीली ॥ पी० ॥ ४ ॥ प्रह उगमते दंपती नामे । वीरविजय मन रंग रली ॥ पी० ॥ ५ ॥

॥ पद बीजुं ॥

मोरे मंदिरवा प्रभूजी न आये । नाये ऐसा जडुपति रथ फीराये ना हाथ मिलाये ॥ मो० ॥

आंकणी ॥ पशुवनपें प्रभू करुणा कीनी । क्या तकसीर मेनुं छड दीनी ॥ मो० ॥ १ ॥ नव भव-केरी प्रीत जो तोडी । सोकन शिव वधूसें दिल जोरी ॥ मो० ॥ २ ॥ राजुल राग द्वेषको छोडी । संयम लेइ करम बंध तोडी ॥ मो० ॥ ३ ॥ मन मान्यो मोक्ष सुख पाई । वीरविजय कहे धन्य कमाई ॥ मो० ॥ ४ ॥

॥ पद त्रीजुं॥

(मालकोष)

मेनुं छडके गिरनारी गये मेरे सांइ । मैं भूली नहीं जब पकडती दो बांही ॥ मे० ॥ १ ॥ था दिलों में दगा तब क्युं कीनी सगाई। मालिक मैंने कीनी क्या ऐसी बुराई ॥ मे० ॥ २ ॥ झूठी है बुरी है दुनियांकी सगाई । वैराग्य लियो है गिरनारीपें जाई ॥ मे० ॥ ३ ॥ बह्मा तप क-रके मोक्ष पद पाई। कहे वीरविजय धन्य उनकी कमाई ॥ मे० ॥ ४ ॥

॥ अथ वैराग्य पद ॥४॥

(राग सारंग)

घट जागी ज्ञान वैराग्यरी। तुम छंमो माया-जालरी ॥ घट० ॥ आंकणी ॥ एक सहस्त्र अंते-उर जाके। रूप रूपके आगरी। मिथिला राज्य छोमके निकसे। राजऋषि नमिरायरी ॥ घ० ॥ ॥१॥ रूवकी संपद सुरपति वरनी। चक्रि स-नतकुमाररी। छिनमें रोग नये निज तनमें। देखो कर्मकथा बरी ॥ घ० ॥२॥ देखत देखत सबही विनसत। तन धन अथिर स्वन्नावरी। ऐसी न्नावना न्नावतही मन ॥ छोम लियो वैराग्यरी ॥ घ० ॥३॥ सच्चा त्याग किये विन कबहु। पा-वत नहीं नवपाररी। पर परिणती त्यागो चेतन ॥ वीरवचन चित्त धाररी ॥ घ० ॥४॥

॥ अथ विविध सज्झायो ॥

॥ मुनिगुण सज्झाय ॥

हां देखो मुनिवर ममता मारी। नये पंच

महाव्रत धारी रे ॥ हां देखो० ॥ आंकणी ॥ हिंसा जुठ चोरीने वारी, ब्रह्मचर्य व्रत धारी रे; बाह्याभ्यंतर ग्रंथी निवारी, भोग तरसना डारी रे ॥ हां दे० ॥ १ ॥ तप शोषित तनु कृश धारी, जगजन आनंदकारी रे। पूजक निंदक दो शमकारी, भजते उग्र विहारी रे ॥ हां दे० ॥ २ ॥ राग द्वेषकी परिणती वारी, परिषह फोजकूं मारी रे। गुणश्रेणि गुणस्थानक धारी, ध्यानारूढ जय वारी रे ॥ हां दे० ॥ ३ ॥ शोक संतापको दूर निवारी, एकमगनता धारी रे। छिनमें निज आतमको तारी, भजते भवदधि पारी रे ॥ हां दे० ॥ ४ ॥ ऐसे मुनिवर हे व्रतधारी, आतम आनंदकारी रे। वीरविजय कहे हुं बलिहारी, नमुं नमुं सो सो वारी रे ॥ हां दे० ॥५॥

॥ गुरुदेवकी सज्झाय ॥

(रेखता)

विजय आनंद सूरि राया, पूरवले पुन्यसें

पाया । चतुरविध संघमें धोरी, गुरुजीसें वंद्ना मोरी ॥ वि० ॥ १ ॥ गुणषट्त्रिंशके धरता, अहो उपगारके करता । धरमकी टेक हे न्नारी, गुरु है बाल ब्रह्मचारी ॥ वि० ॥ २ ॥ गुरुजी ज्ञानके धरंता, कुमतके मानको हरता । देखके वादी सब ऊरता, न सन्मुख पेर को धरता ॥ वि० ॥ ३ ॥ शीतलता चंद्रमा जैसी, मेरु सम धीरता ऐसी । सायर गंन्नीर नहीं ऐसा, गुरु गंन्नीर है जैसा ॥ वि० ॥ ४ ॥ कंचन और काच सम माने, नारी-को नागिणी जाने ॥ अंतरगत मोह सब ढारी, गुरु उदासीनता धारी ॥ वि० ॥ ५ ॥ ऐसे गुरुराज-जी केरा, चरणमें चित्त हे मेरा । सेवक कहे वीर कर जोरु़ी ॥ लंघावो पार मुज वेरु़ी ॥ वि० ॥ ६ ॥

॥ कर्मविपाकसज्झाय ॥

(अडल छंद)

श्रीगुरुविजयानंद चंद वंदन करी, सुनो करमकी बात कहुं गुरुसे लही । सब डुःख देवन-

हार करम दुष्कृत तजो, शासनके शिरदार श्री
वीर चरण भजो ॥ १ ॥ तीर्थंकर बल चक्री हरि
नृप जे थया, कर्मतणे वश तेह सवी संकट लीया
आदीसर अरिहंत संत अनंत बली, एक वरस
बिन आहार भुख तरिषा सही ॥ २ ॥ विप्र घरे
अवतार वीर विभूने लीया, करम न छोडे लि
गार पूरव जो मद कीया। चक्री सनतकुमार रोग
बहुला लही, करमतणी गत जाय कहो ते किम
कही ॥ ३ ॥ लक्ष्मण राजन रामचंद्र सीता सती
बार वरस वनवास दुष्ट करमगति। द्वारावती
भयी दाहसें कृष्ण जादवपति, लंकाभ्रष्ट लंके
करमगति नहीं मिटी ॥ ४ ॥ पांडुरायके पु
पंच पांडव भला, हारी द्रुपदी नार प्रगट खेल
जुवा। बार वरस वनवास दासपणे ते रही, कर
न करशो कोई बात प्रभुने कही ॥ ५ ॥ सती सु
भद्रा नार दूजी अंजना सती, करम तणें प
भाव कलंक चढ्यो अति। चारों चौट बिच बिक

चंदना सती, करम विना कहो कौन करे ऐसी गति॥ ६ ॥ राजा हरिचंद नीच घरे नोकरी करे, राणी सुतारा नीच घरे पानी भरे। सती सीरदार दोनुने दुःख लह्युं, करम मरम सब जाणजो सिद्धांते कह्युं ॥ ७ ॥ ऐसें करम विपाक देखो नवसें डरो, दुःखके देवनहार करम कोई ना करो। ए उपदेश है लेश नवी जो चित्त धरे,वीरविजय कहे तेह नवी नवजल तरे॥८॥ संवत् ओगनिसे साल तेवंजा मन रली, आसो सुदिकी त्रीज तिथी नयी निरमली। नगर स्यारपुर बिच चौमासुं रही करी,करम कथा कही एह सुनो सब दिल धरी॥९॥

॥ त्याग सज्झाय ॥

तुम छोडो जगतके यारा। इनसें नहीं हो निस्तारा ॥ आंकणी ॥ धन कण कंचनकी कोडी, गये बडे बडे सब छोडी। सुत मात तात अरु भ्रात, जगतके ठाठ, अंतमें न्यारा ॥ इन० ॥ १ ॥ ए दुनियां दुःखकी खानी, जिहां राग द्वेष है पानी।

ए महावीरकी वानी । हे खुरक स्वादका स्वाद, नहीं आबाद, बन्धा दुःख न्यारा ॥ इन० ॥२॥ छन्द मोह पास गले डारा । प्रभु नाम पकडले प्यारा । करले गुरु ज्ञान विचारा, ए सो बातन की बात । रहेगी लाज, सवी सुख सारा ॥ इनं० ॥ ३ ॥ वैराग्यकी बातां दाखी । विषयोंमें म करो झांखी । कहे वीरविजय में शाखी । है सब दुःखोंका मूल, नहीं अनुकूल, छन्डो मेरे प्यारा ॥ इन० ॥ ४ ॥

॥ श्रीनेमराजुलनी सज्झाय ॥

तूं छन्ड दे स्वामी शिवशोकनको संग ॥ आंकणी । बहोत बरातसें व्याहन आये । ते अब क्युं पावत नंगरे ॥ तुं० ॥ १ ॥ सतीव्रत धारी में बाल कुमारी । ते करले मुजसु रंगरे ॥ तुं० ॥२॥ शिवरमणीकी कुन्डी हे करणी । ते परणी सिद्ध अनंतरे ॥ तुं० ॥ ३ ॥ कामणगारी दुःख देनहारी । ते करती रंगमें नंगरे ॥ तुं० ॥ ४ ॥ मोहन मतियां तो हमारी क्या गतियां । छतियां

होत हे भंगरे ॥ तुं० ॥५॥ विनतो न धारी चढो गिरनारी । राजुल नेमो संगरे॥ तुं० ॥६॥ वीरविजय कहे नेम ने राजुल । पाये सुख अभंगरे ॥तुं०॥७॥

॥ अथ गुंहली ॥ १ ॥

(सेत्रों भवियण जिन भेत्रीसमोरे, ए देशी.)

गुरु मारा गाम नगर पुर विचरंता रे । बहु शिष्यने परिवार। ज्ञान अमृत जले करी सींचतारे। हिंसता भविक कमलसंघात । हुं बलिहारी ए गुरुराजनोरे ॥ आंकणी ॥ १ ॥ अवसर क्षेत्र फरसना करीरे । पालीताणा नगर मोझार। सिद्धक्षेत्र सिद्धाचल भेटवारे। आव्या आतमराम अणगार ॥ हुं० ॥ २ ॥ पंच समिति तिन गुप्ति बिराजतारे। धरता धरमतणुं एक ध्यान। हरता मोह दशा महा फंदनेरे। करता ज्ञान ध्यान एक तान ॥ हुं० ॥ ३ ॥ पंचमे कालमें कुगुरु सोहलारे । दोहला सुगुरु तणा देदार। पामी भव्य जीव तुमे सांभलोरे। भगवती सूत्र

तणो अधिकार ॥ हुं० ॥ चातकने मन जलधर चाहनारे । कामनीने मन कंथनी चाह । तेम मारा गुरुजीनी वाणी उपरेरे । श्रोता जननी प्रीति अथाह ॥ हुं० ॥ ५ ॥ गुणवती सहीयर सब टोले मली रे । आवती गुरुजीने दरबार । चउगति चूरण साथियो पुरती रे । गावती गुंहली गीत रसाल ॥ हुं० ॥ ६ ॥ गुरुजीना चरणकमलनी उपरेरे ॥ भ्रमरपरे मुनिगणनो वृंद ॥ लेता सद्गुण रूपी वासनारे । देता वीरविजयने आणंद ॥ हुं० ॥ ७ ॥

॥ गुंहली बीजी ॥

सुनोरे सखी एक वीनती रे ॥ आज आनंद अपार ॥ चालो वंदन चलिये ॥ आंकणी ॥ गाम नगर पुर विचरंतारे ॥ बहु शिष्यने परिवार ॥ ॥ चा० ॥१॥ अनुक्रमे आवी बिराजीयारे ॥ राजनगरके मोझार ॥ चा० ॥ आतमराम आनंद विजयजी ॥ अनुपम नाम रसाल ॥ चा० ॥ २ ॥ पठन करावता शिष्यनेरे । ज्ञान ध्यान एकतान

॥ चा० ॥ ज्ञान क्रिया करी शोजतारे । ए गुरु गुण मणिमाल ॥ चा० ॥ ३ ॥ मधुरी दिये गुरु देशनारे । जव जय जंजणहार ॥ चा० ॥ सुणतां समकित उपजेरे । मिथ्या तिमिर विनाश ॥ चा० ॥ ४ ॥ संघ सकल आग्रह करी रे । विनती करे मनोहार ॥ चा० ॥ जव्य जीव प्रतिबोधवारे गुरुजी करे चौमास ॥ चा० ॥ ५ ॥ संघ सकल हवे आदरेरे । जिन जक्ति बहुमान ॥ चा० ॥ नवनवी पूजा प्रजावनारे । अठाई महोह्नव ठाठ ॥ चा० ॥ ६ ॥ समकीत नीरमल जेहथी रे । तेह तणा बहुमान ॥ चा० ॥ ओच्छव रंग वधामणारे वर्त्यो छे जय जयकार ॥ चा० ॥ ७ ॥ सहीयर सवी टोले मली रे । आवे गुरु दरबार ॥ चा० ॥ विहुं गति चुरण साथीयोरे । करती गुरुने पाय ॥ चा० ॥ ८ ॥ गुणवती गावे गुंहली रे । जाव जले उदार ॥ चा० ॥ राजनगरमें हुई रह्यारे । आनंद

मंगल गाउं ॥ चा० ॥ ए ॥ उत्तम गुरु गुण गाव-
तां रे । जांगे जवनी पास ॥ चा० ॥ वीरविजय
मुनि हुई रह्यारे । आतम लक्ष्मीके दास॥चा०॥१०॥

॥ गुंहली त्रीजी ॥

(झिणा झरमर वरसे मेह भिंजे मारी चुंदडली, ए देशी)

सखी अंतरगतनी वात सुण सोजागीरे। गुरु
गुण गावाने आज मुने रढ लागीरे ॥आंकणी॥ धन
गुरु दाताने धन गुरु देवा। विजय आनंदसूरि रायरे।
धन तेहना परिवारनेरे कांई। लळी लळी लागु पाय
गुरु उपगारीरे। देइ शुरू धरम उपदेश दुनियां
तारीरे । सखी० ॥ १ ॥ पंच महाव्रत लही करीरे।
पामी गुरु आदेशरे । पंजाब देश पावन कीयो
गुरु । पुरी मननी टेक पुरण प्रीते रे । कीयो
ढुंढकनो उच्छेद आगम रीतेरे ॥ सखी० ॥ २ ॥
मरुधर मालव देशमांरे । मुनि मंमलनी साथरे।
मधुरी वाणीये गाजतारे कांइ । करता बहु उप-
गार आतम हेतेरे। गुरु षट्कायके प्रतिपाल

संयम लेखेरे ॥ सखी० ॥ ३ ॥ ज्ञानी .गुरुजीना ज्ञानथीरे गुण पर मतमें थायरे। राणीजीना राज-थीरे । कांइ पुस्तक नेटणुं आय गुरुने संगेरे । थयो महीमा धरमनो जेह चरुते रंगेरे ॥ सखी०॥ ॥ ४ ॥ गुणवाली गुजरातमांरे । ग्राम नगर पुर जेहरें । गुरुजी हमारे गुण बहु कीधो । दीधो धरम उपदेश सांजली बुज्यारे। कंइ नव्य जीवना थोक संयम लीधारे ॥ सखी० ॥ ५ ॥ सद्गुरु सिद्धा-चलजी नेटी । जनमनो लाहो लीधरे । संघ चतुर्विध मली करीरे । सूरि पद्वी दीध गुरुजी-ने रंगेरे । ओगणिसें बेतालीस अधिक उमंगेरे ॥ सखी० ॥ ६ ॥ एम अनेक गुण गुरुजी केरा कहे-तां नावे पाररे। पंचमे आरे परगट करता। गुरुजी बहु उपगार एहने सेवोरे । ए गुरुजीनो संयोग मोक्षनो मेवोरे ॥ स० ॥ ७ ॥ दरनावतीमें रही चौमासुं ओगणिसें ठेतालीसरे । वीरविजय कहे सेविये रे कांई। ए गुरुविसवावीस मनने नावेरे।कांइ ए संसारनुं दुःख फेर नहीं आवेरे ॥ सखी० ॥८॥

॥ गुंहली चोथी ॥

लघुवय जोग लीयोरे, ए देशी ॥ विजयानंद सूरिरायनांरे । केतां करूंरे वखाण । गुरुजीये ज्ञान दियोरे । नव्य जीव प्रतिबोधवारे । मानुं उग्यो नाण, अघ तम दूर कीयोरे ॥ गु० ॥ १ ॥ पंच महाव्रत पालतारे, मालता निजगुण मांहि ॥ गु० ॥ पर पदारथ जालमांरे, गुरुजी पेसता नांहि ॥ गु० ॥ २ ॥ अध्यातम रस झीलतारे, पीलता पाप करंड ॥ गु० ॥ अनुनव ज्ञानथी जाणतारे, मोहदशा महा फंद ॥ गु० ॥ ३ ॥ अशुभ योग निवारतारे, करता करम निकंद ॥ गु० ॥ स्वपर सत्ता नावतारे । चैतन्य जडनो संग ॥ गु० ॥ ४ ॥ वस्तुस्वन्नाव निहालतारे । एक अनेकनो रंग ॥ गु० ॥ नित्यानित्य विचारता रे । नेदानेदनो नंग ॥ गु० ॥ ५ ॥ तत्त्वातत्त्वने खोजतारे । खेंचता निज सुख चंग ॥ गु० ॥ ज्ञान क्रिया रस झीलतारे । मनमें धरीय उमंग ॥ गु० ॥ ६ ॥ करी

उपगार जूमंरुलेरे । लीधो लाज्ज अन्नंग ॥ गु० ॥
आप तर्या पर तारीनेरे । स्वर्गि थया सुख कंद
॥ गु० ॥ ७ ॥ पुन्यसंयोगे पामीथेरे । एहवा गुरु-
नो संग ॥ गु० ॥ वीरविजय कहे गुरु तणोरे ।
रहेजो अविचल रंग ॥ गु० ॥ ८ ॥

॥ गुंहली पांचमी ॥

॥ कंगना खुलदानही महाराय, ए चाली ॥

विजयानंदसूरि महाराय । जिनके नामसें
मंगल थाय ॥ वि० ॥ आंकणी ॥ समता सागर-
के विसरामी । कंचन कामिनीके नहीं कामी ॥
नामी सब दुनियांमें थाय ॥ वि०॥१॥ संजम मार-
गमें बहूरागी । छोड परिग्रह भये वैरागी ॥ त्यांगी
जगमें नाम धराय ॥ वि० ॥ २ ॥ सब कुपंथ त्याग
कर दीयां । अपना जनम सफल कर लीया ।
पूजो ऐसें गुरुके पाय ॥ वि० ॥ ३ ॥ सत उपदे-
शही सबको दीया । सत मारग सो थापन कीया
। ऐसे जग उपकारी थाय ॥ वि० ॥ ४ ॥ चेलो

सखी दरिशनको जावें । देख वदन आनंद नर पावे । ऐसे नहीं कोई राणे राय ॥ वि० ॥ ५ ॥ सखियां मिल आनंद नरपूरे । गुरुचरणोमें गुंहली पूरे । आनंद वीरविजयको थाय ॥ वि० ॥ ६ ॥

॥ श्रीगौतमस्वामीकी गुंहली ॥

(प्रथम जिनेश्वर मरुदेवी नंदा, ए देशी)

गौतमस्वामी शिवसुख कामी । गुण गाउं सीर नामी रे । गुरु गौतमस्वामी ॥ ए आंकणी ॥ जीव-सत्ताका संशय पडिया । वीरचरण जइ अडियारे ॥ गु० ॥ १ ॥ हुवा गणधारी शंका निवारी । प्र-भुजीये त्रिपदी आली रे ॥ गु० ॥ २ ॥ चौद पूर-वकी रचना कीनी । जग जश कीरती लीनी रे ॥ गु० ॥ ३ ॥ लब्धि बलिया अष्टापद चडिया । वीरवचन रस भरियारे ॥ गु० ॥ ४ ॥ गुरुजी यात्रा करके वलिया । पन्नरसें तापस मलियारे ॥ गु० ॥ ५ ॥ संजम लेवा विनती कीनी । गुरुजीयें दिक्षा दीनीरे ॥ गु० ॥ ६ ॥ वीर प्रभुका दरिशण चलिया ।

केवल लक्ष्मी वरियारे ॥ गु० ॥ ७ ॥ एम अनेक शिष्यकुं तारी ॥ ए गुरुकी बलिहारीरे ॥ गु० ॥८॥ सखियां सघली गुंहली गावे। गोतमस्वामीकी जावे रे ॥ गु० ए ॥ वीर प्रभुका राग निवारी। आतम एकता धारीरे ॥ गु० ॥ १० ॥ केवल पाइ माके पट्ट पाया । पृथवीमाताका जायारे ॥ गु० ॥ ११ ॥ ओगणिसें समसठ संवत् पाया। दीवाली दिन आयारे ॥ गु० ॥ १२ ॥ वीरविजय गौतम गुण गाया । वीकानेर जब आयारे ॥ गु० ॥१३॥

॥ श्रीकल्पसूत्रकी गुंहली ॥

(सहियर सुणियेरे, भगवती सूत्रनी वाणी, ए देशी.)

भवियण सुणजोरे, कल्पसूत्रनी वाणी ॥ मीठी लागेरे, वाणी अमीय समाणी ॥ आंकणी॥ कल्पसूत्रनी मोटी महिमा, वीर जिणंद वखाणे ॥ गौतम गणधर वीर वचनने, हृदय कमलमां धारे ॥ भवि० ॥ १ ॥ अरिहंत सम नहीं देव जगतमें, पदमें परमपद मोटुं। तीरथमें

शत्रुंजय जाणो, सूत्रमें कल्प वखाणो ॥ नवि० ॥ ॥ २ ॥ देवगणोमें इंद्र छे मोटा, तारागण में चंद्र ॥ न्याय नीतिमें राम वखाणो, काम स्वरूपमें जाणो ॥ नवि० ॥ ३ ॥ रूपवतीमें रुंभा रंभा, वाजिंत्रमें जेम भंभा । गजवरमें ऐरावण कहीये, युद्धमें रावण लहीये ॥ नवि० ॥ ४ ॥ बाणावलीमें अर्जुन बलियो, गुणमें विनय ज्युं भणियो । मंत्रमांहि नवकारज जाणो, बुद्धिमें अभय गवाणो ॥ नवि० ॥५॥ सर्व वृक्षमें कल्पवृक्ष जेम, अधिक बडाई धारे । सर्व सूत्रमें कल्पसूत्र तेम, पाप कलंक निवारे ॥ नवि० ॥ ६ ॥ कल्पसूत्र जे भणशे गणशे, तिसत्त वार सांभलशे ॥ वीर कहे सांभलजो गौतम, ते भवसायर तरशे ॥ नवि० ॥ ७ ॥ निधि[९]रस[६]निधि[९]इंदु[१] वत्सरमें, रही सीनोर चौमासुं ॥ वीरविजय कहे वीरप्रभुकी, वाणीमें नहीं काचुं ॥ नवि ॥ ८ ॥

समाप्तं महोपाध्याय श्रीमद् वीरविजय विरचित स्तवनादि संग्रहः

"दरापुरा मंडन श्री शांतिनाथ स्तवन."

जीव दया दिल दीजो भवियां, दीजोरे दीजो रे, दीजो फल लीजो। सफल मनुष्य भव कीजो रे, कीजो रे कीजो फल लीजो ॥ ए आंकणी ॥ जीवदया पूरव भव कर के, शांतिनाथ पद लीधो रे लीधो रे, लीधो फल० ॥ जीव० ॥ १ ॥ शांतिनाथ सम अवर न कोई, तरण तारण जग बीजो रे, बीजो रे बीजो फल० ॥ जीव० ॥ २ ॥ चरणकी सेवा प्रभु मोहे दीजो, मेरी कसुर न लीजो रे लीजो रे, लीजो फल० ॥ जीव० ॥ ३ ॥ दरापुरा मंडन सब दुःख खंडन, शांति शरण नित्य कीजो रे कीजो रे, कीजो फल० ॥ जीव० ॥ ॥४॥ ओगणीसें अडसठ भाद्रपद पंचमी, वीर वचन रस पीजो रे पीजो रे, पीजो फल० ॥ जीव ॥ ५ ॥